लक्ष्मीनिवास बिरला



# सुल्तान और निहालदे



नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

प्रकाशक
नैशनल पब्लिशिंग हाउस
चन्द्रलोक जवाहरनगर, दिल्ली
बिक्री-केन्द्र नई सड़क दिल्ली

प्रथम संस्करण



जनवरी १९६५

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक
दुर्गा प्रिंटिंग वर्क्स आगरा

# दो शब्द

राजस्थान के एक बड़े भाग में प्रचलित जनप्रिय लोक-कथा के आधार पर यह उपन्यास श्री लक्ष्मीनिवास बिरला ने लिखा है। पहले उन्होंने इसे अंग्रेजी में लिखा था। अब यह हिन्दी रूपान्तर है।

श्री बिरला ने भूमिका में लोक-कथा के ऐतिहासिक अंश पर शोधपूर्ण प्रकाश डाला है। ऐतिहासिक तथ्यों को लोक-कथा का ऐसा रूप क्यों मिलता है? यह प्रश्न उठता है। साथ ही यह भी कि इतिहास क्या है?

इतिहास की अनेक व्याख्याएं की गयी हैं। कुछ विलक्षण हैं।

एक सनकी का कहना है कि इतिहास वह है जो कभी हुआ ही नहीं और ऐसे मनुष्य का लिखा जो वहाँ था ही नहीं।

कारलाइल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फ्रांस की क्रान्ति' में लिखा है कि इतिहास गप्पों का निचोड़ मात्र है।

गिबन ने अपनी विख्यात पुस्तक 'रोम साम्राज्य का ह्रास और पतन' में कहा है कि इतिहास मानव के पापों, मूर्खताओं और दुर्दशाओं के वमन से अधिक और है ही क्या?

फ्रांस के नेपोलियन बोनापार्ट का नाम बहुत लोगों ने सुना है। यह हजरत फरमाते हैं—"सर्व-सम्मत किस्से के सिवाय इतिहास और है ही क्या?"

नामी अमेरिकन दार्शनिक इमर्सन की राय है—"इतिहास वास्तव में जीवन-चरितों के सिवाय और कुछ नहीं है।"

जर्मन दार्शनिक श्लेगल कुछ और कह कर शान्ति देता है—"इतिहास-लेखक वह ऋषि है जो पीछे लौट-लौट कर देखता है।"

प्रसिद्ध इतिहास-लेखक एच० जी० वेल्स अपने ग्रन्थ 'इतिहास की रूपरेखा' में कहता है—"मानव का इतिहास सार रूप में विचारों का इतिहास है।"

निष्कर्ष यह कि इतिहास मानव-प्रगति के निरन्तर विकास का अपूर्ण उल्लेख ही है।

जनमत का स्वरूप और चित्र कथित इतिहासों में तो दिखलाई नहीं पड़ता। जनमत का यह रूप-स्वरूप और जन-भावनाओं का यह चित्र लोक-कथाओं में ही मिलता है। लोक-कथाओं का इसी कारण बहुत महत्त्व है। इतिहास लेखकों का ध्यान इनकी ओर बहुत ही कम गया है। लोक-कथाओं के संग्रह अनेक देशों में किये गये हैं परन्तु उन पर उपन्यास तो बहुत ही कम लिखे गये हैं।

'गुस्तान और सिहासने' उपन्यास के लेखक ने भूमिका में सही लिखा है कि 'युग की गति' उसके आचार विचार का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है क्योंकि साहित्य और कुछ नहीं, लोक-जीवन का मात्र दर्पण है। और यह भी कि,—सभ्यता (आधुनिक सभ्यता) के पूर्ण विकसित होने के पूर्व कालीन साहित्य में मुख्यरूप से वीरगीतों और लोक-कथाओं का बाहुल्य रहा है। चरित्र-विन्यास में आज की अपेक्षा अधिक सादगी थी। जैसा समाज वैसे पात्र। पुरातन और मध्यकालीन साहित्य में अगर कहीं-कहीं समस्याएं आती भी थीं तो उन्हें अधिकतर आधिभौतिक घटनाओं के बल पर उठाया जाता था और कलात्मक ढंग से उनका निर्वाह कर दिया जाता था। घटना-वैचित्र्य के कारण चमत्कार पैदा करके पाठकों की जिज्ञासा को तीव्र किया जाता और फिर वैसे ही चमत्कारपूर्ण ढंग से उसका समाधान कर देना निश्चय ही रस-सिद्ध कलाकार द्वारा ही सम्भव हो सकता था। किन्तु आधुनिक साहित्य में समस्याएं अधिक मनोवैज्ञानिक आधार पर खड़ी की जाती हैं क्योंकि आज का वैज्ञानिक जगत् वैसी आधिभौतिक घटनाओं के चमत्कार को स्वीकार करने के लिए स्वभावतः ही तैयार नहीं है। लोक-कथा में ऐतिहासिक तथ्यों को इसी कारण यह रूप मिलता है।

इस उपन्यास का प्रधान नायक 'गुस्तान' प्रतिहार वंशीय ठाकुर था। बचपन का बालक बड़ा साहसी और वीर, साथ ही कष्ट-सहिष्णु

तपस्वी, ऐश-आराम से दूर। जनता ऐसे ही तरुणों को समाज में चाहती रही है। 'सुल्तान' के बलिदान और-कार्य इत्यादि जनता की उसी चाह के अनुसार आये हैं। लोक-कथा तो रोचक और प्रेरक है ही, श्री लक्ष्मीनिवास बिरला ने उसे और भी हृदयग्राही कर दिया है। पाठक का मन बराबर लगा रहेगा। मूल लोक-कथा में एक अपह यह भी आया है कि 'सुल्तान' को जादू से तोता बना दिया गया था। इसे लेखक ने छोड़ दिया है सो अच्छा ही किया। लोक-कथा में एक जिन (दैत्य कह लीजिये इसे) का जिक्र है। उसे लेखक ने उपन्यास में रख लिया है। उचित ही किया। यह जिन-दैत्य मनुष्य-भक्षी था। 'सुल्तान' ने जनता को बचाने के लिए इसका वध कर दिया। तात्पर्य यह है कि जनता का सताने वाला छोड़ा न जाय। उपन्यास में एक स्थान पर गुरु गोरखनाथ के प्रकट होने का भी वर्णन आया है। युगों पहले हुए हैं गुरु गोरखनाथ। योगियों और महात्माओं के प्रति जन-मन की अटूट श्रद्धा रही है और उनकी करामातों पर विश्वास भी भरपूर रहा है। एक योगी की करामात का वर्णन मराक्को से आये इब्नबतूता नाम के विख्यात यात्री ने जो मुहम्मद तुगलक के जमाने में आया था, अपनी पुस्तक में किया है—आँखों देखी घटना का। तो फिर लोक-कथा में निहालदे की लोक-कथा में कैसे रह जाता? श्री लक्ष्मीनिवास बिरला ने अपने इस उपन्यास में जो उस लोक-कथा पर आधारित है गुरु गोरखनाथ को ले आने में बिलकुल ठीक किया। पाठक नहीं भूलेगा कि उपन्यास लोक-कथा पर आधारित है। छोड़ देते तो जन-मन की वह आस्था कहाँ रह जाती।

राजस्थान में और अन्य क्षेत्रों में भी बहिन का सम्माननीय स्थान है। जिसे एक बार बहिन मान लिया बस सदा के लिए वह आदर सम्मान और रक्षा का पात्र बन गई। इसे लेखक ने बड़ी खूबी के साथ निभाया है।

राजस्थान में जरा-जरा-सी बात पर युद्ध हो जाते थे। लोक-कथा

में उसका वर्णन अनिवार्य था। उस युग के जीवन का यह चित्र भी उपन्यास में पूरी तरह आया है।

'निहालदे' निहालदेवी का ही रूप है। 'निहालदे' का चित्रण भी बहुत स्वच्छ, भरा-पूरा और सुन्दर हुआ है।

इस प्रकार की लोक-कथाओं के आधार पर और उपन्यास भी लिखे जाने चाहिए। इनमें मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों और संश्लेषणों की आवश्यकता बहुत कम है। सीधी भाषा में सीधी साफ़-सुथरी बात, रोचक ढंग से।

इस उपन्यास की सफलता के लिए श्री लक्ष्मीनिवास बिरला को मेरी हार्दिक बधाई। यदि इसके आधार पर और इस प्रकार की कहानियों के आधार पर फ़िल्म भी बनें तो बहुत अच्छा होगा।

झाँसी — *वृन्दावनलाल वर्मा*

# भूमिका

साहित्य वह कला है जो चरित्रों के माध्यम से जीवन के चिरन्तन मूल्यों के प्रति लोक-मानस में आस्था के भाव भरती है। युग की गति उसके आचार विचार का प्रभाव साहित्य पर पड़ता है क्योंकि साहित्य और कुछ नहीं लोक-जीवन का मात्र दर्पण है। निश्चय ही पहले के समाज का रूप आज से भिन्न था। न तो तब उतनी जटिलताएँ थी न वैसी उलझनें। सीधा-सादा समाज भोले-भाले लोग। सामाजिक संगठन वैचारिक क्रांतियाँ और युग को पथ बतलाने वाली आदर्श सामाजिक संस्थाएँ निश्चय ही आज जितनी अधिक हैं उतनी पहले नहीं थीं। तब का समाज आज की अपेक्षा अनेक अंशों में सीमित था क्योंकि समय और दूरी को अनायास ही एकदम कम कर देने वाले वैज्ञानिक साधन तब उपलब्ध नहीं थे जैसे कि आज के मानव को हैं। इसीलिए पुराने साहित्य के चरित्रों में भी इतनी विशिष्टताएँ, इतनी जटिलताएँ नहीं थीं जितनी आज के साहित्यिक चरित्रों में हैं। पर उसका यह अर्थ नहीं कि उन चरित्रों में आदर्श की गहराई नहीं थी। आदर्श की वह गहराई आज कहाँ आज तो बस उसकी विशिष्टता उसकी अनेक-रूपता मानसिक असन्तुलन ही रह गया है। इसलिए आज के लेखक समस्याप्रधान पात्रों की सर्जना करने में लीन रहने लगे हैं। ऐसे समस्या प्रधान पात्र तब नहीं थे यद्यपि मानव-मन की स्वाभाविक अनेकरूपता तो किसी न किसी रूप में आदिम सृष्टि से ही चली आ रही है।

सभ्यता के पूर्ण विकसित होने के पूर्वकालीन साहित्य में मुख्य रूप से वीर-गीतों और लोक-कथाओं का बाहुल्य रहा है। चरित्र विन्यास में आज की अपेक्षा अधिक सादगी थी। जैसा समाज वैसे पात्र। पुरातन और मध्यकालीन साहित्य में अगर कहीं-कहीं समस्याएँ आती भी थीं तो उन्हें अधिकतर आधिभौतिक घटनाओं के बल पर उठाया जाता था

और कलात्मक ढंग से उनका निर्वाह कर दिया जाता था। घटना वैचित्र्य के कारण चमत्कार पैदा करके पाठकों की जिज्ञासा को तीव्र किया जाता और फिर वसे ही चमत्कारपूर्ण ढंग से उसका समाधान कर देना निश्चय ही रससिद्ध कलाकार के द्वारा ही सम्भव हो सकता था। किन्तु आधुनिक साहित्य में समस्याएँ अधिक मनोवैज्ञानिक आधार पर खड़ी की जाती हैं क्योंकि आज का वैज्ञानिक जगत् वैसी आधिभौतिक घटनाओं के चमत्कार को स्वीकार करने के लिए स्वभावतः ही तैयार नहीं है।

भारत प्राचीन साहित्य का अक्षय भण्डार है। लोक-कथाओं का तो भारतीय साहित्य में विशेष महत्त्व है। प्रायः ये लोक-कथाएँ विभिन्न राज्यों में एक-सी पाई जाती हैं, यद्यपि उनमें कहीं-कहीं कुछ अन्तर भी आ गया है। वस्तु-विन्यास का अन्तर, प्रतिवेदन का अन्तर, कथ-प्रवाह का अन्तर। 'सुल्तान और निहालदे' राजस्थान और उसके पार्श्ववर्ती अंचल की बड़ी ही लोकप्रिय जन-गाथा है। आज की इस वैज्ञानिक आपाधापी के युग में भी जिस अपूर्व तन्मयता के साथ लोग इस लोक-गाथा को सुनते हैं, उससे साफ़ पता चलता है कि अब तक भी वहाँ के लोगों के मन में अपनी परम्परा अपने अवश्य जातीय-जीवन के प्रति प्रगाढ़ आस्था बनी हुई है। युग की प्रगति के साथ चलते हुए भी वे अपने गौरवमय अतीत को भूल नहीं सके हैं।

प्रस्तुत पुस्तक 'सुल्तान और निहालदे' की वस्तुकथा पर आधारित है। मानना ही होगा कि चरित्रों और कथा प्रवाह को आज के युग के अनुरूप बनाने के लिए लेखक ने स्वतंत्रता से भी काम लिया है। पुस्तक का नायक 'सुल्तान' मूल लोक-कथा का आधिभौतिक नायक न होकर एक साधारण गुण-दोषयुक्त मानव के रूप में आया है। यद्यपि उसमें देवत्व गुण की स्थापना नहीं की गई, तथापि *मानवता* के *कल्याण* के लिए संघर्ष करने वाले एक कर्मपुरुष उदारचेता मानव का रूप ही उसको दिया गया है।

कहा जाता है कि सुल्तान प्रतिहार वंशीय था। यह कहना कठिन है कि सुल्तान उसका नाम था या उपाधि। बाद के शक्तिशाली प्रतिहार राजाओं ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया था किन्तु सुल्तान के कर्म-स्थल मुख्यतया राजस्थान और सौराष्ट्र थे। इतिहासज्ञों के मतानुसार कन्नौज के बाहर का कोई प्रतिहार राजा इतना शक्ति-सम्पन्न नहीं था कि बावन दुर्ग उसकी सत्ता में हों। अगर सुल्तान कन्नौज का राजा था तो वनवास से लौटते हुए या रानी मारू के पास जाते हुए उसे वर्तमान राजस्थान की यात्रा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। 'वंशभास्कर' के चारण कवि सूरजमल के अनुसार छठी और सातवीं सदी में वेणु महिप मल्ल महिप या उसके भाई मधुपाल और स्वर्ण महिप ने राज्य किया था। सम्भव है कि वेणु महिप सुल्तान का दादा रहा हो मल्ल महिप या मधुपाल नैनपाल सुल्तान का पिता हो और स्वर्ण महिप ही हो स्वयं सुल्तान।

सूरजमल के अनुसार ये तीनों ही अत्यन्त शक्तिशाली राजा थे और इनके अधिकार में कई दुर्ग थे। उनकी राजधानी बिसवस नगर में थी। आज यह बतलाना कठिन है कि यह बिसवस नगर कहाँ था पर यह कहा जा सकता है कि यह मारवाड़ के अन्तर्गत ही कहीं था।

प्रतिहारों की उत्पत्ति के विषय में कई मत हैं। कोई कहता है कि ये विदेशी थे जिन्हें बाद में भारतीयों ने अपने में मिला लिया। चारणों के मतानुसार ये लक्ष्मण वंशीय हैं। लक्ष्मण राम के प्रतिहारी थे इसीलिए इस वंश का नाम प्रतिहार वंश पड़ा। एक मत यह भी है कि ऋषि वशिष्ठ ने यज्ञ किया तो उससे चार जातियों का प्रतिनिधित्व करने वाले चार व्यक्ति निकले जिनमें से एक प्रतिहार या परिहार था जिसे काबुल का राज्य दे दिया गया। इस वंश में बीन नामक एक शक्तिशाली राजा हुआ जो अपने बाहुबल से सम्राट् हो गया जिससे उसको 'चकुआ बीन' कहा गया।

अगर यही चकुआ (चक्रवर्ती) बन सुल्तान का दादा था तो

मुस्तान का समय काफी पीछे चला जाता है। सुदूर काबुल में राज्य करते हुए भी मुस्तान इस कहानी में वर्णित शौर्य के कारनामे कर सका था इसमें कुछ अस्वाभाविक नहीं लगता। अग्नि से उत्पत्ति की बात छोड़ कर अगर हम इस बात को मान लें कि प्रतिहारों के एक वंश ने काबुल पर भी राज्य किया था तो यह बात इतिहास-सम्मत हो जाती है। इतिहास यह मानता है कि प्रतिहार भारत के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे बाहर से आये थे।

अगर हम इस मत को सही मानते हैं तो यह सिद्ध हो जाता है कि मुस्तान अफगानिस्तान में राज्य करता था और वर्तमान राजस्थान और सौराष्ट्र के कुछ क्षेत्र भी उसके आधिपत्य में थे। बहुत करके मुस्तान उसका नाम असली न होकर उपाधि रही होगी।

प्रतिहारों को सूर्यवंशी कहा जाता है और अफगानिस्तान में सूर्य देव की विशाल प्रतिमा मिलने की बात इस मत को प्रमाणित कर देती है। इस्लाम के विरुद्ध प्रतिहार एक रक्षा पंक्ति का काम कर रहे थे। जब इस्लाम का दबाव पड़ा तो वे धीरे-धीरे भारत में आने लगे और यहाँ आकर शक्तिशाली बन बैठे।

डाक्टर आर॰ सी॰ मजूमदार के मतानुसार बाद में भी प्रतिहारों ने अच्छा शक्ति-प्रदर्शन किया। मुस्लिम विजय से पहले कन्नौज का प्रतिहार-राज्य ही उत्तर भारत का अन्तिम विशाल साम्राज्य था। वह यह भी कहते हैं कि सम्भवतः प्रतिहार साम्राज्य गुप्त साम्राज्य से भी विशाल था और उसकी कालावधि भी अपेक्षाकृत अधिक थी।

यदि हम इसे सही मान लें तो यह स्वतः मानना होगा कि इस वंश में शक्तिशाली राजाओं की एक सुगठित शृंखला थी क्योंकि उसके अभाव में यह सब सम्भव ही नहीं हो सकता।

और फिर ऐसी दन्तकथाएँ भी तब तक प्रचलित नहीं हो सकतीं जब तक उनका नायक कोई शक्तिशाली वीर राजा न रहा हो। उस नायक के बारे में और अधिक जानकारी जुटाने की जिम्मेदारी अब

पाठक पढ़ते ही चौंक न उठें। इस पुस्तक में मध्य युगीन वातावरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कभी-कभी कपोल-कल्पित जगत् की झाँकी भी ठीक रहती है, क्योंकि इससे ऐसे यथार्थ का परिचय भी मिल जाता है जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन काल का सामाजिक जीवन उसकी आस्थाएँ, परम्पराएँ हम में उस सादगी के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें जिनका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अबौद्धिक कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

पाठक पढ़ते ही चौंक न उठें। इस पुस्तक में मध्य युगीन वातावरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कभी-कभी कपोल-कल्पित जगत् की झाँकी भी ठीक रहती है क्योंकि इससे ऐसे यथार्थ का परिचय भी मिल जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन काल का सामाजिक जीवन उसकी आस्थाएँ, परम्पराएँ हम में उस सामग्री के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें जिसका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अलौकिक कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

:: १ ::

हिरन को घोड़े की पीठ पर बाँध सुल्तान चलने को तैयार हुआ। घोड़ा घूमा तो उसने देखा कि छरहरे बदन की एक सुन्दर युवती टकटकी लगाये उसे ताक रही है। बड़ी शान से वह सीधी खड़ी थी। साँस के साथ-साथ उसका वक्ष फूल जाता और बैठ जाता, पर चाहते हुए भी शायद लज्जा से उसकी बोली निकल नहीं रही थी।

युवती के सौन्दर्य से सुल्तान जैसे आहत हो गया। उसमें ग़ज़ब की मनोहरता थी। उसकी कजरारी आँखों में चमक थी और चेहरा बड़ा आकर्षक। इसके पहले कि वह कुछ बोलने की कोशिश करे, सुल्तान ने कहा, 'सुन्दरी, आप कौन हैं और यहाँ क्यों खड़ी हैं ?"

'यह प्रश्न तो मुझे आपसे करना चाहिए। मैं महाराजा माघ की पुत्री हूँ और यह मेरा बग़ीचा है।" युवती ने जवाब दिया।

सुल्तान युवतियों से सदा घबराता था। पर वह तो कुछ दूसरे ही साँचे में ढली थी। आश्चर्य से उसने युवती की आँखों में देखा। उसे लगा कि यह उसे निराश नहीं करेगी, वह अपूर्व थी।

"शायद अब तक आप कुमारी ही हैं। आप-सरीखी रूपवती राजकुमारी की तो अब तक किसी भाग्यवान् राज कुमार से सगाई हो जानी चाहिए थी।"

पाठक पढ़ते ही चौंक न उठें। इस पुस्तक में मध्य युगीन वातावरण बनाये रखने की पूरी कोशिश की गई है। कभी-कभी कपोल-कल्पित जगत् की झाँकी भी ठीक रहती है क्योंकि इससे ऐसे यथार्थ का परिचय भी मिल जाता है, जिसकी कल्पना भी नहीं रहती है। सम्भव है प्राचीन काल का सामाजिक जीवन उसकी मान्यताएँ, परम्पराएँ हम में उस सादगी के प्रति एक आकर्षण पैदा कर सकें जिसका हम आधुनिक प्रभाव के कारण अवैज्ञानिक कहकर मजाक उड़ाते हैं।

—लेखक

मगर संकेत से आह भरकर और अपने सुकोमल हाथों को हिलाकर उसने अपना मनोरथ समझा दिया।

"मैं ही तो वह अभागा सुल्तान हूँ। अगर मैं कहूँ कि मैं अपने आप से डरता हूँ तो क्या तुम विश्वास करोगी ? मेरा मन क्या कहता है, यह तो समझ ही गयी होगी। मगर वचन पूरा न कर सकूँ तो कुछ भी कहना बेकार है।

"आप आप तो बड़ी निराशा भरी बातें कर रहे हैं। स्नेह से भरा उसका काँपता कण्ठ हकलाने लगा।

भीनी भीनी ठंडी हवा का एक झोंका आया। चारों ओर फैली मोतिया की, निहालदे के वस्त्रों से उठी, मधुर सुगंध सुल्तान के मस्तिष्क में भर गयी। उसे लगा कि बरसों से वह इतना एकाकी नहीं था। क्या कुछ नहीं कर सकता ? उसने एकाएक जल्दी से थूक निगला और अपने को संयत करते हुए एक लम्बी साँस भरी। "एक ही रास्ता है। तुम अपने पिता से कहो कि वे राजकुमारों और राजाओं को आमन्त्रित करें और तैल-पात्र में पड़ती परछाईं को देखकर मछली की आँखें बेधने के लिए कहें। मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा में मेरे सिवा दूसरा कोई उत्तीर्ण नहीं हो सकता।'

राजकुमारी को यह बात जँच गयी। उसका मुँह खिल गया और आँखें चमक उठीं। काँपती हुई वह उठी। उसकी प्रत्येक क्रिया, और प्रत्येक भंगिमा में दृढ़ता और सुन्दरता घुली हुई थी। वह महल की ओर लौटने को उतावली हो उठी। उसका मन बादलों में मँडरा रहा था, और वह भविष्य की छिपी फुलवारी को देखने लगी। सुल्तान उसकी धूमिल

बड़े घने जंगल से गुजरना था, नदियाँ पार करनी थीं, उदयपुर पार करना था और उसके बाद भी काफ़ी लम्बी यात्रा के पश्चात् इवरकोट पहुँचना था। उदयपुर से नरवलगढ़ के रास्ते में ठगों का एक बड़ा गढ़ था।

:: २३ ::

ठगों को यह खबर लग गयी थी कि सुल्तान घोड़े दौड़ाता हुआ इवरकोट की ओर जा रहा है। यह तो सभी जानते थे कि सुल्तान को मोटी तनख्वाह मिलती थी। सब यही समझते थे कि वह खूब पैसों वाला होगा। कुछ ठगों ने तय किया कि जब वह उस रास्ते से गुज़रे तो उसे लूट लेने का अच्छा मौक़ा रहेगा। इसके लिए चार ठग तनात किये गये तनिया, मनिया, गोपालिया और हुरखला। गोपालिया के पास एक मैना थी। वह जहाँ भी जाता, उसे पिंजड़े में साथ ले जाता। मैना मनुष्यों की बोली की नक़ल करके उनसे बातें करती।

पिछली रात की बारिश की वजह से वातावरण नम था। सूरज मन्द मन्द से मुस्करा रहा था, और बादलों से ढके आकाश में इधर-उधर धीमे चमकके झाँक रहे थे। नदी निकट होने के कारण वनस्पतियाँ घनी थीं, और एक ढलान के पास एक निबिड़ कुंज भी था।

वे सोच रहे थे कि सुल्तान अपने साथ गधों पर हीरे जवाहरात लादे साथ में ले आ रहा होगा। जब उन्होंने अकेले

घुड़सवार को देखा तो वे यह तय नहीं कर पाये कि यह सुल्तान है या कोई और। फिर उन्होंने क़िस्मत आज़मानी चाही। गिरोह का मुखिया मनिया बोला, 'इस अकेले घुड़सवार को भी नहीं जाने देना है और जो कुछ मिले हथिया लेना है।'

जब सुल्तान पास आया तो वे रोने-सिसकने लगे। उसने पूछा 'तुम लोगों को क्या तकलीफ़ है?' मनिया बोला, 'हम एक सौदागर के बेटे हैं। हम नदी पार कर रहे थे कि नाव डूब गयी। हम तो किसी तरह बच गये पर हमारा सब कुछ डूब गया।

सुल्तान बोला, 'अगर तुम्हें धन चाहिए तो मेरे घोड़े की ज़ीन के चारों कोनों पर चार झालरें लटक रही हैं इनमें असली हीरे जड़े हैं। बाक़ी कोई धन-दौलत मेरे पास नहीं है। हाँ अगर तुम लोग नदी पार करना चाहो तो मेरे घोड़े की ज़ीन के चारों कोनों को पकड़कर पार हो सकते हो।'

उन्होंने कहा कि वे तो पार होने में मदद चाहते हैं। सुल्तान राज़ी हो गया। दो उसके घोड़े के आगे और दो पीछे चले। जो पीछे थे उन दोनों ने उसे मारने के लिए तलवारें निकाल लीं।

मैना का पिंजड़ा एक पेड़ से लटक रहा था। वह चिल्लायी "देखो देखो।"

सुल्तान ने अचानक पीछे सिर घुमाया और दोनों ठगों के हाथ में नंगी तलवारें देखीं। उसका पारा चढ़ गया और उसने तलवार निकालकर उन दोनों को मार डाला सामने के दोनों

ठगों में से भी एक को खत्म कर दिया। चौथा किसी तरह बचकर भागा।

सुल्तान ने उसे भागते देखकर कहा ऐसा नहीं है कि मैं तुम्हें पकड़ नहीं सकता, लेकिन मैं तुम्हें इसीलिए छोड़े दे रहा हूँ, जिससे तुम्हारे गिरोह के लोग जान जायें कि विश्वास घातियों के ऊपर क्या बीतती है। फिर वह मैना के पिंजड़े के पास गया और उसे उड़ा दिया।

इसके बाद सुल्तान घोड़े को तराकर नदी पार कर गया। रात होने को थी। दूसरे पार वह सुस्ता गया।

:: २४ ::

चौथे ठग ने बाक़ी ठगों को आपबीती घटना कह सुनायी। उनमे से बूढ़े ठग मोतिया ने कहा, "ये नये-नये छोकरे ठग विद्या ठीक से नहीं जानते। मैं दिखलाऊँगा कि ऐसे आदमियों से कैसे निपटना चाहिए।"

घंटियाँ बजाती बकरियों का झुंड सुल्तान के सामने रास्ता पार कर गया। पीछे एक लड़का उनका रखवाला था। सुल्तान आराम से इस शान्त वातावरण में चला जा रहा था। उसने देखा कि पीछे कोई आ रहा है। जब वह पेड़ के पास आया, तो देखा कि वह आदमी सफ़ेद दाढ़ी वाला वृद्ध ब्राह्मण की तरह मालूम पड़ता है। सुल्तान ने प्रणाम किया।

ब्राह्मण ने आसीर्वाद देते हुए कहा, "परदेसी, तुम कहाँ

से आ रहे हो और कहाँ जा रहे हो ? यह जगह अकेले आदमी के चलने-फिरने लायक नहीं है।"

सुल्तान बोला, ब्राह्मण देवता, मेरे विषय में चिन्तित न हों। मेरा नाम सुल्तान है। मैं नरवलगढ़ से आ रहा हूँ, और इदरकोट जा रहा हूँ।"

मौसम गर्म था। सुल्तान व घोड़े को गर्मी का असर मालूम होने लगा था। ब्राह्मण के भेष में ठग ने कहा 'बेटा तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं तो इसी दिन की प्रतीक्षा में था। तुम्हारे दादा की बनवायी हुई झील यहाँ से पास ही है। तुम्हें और घोड़े दोनों को उसके ठंडे पानी से आराम मिलेगा।'

सुल्तान को झील के बारे में पता चलने से बड़ी खुशी हुई, और वह उस तरफ़ घूम गया। जब वहाँ पहुँचा तो सूरज डूब रहा था, और आकाश में सुनहली आकृतियाँ छितरा गयी थीं। जल पर कहीं लाल तो कहीं सुनहले रंग के चकले झूम और नाच रहे थे। पक्षियों का एक बादल उड़ा—गदराये छाहे, भूरे कबूतरों का और चक्कर लगा के पास के पेड़ पर आ बैठे।

मोतिया ने पहले से ही तय कर रखा था कि झील के पास पचास ठगों को छिपकर उसके हुक्म की राह देखनी चाहिए। झील पर जाकर सुल्तान ने पहले घोड़े को पानी पिलाया फिर उसे चरने को छोड़ दिया। उसने अपनी पेटी खोली। वस्त्र उतार कर एक तरफ़ रख वह नहाने के लिए झील में पैठा। ज्योंही वह निरस्त्र झील में नहाने लगा, कि हथियारों

से लस पचास आदमियों ने झील को घर लिया, और सुल्तान के भागने का रास्ता बन्द कर दिया।

अब सुल्तान को होश आया कि यह ब्राह्मण कौन है, और उस पर क्या बीतने वाली है। फिर भी बिना हिम्मत हारे उसने घोड़े को बुलाने के लिए सीटी बजायी। घोड़ा बड़ा होशियार था। उसकी तलवार दाँतों में दबाकर वह पानी में कूद पड़ा। ठगों को भगाना अब तो सुल्तान के लिए बाएँ हाथ का खेल था। बहुत-से मारे गये कितने घायल हुए, बाक़ी भाग गये। स्नान करके सुल्तान ने फिर अपना रास्ता पकड़ा।

वह उदयपुर को पार कर इदरकोट के मार्ग पर चलने लगा।

## :: २५ ::

उदयपुर और इदरकोट के बीच सुल्तान ने एक छोटा-सा सुन्दर बगीचा देखा। उसे सुन्दर स्थलों से बहुत प्रेम था। कुछ दिनों बाद, पहले दिन सुबह से शाम तक पानी बरसा था। धरती से सोंधी सुगन्ध उठ रही थी। फिर भी मौसम के ढलते सूरज का तेज काफ़ी था। सुल्तान थक गया था। उसे प्यास भी लग रही थी। बाग़ देखकर पानी पीने के इरादे से वह उसके भीतर गया। एक सुन्दरी मालिन जल लेकर बाहर निकली। सुल्तान को देखकर उसके गाल लाल हो गये। पानी पिलाने के बदले वह सुल्तान की ओर एकटक देखती खोई-सी रह गयी।

अजनबी औरतों के बीच सुल्तान संकोच महसूस करता था। उसे लगा कि वह कुछ कहना चाहती है, मगर कुछ भय खा रही है। सुल्तान ने हाथ बढ़ा पानी का पात्र ले लिया।

"नौजवान, इतनी जल्दी क्या है ? ऐसी गर्मी में क्यों न कुछ सुस्ता लो।"

बिना कुछ बोले सुल्तान पानी पीता रहा।

उसकी आँखों में जरा निराशा की झलक आ गयी मगर उसने फिर कहा, "कुछ देर यहाँ ठहरोगे तो मैं तुम्हें अच्छी लगने लगूँगी।

उसने हाथ उठाकर कुछ टोना-सा किया और सुल्तान के देखते-देखते उसका घोड़ा पत्थर के जैसा हो गया। उसने फिर अपना हाथ उठाया और इसके पहले कि सुल्तान कुछ कहे वह जैसे खरगोश-सा बन गया।

उसे आश्चर्य हुआ ! क्या यह कोई माया है या वह सचमुच खरगोश हो गया है। वह एक कुंज में घुस गया जो कि झाड़ियों से घिरा हुआ था और वहीं बैठ वह अपनी स्थिति पर विचार करने लगा। उसका हृदय फट रहा था। ऐसी उस पर पहले कभी नहीं बीती थी। उसने ऐसा क्या किया था कि उसे यह सजा मिले ? उसके गले में कुछ अटकने लगा। निहालदे की याद में वह व्याकुल था। वह क्या करे, यह भी सूझ नहीं रहा था। अगर उसके हाथ में कुछ भी होता तो वह जादूगरनी के मुँह पर फेंककर मारता। पर करे क्या पास में कोई छोटा पत्थर भी तो न था।

उसने देखा कि जादूगरनी उन झाड़ियों के पास से झाँक-

कर देख रही है। उसने मजाक से हँसकर कहा, "खरगोश बेचारा अब क्या करे, इसकी मुझे कोई परवाह नहीं। अब तुम मुझ से छूट नहीं सकते, यही मैं चाहती थी।

जादूगरनी ने अपने हृदय पर हाथ रखा और उसके चेहरे पर एक छाया घूम गयी। भय या शायद ऐसा ही कोई भाव उमड़ पड़ा हो पर सुल्तान यह पहचान नहीं पाया।

मैं तुम्हारी खूब तन-मन से देखभाल करूँगी। देखते नहीं, मैं तुम्हें कितना चाहती हूँ।' उसका चेहरा लाल हो उठा।

जादूगरनी ने उसकी ओर देखा कि शायद वह अब भी कुछ कहे कोई इशारा करे या सिर ही हिला दे। उसने लम्बी उसाँस भरी। 'बताओ तो, आओ न जरा पास आओ ताकि लगे कि तुम सजीदा हो। मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। तुम्हें इसका पता नहीं क्यों, नहीं है?' उसने सिर हिलाकर पूछा। मैं सदा दुख भोगने को तयार नहीं हूँ। चमकीले लाल कंठ वाले हरे रंग के तोतों का एक झुण्ड ऊपर से उड़ गया।

वह कुंज के भीतर घुसी और सुल्तान की कमर में हाथ डालकर उसे घर में खींच ले गयी। अन्दर घर में काफी सजावट थी। उसने अपना दुपट्टा फेंक दिया। अब उस पर कुछ झीने कपड़े ही रह गये थे। कमरे के अँधेरे में उसके काले बाल चमक रहे थे। सचमुच उसमें एक अजब मोहिनी मालूम पड़ रही थी।

सुल्तान ने सोचा कि सचमुच यहाँ आकर उसने कितनी बड़ी बेवकूफी की। कहीं वह इस मोहिनी के जाल में न फँस जाय। अब शायद वह कभी निहालदे को न बचा सकेगा, और

न उससे भेंट ही हो पायेगी। वह एक क्षण झिझका। तो क्या उसका यही अन्त है? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। मगर यह कैसी बात है कि वह जो कुछ कहती है, सब उसकी समझ में आता है। बड़ी विनम्रता से वह जादूगरनी के पास गया।

वाह!" वह बोली, 'इस तरह जरा मेरी भी तो सुना करो। बस तुम यह सब मुझ पर ही छोड़ दो। मैं तुम्हारी पत्नी से सुलट लूँगी।" उसने मुँह घुमाकर सुल्तान के होंठ चूम लिये।

वह घबराकर पीछे हटा। "अब बनी बात न बिगाड़ो। मेरा और अपना जीवन नष्ट न करो वह बोली "मैं अपने बीच किसी और को नहीं रहने दूँगी। फिर उसके पास जाकर उसका मुँह पकड़कर वह कह उठी, काश कि मैं तुम्हें इतना प्यार न करती।'

सुल्तान का दिल धड़कने लगा। मालूम पड़ा कि एक आनन्द की सी लहर उसके दिल में दौड़ रही है। यह जादूगरनी के हाथ किसी छोटे जानवर को तो नहीं छू रहे हैं उसने सोचा। मगर उसके घोड़े का क्या हुआ? अचानक उसे फिर धक्का लगा। ओह! यह सब कुछ व्यर्थ है फ़िजूल है। वह इस जादूगरनी से कभी अपने को नहीं छुड़ा सकेगा। वह अपने को एकदम मजाक़ अनुभव करने लगा।

मगर मान लो कि यह एक छल ही हो, घोड़ा अभी तक जिन्दा हो। अच्छा मगर वह जाना चाहे तो क्या होगा? अब इससे ज्यादा और क्या बुरा होगा।

जादूगरनी ने विचित्र दृष्टि से सुल्तान को देखा, मानो उसके मन की बात भाँप रही हो। उसने अपना सिर सुल्तान के सीने में छिपा उसे हाथों से पकड़ लिया। सुल्तान को लगा कि वह एक आत्मोल्लास प्रभा से घिर गयी है। सुल्तान चुप-चाप शून्य खड़ा सोचता रहा।

'मेरे प्यारे खरगोश मैं तुम पर फ़िदा हूँ। मैं तुम्हें दिलो जान से चाहती हूँ। मैं तुम्हारी नन्ही बन्दरिया बनकर तुम्हारे साथ खेलूँगी तुम्हें खुश रखूँगी। क्या कोई ऐसा भी होगा जो तुम्हें प्यार न करे?"

एकाएक सुल्तान ने उसे धक्का दिया और दौड़ पड़ा। बाहर जा वह उस पत्थर के घोड़े पर कूदकर बैठ गया। यह क्या? उस पत्थर के बदन में तो गर्मी है। पत्थर जीवित पदार्थ की तरह हिलने भी लगा। उसने रास खींची।

"नहीं मैं मना करती हूँ' जादूगरनी चिल्लायी। 'रुको मैं तुम्हें रिहा कर दूँगी तुम्हारी मदद करूँगी।

सुल्तान तब तक निकल चुका था।

'हे भगवान् कैसा बचा। और उसने सन्तोष की लम्बी साँस खींची।

:: २६ ::

दोपहर को सुल्तान हदरकोट पहुँच गया। इस अनिश्चितता में कि वह ठीक समय पर पहुँचेगा या नहीं, हताशा में वह

अपने आप को खोखला-सा महसूस करने लगा। उसके अंग अंग शिथिल हो रहे थे और वह थककर चूर हो गया था। अभी आधा दिन बाकी था इसलिए उसने महल में आने के पहले सोचा कि क्यों न कुछ क्षण सुस्ता ले। उसे बिल्कुल पता नहीं था कि निहालदे तो चिता पर बैठी है। वह घोड़े से उतरा और एक पेड़ के नीचे सुस्ताने लगा। दुर्भाग्य से उसे तुरन्त नींद आ गयी।

सुल्तान को लगा कि कोई उसे जोर से झकझोर रहा है। वह अचकचा कर जाग पड़ा। सोते हुए उसे काफ़ी देर हो गयी थी। कामध्वज राव उसे गले लगाते हुए से कह गये हैं भगवान् पागल की तरह मैं बगाचे के चारों ओर भटक रहा था। मेरा दिमाग फटा जा रहा था। अगर मैंने यह न जानना चाहा होता कि इतनी मस्ती में कौन सो रहा है तो शायद तुम मुझे मिलते ही नहीं। उठो दौड़ो अब वक्त नहीं रहा।

सुल्तान का हाथ पकड़कर बूढ़ा दौड़ने लगा। निहालदे चिता पर बैठी हुई थी। आग अभी तक उसके शरीर में नहीं लगी थी पर वह बेहोश हो चुकी थी। सुल्तान चिता की ओर दौड़ा। निहालदे को गोद में उठा वह चिता से नीचे ले आया। सन्नाटा छा गया। उस क्षण उपस्थित लोगों ने महसूस किया कि प्रेम क्या होता है—जब चिता से नीचे आने पर उन्होंने निहालदे की सुल्तान पर जमी हुई एक नजर को देखा। वह निहालदे का नया रूप सुल्तान की बाँहों में प्रगाढ़ालिंगित। मुरझायी लपट की तरह प्रसन्नता एकाएक फूट पड़ी। वहाँ खड़ा हरेक व्यक्ति आनन्द से चिल्ला उठा।

रानी कर्णावती ने आगे बढ़कर दोनों को अपनी बाँहों में बाँध लिया। बोली, मेरे बेटे, मेरे पापों को क्षमा कर दे। यह मेरा ही दोष था कि आज यह सब घटित हुआ। मैं नहीं जानती कि मैं अपने पाप कैसे धो पाऊँगी।

माँ, पछतावा काहे का। होनहार को कौन टाल सकता है? जो होने को लिखा था वही सब हुआ। इसमें किसी का दोष नहीं।

जब सुल्तान पुत्र की भाँति उसके चरणों पर झुका तो कर्णावती के नेत्र डबडबा आये।

सुल्तान और निहालदे को एक हाथी पर बिठाकर जुलूस में ले जाया गया मानो उनका अभी-अभी ब्याह हुआ हो। जब वे इस बार महल के सामने उतरे तो रानी कर्णावती ने आगे आकर आरती उतारा और उनका इस रीति से स्वागत किया मानो वे नये दूल्हा-दुल्हिन हों। नगरवासी आनन्दमग्न थे। असली तीज का महोत्सव तो अब आरम्भ हुआ, जो सप्ताह भर तक चलता रहा।

एकान्त में पहुँचते ही फिर वे आलिंगन में बँध गये। पीली पारदर्शी त्वचा वाली होकर भी निहालदे दमक उठी और अनुराग से बिखरे बालों के बीच चमकता उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा। सुल्तान भी विचलित हो उठा और उसमें प्यार की वही ज्वाला भड़क उठी, जिसे प्रथम मिलन पर निहालदे ने जगाया था। जैसे वे दोनों मरुभूमि में खोकर वापस पहुँचने वाले पिपासाकुल अपनी तृषा बुझाते हों।

:: २७ ::

निहालदे सुल्तान को अपने वादे पर न लौटने का उलाहना दे रही थी। सुल्तान ने अपने साथ घटी सारी घटनाएँ सुनायीं और कहा "प्रिये, जानती हो, जो लोग बुराई के चंगुल से निकलकर अच्छाई की ओर आना चाहते हैं उन पर क्या बीतती है। अच्छाई तक वही पहुँचता है, जिसका सम्बन्ध किसी देवी से हो। मगर तुम इतनी आतुर हो चिता पर क्यों बैठ गयीं?

आँखों में आँसू भरकर उसने सुल्तान की ओर देखते हुए कहा "अच्छा, यह मेरी आतुरता थी?'

"नहीं, नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था। मुझे माफ़ कर दो।" और उसने निहालदे को छाती से लगा लिया।

निहालदे ने बतलाया कि उसके चले जाने के बाद क्या क्या हुआ था। जब तक फूलकुँवर ने मेरी बेइज्ज़ती नहीं की तब तक मैंने बड़े सब्र से काम लिया। बाज़ को चिट्ठी भेजने के बाद मैं समझती थी कि तुम तीज के पहले ही यहाँ पहुँच जाओगे, जिससे कि इस साल उत्सव न रुके। पर फूलकुँवर अपनी दुष्टता से बाज़ नहीं आया। राजा की आज्ञा की उपेक्षा करके उसने उत्सव मनाने की चुपचाप आज्ञा दे दी। उसने एक दिन राजा से पूछा कि आख़िर कब तक हम त्योहार न मनायें?"

कामध्वज राव को यह सवाल पसन्द न आया, और उन्होंने दो टूक जवाब देते हुए कहा, "जब तक सुल्तान वापस नहीं लौटता।"

'जनता तो सुखी थी, पर कुछ नौजवान रागरंग मनाने के लिए आकुल थे। एक दिन महल के पास से लड़कियों का समूह देश-मालव मिश्रित विचित्र-सा गीत गाता हुआ गुजरा। यह गीत एक सज्जास पति और धृष्ट पत्नी के विषय का था। जब उसमें उनकी सुहागरात का वर्णन आया, तो वे सभी लड़कियाँ हर्ष से पागल हो उठीं। मैंने दुःख की साँस लेकर सोचा कि तीज सबके लिए भले ही आयी हो पर मेरे लिए नहीं।

'सावन की रात थी। बिजली बादलों से लुकाछिपी खेल रही थी। मैं जगी हुई थी और बेचैन थी। मेरा दिल अजब ढंग से धड़क रहा था। तुम्हारा कुछ भी समाचार नहीं था। शायद पुरुषों और स्त्रियों की विचार-धारा अलग ढंग पर चलती है। मैंने अपने आप को समझाया। अचानक मुझे भारी निराशा होने लगी। मैंने सोचा—तुम्हारा प्यार सच्चा था, या मेरी कल्पना ही थी ? क्या यह आवश्यकता से उपजा दिखावा तो न था ? क्या यह कोई सनक थी ? मैं सोच-सोचकर घुलने लगी। लेकिन मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। मेरा मन बार बार यही कहता रहा कि तुम्हें यहाँ आने से रोका जा रहा है।

तब फिर दिल धड़क उठा, छाती में हूक उठने लगी। हाँ बार-बार हूक उठने लगी। दिल फटकर जैसे बाहर आ जाएगा। वह कहीं उड़ जाना चाहता था। मन में तरह-तरह के विचार उमड़ रहे थे। एक बार विचार आया कि तुम जीवित नहीं हो ? उसी क्षण मैंने जीभ काट ली। नहीं, नहीं, मुझे ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। तो फिर तुम आय

क्यों नहीं ? मैं अपने को ढारस बँधाती रही, और किसी तरह इतने बरस तो बिताए, पर अब वियोग असह्य हो रहा था।

"इस-अब फिर वह चोट देने लगा। अगर तुम जीवित थे तो तुम्हें आने से कौन रोक सकता था ? मैंने सोचा जो होना था, वह हो गया। अब मेरे सामने एक यही रास्ता था कि मैं तुम्हारे पास वहीं पहुँच जाऊँ। उन्माद में तरह-तरह के चित्र उभरते हैं। मैंने आँखें बन्द कर लीं। सुपहले देश का सपना देखने लगी, जहाँ पहाड़ थे और झीलें थीं, लम्बे-लम्बे हरे पेड़ हवा में झूम रहे थे, और उन सबके बीच तुम्हारा लम्बा-चौड़ा व्यक्तित्व मेरे साथ खड़ा उसी तरह बातें कर रहा था, जैसी कभी अपने बाग में हमने बातें की थीं।'

वह सिसकने लगी। सुल्तान ने उसे कसकर पकड़ लिया।

"अब मेरे लिए किसी चीज़ का कोई महत्त्व नहीं था। मैंने सोचा। कई महीनों से मेरे मन में यही बात पनप रही थी। मानो जीवन का कोई मतलब नहीं रह गया है।

"मैंने कामध्वज राव को कहला भेजा। यह भी निवेदन किया कि वे समिब उड़ा की अन्तिम व्यवस्था करने के लिए हुक्म द दें।'

:: २८ ::

निर्वासन के १२ वर्ष बीत रहे थे, इसलिए सुल्तान ने किचलकोट जाने का फ़ैसला किया। आज्ञा लेने के लिए वह राजा कामध्वज राव के यहाँ पहुँचा।

राजा ने कहा "बेटा मैं फूलकुँवर के दुर्व्यवहार पर बड़ा लज्जित हूँ। अगर उसकी माँ उसे इतना प्यार न करती, तो अब तक मैं उसे दरबार से निर्वासित कर देता।"

'महाराज ऐसी बातों से चिन्तित न हों। केवल एक ही शक्ति है जो सबका संचालन करती है हम सभी तो उसके हाथ की कठपुतलियाँ हैं।'

उहा राजा के पास था। राजा ने कहा "सुल्तान निहालदे एक अनमोल हीरा है। यदि वह चिता पर भस्म हो जाती तो मैं भी आत्महत्या कर लेता।'

सुल्तान बोला, आपके आशीर्वाद से उसकी उमर लम्बी है।

उहा ने कहा, बड़ी कठिन समस्या थी। राजा को कोई उपाय नहीं सूझ पा रहा था। अगर वह निहालदे को भस्म होने से रोकते, तो वह उन्हें शाप दे देती। दूसरी ओर, अगर तुम उसकी मृत्यु के बाद आते, तो वह तुम्हें क्या जवाब देते ?

'इन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि निहालदे को किसी भी तरह एक दिन के लिए और रोकने की कोशिश की जाय। उन्हें पूरी आशा थी कि तुम लौटोगे जरूर।

"मुझे निहालदे का चेहरा याद है। उसका चिबुक दृढ़ था। जिस चेहरे पर सदा आशा की चमक रहती थी, उस पर घोर उदासी छायी थी। वह जानबूझकर अपने सौन्दर्य से बेपर्वाह हो गयी थी, तो भी वह अपने लहरीले केशों के गहरे कालेपन की चमक न मिटा सकी, जिनके बीच से गुलाबी कपोल फूलों की तरह खिल रहे थे।

"मने उससे अपने सपने के बारे में कहा। मने सपने में देखा था, कि वह तुम्हारे साथ एक ही घोड़े पर बैठी है। इसलिए मने प्रार्थना की कि कम-से-कम एक दिन तो वह रुक जाय।

"निहालदे बोली 'उदाजी, भगवान् करे, तुम्हारा सपना सत्य हो मगर तुम कब तक मुझे रोकने के लिए कहते हो। अब मुझसे आग्रह न करो।' कहते-कहते उसे लगा मानो उसका हृदय चूर चूर हो रहा हो।'

सुल्तान का गला भर आया। बोला, 'जो हो गया सो हो गया अब इन बातों को दोहराकर क्या होगा?'

"लेकिन जब तक मैं अपने भीतर का बोझ हलका नहीं कर लेता मुझे चैन नहीं मिलेगा। उदा ने कहा।

'हाँ, तो मैंने निहालदे से कहा 'मैं भली-भाँति समझता हूँ कि तुम पर क्या बीती है, मगर तुम्हें समझना चाहिए कि भगवान् ने हमें सिर्फ़ सुख भोगने के लिए ही नहीं, बल्कि दुख का भी स्वाद चखने के लिए भेजा है।'

'तब वह बोली 'मैं तुम्हारा तत्त्वज्ञान समझने का प्रयत्न करती हूँ। पर सुल्तान ने एक निश्चित दिन आने को कहा था। मुझे लगता है कि या तो वह इस संसार में नहीं है या उन्हें आने से रोक लिया गया है।

"तभी आकाश में एक गर्जना से हम दोनों चौंक गये। तेज बारिश से धूप में चकत्ते पड़ गये। वह बोली 'क्या बादलों की यह गरज भरी बात का समर्थन नहीं करती?'

'मेरी ज़बान बन्द हो गयी। निहालदे की आँखें शान्त

ीं, जिसकी गहराई में से सच्चाई साफ़ झलक रही थी। मन्हीं टावदार काली बरौनियाँ भींग गयी थीं। उसके सुदृढ़ संकल्प ं थोड़ी उदासी सी मिली-जुली थी जिससे मैं मौन बठा रहा। ने आकर महाराजा को सब बातें बतायीं। वह भी और कुछ हीं कह सके। अन्त में उन्होंने तयारी करने की आज्ञा दे दी।"

"राजा न फुसफुसाकर कहा 'उहा, इस बूढ़े आदमी पर तो रहम करो।' लेकिन फिर तुरन्त वे बोले, 'नहीं, नहीं, कहो, कहो। पर सुल्तान को सब कुछ जानना चाहिए।

:: २९ ::

निहालदे ने सोलह शृंगार किये। अपने सबसे सुन्दर कपड़े और गहने पहन पालकी में बठ बाजे-गाजे के साथ जुलूस में उस बाग़ की ओर वह चली, जहाँ चन्दन की चिता तैयार की गयी थी। पंडित भी वेद-ध्वनि करते उसके साथ-साथ चले।

फूलकुँवर की माँ ने बाजे की आवाज़ सुनी तो पूछा कि यह किसका जुलूस जा रहा है? यह सुनकर कि निहालदे सती होने जा रही है वह स्वयं खोकर एकदम बेचन हो उठीं। बिना दासी या सेविका को साथ लिये वह निहालदे की पालकी की ओर दौड़ पड़ीं। उन्हें जबरदस्त धक्का लगा कि ऐसी पतिव्रता स्त्री अपने आप को चिता पर भस्म करने जा रही है, और इसमें उन्हीं का दोष भी है उसने सोचा। सुल्तान ने उन्हीं के कारण तो शहरकोट छोड़ा। पालकी रोकी गयी।

'रानी कर्णावती ने बड़े ही कातर स्वर में निहालदे से कहा, 'बेटी, इस बुढ़िया को क्षमा कर दो। यह सब मेरे ही कारण हो रहा है कि तुम चिता पर बैठने का निश्चय कर चुकी हो। अगर तुम सती हो गयीं तो मैं दुनिया को अपना मुंह कैसे दिखाऊँगी ?'

'रानी कर्णावती निहालदे को जब मना न सकीं तो वे भी जुलूस में शामिल हो गयीं। रानी कर्णावती लम्बी छरहरी देह की थीं, और उनके माथे पर सन के जैसे सफ़ेद केश लहरा रहे थे। लेकिन उनके मुख पर घोर उदासी थी। सारे राज्य की हँसी-खुशी चली गयी थी। फूलकुँवर अब अकेला ही रह गया था। उत्सव में किसी ने भाग नहीं लिया। उस दिन का उदय तो हुआ खुशी और उदासी के हाथ में हाथ डाल चलने के साथ मगर अन्त में जीत हुई उदासी की ही।

'जुलूस बाग़ के पास पहुँचा। निहालदे सीढ़ियाँ चढ़कर चिता के ऊपर जा बैठी। चिता काफ़ी ऊँची बनायी गयी थी। भगवान् से प्रार्थना करके उसने कहा कि 'चिता में आग लगा दी जाय।' चिता जलने के पहले ही इन्द्र ने ज़ोरों से पानी बरसाना शुरू कर दिया जिससे बड़ी कोशिशों के बाद भी आग नहीं जलायी जा सकी।

'मैंने भगवान् से प्रार्थना की कि, "कल तक इसी तरह बरसते रहो।'" उदा ने बताया। "पर दोपहर के बाद पानी रुक गया। आगे जो हुआ वह तो तुम जानते ही हो।

सुल्तान बैठ गया। उसे लगा कि उसकी सारी शक्ति निचोड़ ली गयी है।

:: ३० ::

हालांकि कामध्वज राव ने मुल्तान को किचलकोट जाने की आज्ञा दे दी, मगर उन्हें उसका वियोग सतान लगा। उन्होंने उसे जाने से बार-बार रोका। बोले "तुमने अपने परिवार के विषय में मुझसे छिपाकर बड़ा गलत काम किया। अगर मैं जानता कि तुम किचलकोट के राजकुमार हो तो मैं तुम्हें यहाँ का राजा बना सन्यास ले लेता। अब भी चूँकि मैं तुम्हें अपना पुत्र समझता हूँ, इसलिए, मेरा आधा राज्य तुम्हारा है।

"मैं आपके विषय में क्या कहूँ। जब मेरे दुःख के दिन थे तो मेरे साथ कौन वैसा व्यवहार करता जैसा कि आपने किया। मैं आपके एहसानों को कभी नहीं भूल सकता। आपसे मिला स्नेह तो मुझे सदा ही याद रहेगा।'

"तो तुम मुझे क्यों छोड़ रहे हो ?

'मेरे पिता वृद्ध हैं उनकी उम्र आपसे भी अधिक है। पहले उनके कोई पुत्र नहीं था। बाद में महात्मा गोरखनाथ के वरदान से मेरा जन्म हुआ। इसलिए मेरे पिता का ख्याल करते हुए आप रोकने का आग्रह नहीं करेंगे। मुझे अब जाने ही दीजिए।'

"तुम मुझे बड़ी दुविधा में डाल रहे हो। जो कुछ तुमने कहा है, उससे तो तुम्हें जाना ही चाहिए। लेकिन मैं तुम्हें अकेले नहीं जाने दूँगा। तुम अपने साथ हाथी, घोड़े और साज-सरकर लेकर जाओ।

मुल्तान बोला, "पिताजी जब मैं नरवलगढ़ से चल रहा था तब महन मारू ने भी इसी बात पर जोर दिया था, पर

न तो मुझे सैनिकों की टुकड़ी चाहिए न और कुछ। भगवान् मेरे रक्षक हैं और संकटकाल में मेरी मदद के लिए महात्मा गोरखनाथ सदा प्रस्तुत हैं।

अपने धर्म पिता से विदा लेकर सुल्तान रानी कर्णावती के पास गया और उनसे किचलकोट जाने की आज्ञा माँगी। उसने रानी से सारा क़िस्सा कह दिया और बोला "माँ, एक बात म और साफ़ कर दूँ। निहालदे की सगाई पहले मुझसे ही हुई थी। मेरे पिता ने मुझे निर्वासित कर दिया था, इसलिए वे चाहते थे कि राजा मायपत राय १२ वर्षों तक प्रतीक्षा करें, जिसके लिए वे तयार नहीं थे।

रानी ने कहा, "बेटा मुझे यह सब बातें नहीं मालूम थीं, इसीलिए मैंने इतनी बड़ी भूल की। मुझे माफ़ कर दे बेटा!

"भाग्य का लिखा बड़ा प्रबल होता है, इसीलिए जिससे मेरी सगाई हुई थी उसी से ब्याह हुआ।

सुल्तान ने रानी को प्रणाम किया, और फूलकँवर से विदा लेकर वह राजकुमारी निहालदे के साथ किचलकोट को चल दिया। फूलकँवर शहर के बाहर तक उन्हें पहुँचाने आया।

:: ३१ ::

निहालदे और सुल्तान दोनों एक ही घोड़े पर सवार थे। रास्ते में उन्हें एक नदी, और कई जंगल पार करने थे। बरसात का गरजता हुआ सबेरा था और अंधड़ चल रहा था।

निहालदे अपने वालों से उलझ रही थी। हवा के झोंके बालों को उड़ा रहे थे और पानी के थपेड़ों से वह परेशान थी।

नदी में लहरें उमड़ रही थीं। जब वे नदी किनारे पहुँचे, तो अँधेरा हो गया था। किन्तु कुछ ही देर बाद चाँद उनकी बग़ल से निकल रुपहली रेखा खींचता आया। हवा जरा थमी, मगर फिर दूसरी दिशा से बहने लगी। सुल्तान ने निहालदे से पूछा कि रात इधर बितानी चाहिए या नदी के उस पार। निहालदे किवलकोट पहुँचने के लिए बेचैन थी इसलिए उसने आग्रह किया कि हम चलते ही रहें तो अच्छा होगा।

सुल्तान ने कहा, 'ठीक है घोड़ा हम दोनों को इस उमड़ती नदी के पार अवश्य ले जा सकता है मगर अभी घोर अँधेरा है और शायद घोड़ा भड़क जाय।

"लेकिन मैं तो घर की याद में पागल हूँ। ऐसी क्या बात है, अभी चाँद उग ही आयेगा। निहालदे ने कहा।

सुल्तान मान गया और वे नदी पार करने लगे। नदी की धारा बिखरी चाँदी की तरह चमक रही थी जबकि पश्चिम की ओर क्षितिज पर बगनी धुँधलापन छाया हुआ था।

वे मँझधार में पहुँचे कि बादलों ने चाँद को ढँक लिया। घोड़ा बेचैन हो उठा और डूबने लगा। उन्होंने चाहा कि हाथ में हाथ देकर वे साथ-साथ बह सकें, मगर पानी के थपेड़े बहुत तेज थे। अन्त में निहालदे का हाथ छूट गया। वह चीख उठी 'प्रिय मुझे माफ़ करना, यह मेरी जिद का ही नतीजा है।"

सुल्तान बहकर एक दूर के नगर में आ पहुँचा। वह रात भर पानी में बहने के कारण थकान और निराशा से एकदम

पूर हो गया था। सुबह वह तट पर आकर लग गया। मटमैली नदी के किनारे बसे नगर की सफ़ेदी चमक रही थी।

नगर का एक बड़ा व्यापारी नदी पर नहाने आया था। उसके कोई लड़का न था। जब उसने सुल्तान को देखा तो अपने आप स्नेह उमड़ पड़ा। उसने सोचा कि ईश्वर ने उसे एक बेटा भेज दिया है। उसने अपने नौकर से कहा कि इस को पानी से तुरन्त निकालो। सुल्तान को पानी से निकाला गया।

सुल्तान को निहालदे का कुछ भी पता नहीं चला। उसने सोचा कि बिना निहालदे के किचलकोट लौटने की अपेक्षा तो व्यापारी के साथ रहना कहीं अधिक अच्छा है।

निहालदे को यह भूल नहीं सका। एक सुन्दर लड़की से उसकी शादी हुए छह साल हो गये थे। पहले तो उसके साथ रहने का अवसर ही नहीं मिला। जब मिला भी तो हवा के झोंके से बुझी लौ की तरह वह जुदा हो गयी। वह उसे कैसे भूल सकता था? वह जंगल की तरफ़ वाले झरोखे पर शान्त भाव से खड़ा उधर ताका करता। लेकिन उसे लगता, मानो वह बन्द लाल वाले दरवाज़े के सामने खड़ा है। मन में आया, इसकी चाबी तो होगी ही। वह किसी दिन ज़रूर खुलेगा। दिन की रोशनी कम होने लगी अँधेरा छाने लगा। वह चुपचाप वहीं खड़ा रहा, मानो निहालदे की बाट जोह रहा हो जो किसी दिन आकर उसे मिल जायगी।

उसे याद नहीं कि कब वह झरोखे के फ़र्श पर लेट गया, और कब उसे नींद आ गयी। तब उसे लगा वह अकेला नहीं था। उसके चेहरे पर एक छाया पड़ी। उसने बाँह बढ़ाकर उसे

पकड़ना चाहा—यह तो निहालदे थी। वह आवेश में चिल्लाया और आँखें खोलीं। सब कुछ शान्त था। वहाँ कोई न था। चाँद पर काले-काले बादल घुमड़ रहे थे।

:: ३२ ::

सेठ भगीरमल ने सुल्तान से पूछा "इतने अच्छे और सम्मानित परिवार की सुन्दर लड़की से विवाह का अवसर पाने पर भी तुम दुखी क्यों हो ?

दिन का चमकीला प्रकाश उसकी आँखों में लहरा उठा, पर उस दुख के आँसुओं ने तुरन्त ढँक लिया। उसके कानों में अजब आवाजें गूंजने लगीं। उसका सिर फटने लगा। अन्दर उसके भारी उथल-पुथल मची हुई थी।

"बेटे, जो गया, वह फिर नहीं लौटता। तुमने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया है और इसे एक दूसरा ही युद्ध समझो। हिम्मत मत हारो।

सुल्तान ने कहा "लेकिन मेरी तो एक पत्नी थी और मैं कैसे जानूँ कि वह मर चुकी है। मैं ऐसी हालत में दूसरी लड़की से विवाह नहीं कर सकता।"

वह कुछ सोचता हुआ चुप हो गया।

"वह स्त्री बड़भागिनी है जिसने तुम्हारे हृदय में ऐसा प्रेम जगाया। मगर, मेरे बेटे, तुम्हारी ऐसी जवानी और तुम्हारा ऐसा सुन्दर रूप देखकर मुझे पीड़ा होती है।"

सुल्तान ने सोचते-सोचते सिर झुका लिया। उसे केलागढ़ के बाग़ में वह बाँकी कजरारी आँखों वाली सजाधुर याद आयी जिसके होंठों पर सदा मुस्कराहट खिली रहती थी। एक धीमा—मधुर स्वर उसके कानों में गूँजने लगा—वह स्वर जो सदा उसकी याद में घुला रहता। मगर वह एक खिला हुआ फूल अपनी भरपूर जवानी में मस्त युवती। उसे वह रात याद आयी—इदरकोट की आखिरी रात। किस तरह व एक-दूसरे से बँधे हुए थे, अपने आपको और सारे जगत् को बिसारकर।

"नहीं मैं दूसरी पत्नी कैसे ला सकता हूँ? हे ईश्वर—मैं उसे जरूर खोज कर रहूँगा।

भंगीरमल ने कहा 'निहालदे अब जिन्दा नहीं होगी। दुनिया अपने ढंग से चलती आयेगी। उसे भूल जाओ। मुझे अफ़सोस है कि ऐसी पत्नी को तुम गवाँ बैठे, लेकिन क़िस्मत के सामने किसकी चलती है?

उसका गला सूख रहा था। वह चक्कर लगाता रहा धामोंमाथों करता रहा। बड़ा ही अकेलापन महसूस हो रहा था।

मनुष्य को चाहिए कि वह अपने कर्तव्यों का ठीक ढंग से पालन करे। दिन रात व्यर्थ की निराशा में डूबे रहने से कोई फ़ायदा नहीं। और, सुल्तान वह अब पुराना सुल्तान नहीं था। उसका अस्तित्व तो निहालदे के साथ अस्त हो चुका था। अब वह एक दूसरा ही व्यक्ति था। भंगीरमल के पास शान्तिपूर्वक जीवन बिताने के लिए क्यों न टिक जाओ। उसे किचलकोट

का भूल जाना चाहिए। लेकिन यह भी खुशी की बात नहीं थी। वह सोचता रहा।

निहाल अगर जिन्दा भी हो तो यह सब नहीं समझेगी किन्तु पुरुष तो सोच सकता है, सही रास्ता चुन सकता है। वह एक सम्पन्न परिवार की सुन्दरी लड़की से विवाह करने जा रहा है। वह अभी बिल्कुल युवा है। व्यर्थ में जिन्दगी बर्बाद करने से क्या फ़ायदा?

यकायक सुल्तान प्रसन्न हो उठा। उसे लगा कि शादी कर लेनी चाहिए। 'मैं समझता हूँ मेरे लिए यही एक रास्ता बचा है'—उसने शान्तिपूर्वक कहा और अब उसे कोई शक नहीं रहा कि यही उसका फ़र्ज़ हो गया है।

शादी का दिन आ गया। दूल्हा बनकर सुल्तान बारात के साथ काशी की ओर चला। कुछ दिनों में बारात वहाँ पहुँची।

दूल्हा बना सुल्तान हाथी पर चढ़ा। शहर के बीच से बारात धीरे-धीरे जा रही थी। तभी सुल्तान के दाहिने गाल पर कुछ आकर लगा। घूमकर उसने देखा—खिड़की पर निहालदे बहाना पड़ी थी और उसके मुख माथे पर सूर्य की किरणें चमक रही थीं।

सुल्तान हाथी से कूदकर उस घर में दौड़ के चला गया। बारात के लोग आश्चर्य-चकित थे कि दूल्हा यों क्या दौड़ रहा है।

किसी को कुछ भी कहने की जरूरत न पड़ी, निहालदे के चेहरे के प्रदीप्त सौन्दर्य ने ही सब कुछ कह दिया। बहनों ने उसे एकान्त में छोड़ दिया। निहालदे ने ध्यान से सुल्तान को देखा। क्या यही वह व्यक्ति है? इतनी मुसीबतों का

मारा, बेमरव्वार हो जाने पर भी क्या अपना वैसा ही स्वभाव बनाये रखा है, जिससे वह सबका प्रिय हो जाता था ? उसे सन्देह होने लगा मगर वह कभी यह विश्वास न कर सकी कि सुल्तान का भी पतन हो सकता है।

निहालदे के भीतर उठती हुई आँधी को सुल्तान भाँप गया। बिना कुछ कहे उसने निहालदे को अपनी भुजाओं में बाँध लिया। निहालदे के होंठों पर उसके होठ थे और तुरन्त निहालदे की तीव्र चाह का सन्देश उसके पास पहुँच गया। उसने आँखें खोलीं और पहले वे विचित्र शब्दों में एक-दूसरे से बोले—सिर्फ़ सवाल-पर-सवाल पूछे गये बिना जवाब की आशा किये, बीच-बीच में थोड़ा रुकते हुए।

सुल्तान लगभग रोता-सा बोला, 'मुझे लगा कि जीने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। कब तक ऐसा रहा मैं तो अब यह भी भूल गया।"

'मैं जानती थी कि पहले तुम्हें बहुत धक्का लगेगा फिर मुस्कराकर निहालदे कहने लगी, 'किन्तु लगता है कि तुम उसे सँभाल ले गये।'

सुल्तान को बड़ी शर्म मालूम हुई। इस झिड़की से वह चुप हो गया।

'मुझे माफ़ कर दो प्रिय ! तुम मुझसे इतने दिनों तक दूर रहीं इस पर तो मुझे विश्वास भी नहीं होता। निहालदे ने अपना सिर सुल्तान की गोद में छिपा लिया, सुल्तान ने झुककर उसके कपोल से अपने कपोल सटा लिये और फिर वह सुनाने लगी कि कैसे वह इस जगह पहुँची।

:: ३३ ::

राजकुमारी निहालदे को लहरों के थपेड़े इधर-उधर बहाते रहे मगर दूसरे दिन वह किनारे से लग गयी। वह अपने भीगे कपड़ों में थर-थर कांप रही थी। सूर्य क्षितिज से उठ रहा था और हवा में ठण्डक थी। उसकी पानी से भीगी हुई लटें कंधों पर झूल रही थी। वह थककर चूर हो गयी थी और उसकी ताकत जवाब दे रही थी। नदी किनारे उस समय हाबराम पण्डित पूजा कर रहा था। उसकी चार लड़कियां भी साथ थीं। जब उन्होंने देखा कि एक नवयुवती बहाव में बचकर तट से आ लगी है तो वे बड़ी प्रसन्न हुई।

वे काशी में रहती थीं, और निहालदे को वहीं पर ले गयीं। उनमें से बड़ी लड़की ने कहा 'हम चार बहनें तो हैं ही, अब तुम पांचवीं बहन हो गयीं। बस रहते हम तुम्हारे लिए कुछ भी उठा न रखेंगी।'

अब जो कुछ भी हो वह इन सब बातों की चिन्ता छोड़ चुकी थी। निहालदे ने सारी कहानी शुरू से सुना दी—वह कौन है, कैसे मुल्तान की वहू बनी और कैसे थपेड़ों में बह गयी। इससे उसको कुछ राहत मिली। उसने कहा, 'शायद मेरी परीक्षा लेने के लिए मुझ पर यह मुसीबत आयी है। मुझे तुम लोगों के साथ बहुत जमकर रहने में कोई आपत्ति नहीं, पर मुझसे कभी घर से बाहर आकर किसी पुरुष से मिलने के लिए कभी मत कहना। जब तक मैं जीवित हूं, मुल्तान के सिवा किसी अन्य पुरुष से नहीं मिलूंगी।' उसकी कांपती और

शोकपूर्ण वाणी दुख के स्रोत की तरह बहती हुई पश्चाताप की नदी में जा गिरी ।

कुछ देर तक वह इतनी पीड़ित रही कि उससे कुछ खाया तक न गया । चारों बहनों को बड़ी चिन्ता हुई । मगर धीरे-धीरे सब कुछ अपनी सामान्य गति से चलने लगा, और उसे भी भूख मिटाने के लिए खाना खाना स्वीकार करना पड़ा ।

घर वह बहुत पुराना था । लोगों के चलते फिरते पत्थरों और चौखटों पर पाँवों के निशान पड़ गये थे । पंडित के घर के पीछे कुछ दूर पर गंगा नदी बहती थी । निहालदे शाम को वहीं चली आया करती थी । दलदली किनारों के बीच से श्वेत रस्सी की तरह तेज़ी से लहराती हुई गंगा उसे बहुत सुहाती थी । वह सोचती कि इस घुमावदार रसीली नदी के अन्त में समुद्र इस मिलनातुरा की बाट जोह रहा होगा । किन्तु कोई उसकी बाट जोहने वाला नहीं दीखता । आखिर वह नदी से बाहर आयी ही क्यों ? अपार जल था परतों पर परतें थी जल की । वह शान्ति से नीचे सोयी रहती—सदा-सदा के लिए सो जाती । पानी की श्वेत चादर उसके मुख और शरीर को ढँक लेती —फिर किसी बात का कोई अन्तर पड़ने वाला नहीं था ।

बालों को पीछे की ओर फेंकती हुई वह उठ खड़ी हुई । उसका घाघरा गेंदम पानी से भीग गया था और वह अकेलेपन की निराशा में डूब रही थी । वह चुपचाप एक भजन गुनगुनाने लगी पर यकायक रुक गयी । उस मन नहीं पड़ा ।

इस तरह विषण्ण दिन बीतने लगे और बसन्त ऋतु आ

पहुँची। फूलों की गन्ध से मस्त मधुमक्खियों की गुनगुनाहट उसके कानों में पड़ी, और कोयल की कूक सुनकर ऐसा लगा मानो कामदेव आह्वान कर रहे हों।

वह बड़ी दुखित और हताश हो बैठी रहती। हावराम की दो बड़ी लड़कियों की सगाई हो चुकी थी और शादी भी जल्दी ही होने वाली थी। उसके बाद छोटी लड़कियों का ब्याह भी हो जायगा। लेकिन उसके जीवन में तो सूनापन ही बाक़ी बचा है। आखिर वह किस लिए जिन्दा है? ऐसा प्यार, जो अपने प्रिय को न पा सके सच्चा प्यार नहीं।

"क्या मेरा मन निर्मल नहीं रहा। हाँ मैं तो चिता पर भस्म होने जा रही थी। क्यों न अभी देह को भस्म कर दूँ। चिता पर ही मैं पवित्र हो सकूँगी। गंगा में भी डूब सकती हूँ।" उसने उठने की कोशिश की, पर गिर पड़ी। 'नहीं वह कायर नहीं बनेगी। मुल्तान की आत्मा को उद्वलित करने के लिए ही वह चिता पर जलना चाहती थी। मगर शायद कष्टों में दिन काटता हुआ उसका प्रियतम उसकी तलाश ही कर रहा हो।"

फिर मुल्तान से विवाह करके उसने केवल अपना पति ही नहीं चुना है बल्कि जीवन का एक ऊँचा आदर्श भी। वह उसी मुख्य बात पर सोचने लगी, जिसके लिए वह अपने को न्योछावर कर चुकी थी। उस आदर्श तक पहुँचने के लिए उसे मुल्तान की मदद चाहिए। "मैं सिवा उसी बारे में सोचने के और क्या कर सकती हूँ? सिर्फ़ पथ निहारती रहूँ अब मेरे भाग्य में यही एक सन्तोष बचा है।'

पंडित हाबेराम सेठ करोड़ीमल के पुरोहित थे। एक दिन पंडित ने कहा कि सेठ की बेटी के पति की तरह का सुन्दर, बाँका पुरुष उन्होंने जीवन में नहीं देखा। उस युवक की ओर देखने से एक तरह की शान्ति मिलती है, और देखने वाला अपनी सारी चिन्ताएँ भूल जाता है। लगता है कि उसे अँधेरे में भी खड़ा कर दिया जाय, तो वहाँ रोशनी फैल जाय। बिना सजधज के ही वह सुशोभित होता है।'

वधू के घर की ओर आते समय वर को हाबेराम के घर की ओर से गुजरना था। चारों लड़कियाँ निहालदे के पास जाकर बोलीं, 'तुम अपने पतिदेव के बारे में बताती थी वह तो ऐसे होंगे ही, पर जरा सेठ करोड़ीमल के दूल्हे को तो देखो। कहते हैं वह भी एक ही है उसका जवाब नहीं।'

निहालदे ने पहले तो देखने से इन्कार कर दिया पर काफ़ी कहने-सुनने पर इस बात पर राजी हो गयी कि वह दूर से देख कर बतायेगी कि दूल्हा कैसा है।

ज्योंही बारात घर के पास पहुँची, निहालदे ने खिड़की से देखा और अवाक रह गयी। उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। उसने भर्राये गले से कहा 'यह तो मेरे पति हैं। शायद उन्होंने यह सोच लिया है कि मैं मर गयी हूँ। ओह कुछ करो कुछ तो करो, कि यह हाथी खिड़की के नीचे रुक जाय। चारों लड़कियाँ घबरायी हुई नीचे उतरीं। उन्हें कुछ सूझ नहीं कि वे क्या करें।

निहालदे दुख से पागल हो उठी। अगर वह सुल्तान का ध्यान अपनी ओर नहीं खींचती तो बाजी ही हाथ से चली

ायगी। उसका गला सूख रहा था। दिल मसोस रहा था। क्ति तो उसकी खत्म हो ही चुकी थी। बिना सुल्तान के जीवन का वह भयभीत हो उठी यह तो पहले से नी अधिक भयानक। "कुछ-न-कुछ जरूर हो सकता है हाय राम क्या करूँ?'

हाथी खिड़की के बिल्कुल नीचे आ गया था। यकायक आखिरी कोशिश करने के आवेश में वह चिल्लायी और अपनी अँगूठी उस पर फेंकते ही बेहोश हो गयी।

अपनी राम-कहानी समाप्त करते ही वह सिसक-सिसक कर रोने लगी। उसकी देह काँपने लगी। सुल्तान व्यग्र हो देखता रह गया। उसकी आँखें भर आयीं। उसने उसे बाँहों में बाँध लिया।

सुल्तान अपने और निहालदे के लम्बे सफ़र के लिए एक अच्छा घोड़ा चाहता था। सेठ करोड़ीमल न हाल ही में कुछ घोड़े खरीदे थे। वे सुल्तान की मदद करने को तैयार हो गये। सुल्तान सेठ के घुड़साल में गया, तो एक घोड़ा बुरी तरह उछल-कूद मचाकर हिनहिनाने लगा। सुल्तान उसक पास गया। अरे! यह तो उसी का वही घोड़ा है जिसे उसने समझा था कि नदी में डूब गया।

लम्बे सफ़र के बाद व किपलकोट पहुँचे। निर्वासन का अभी एक दिन और बाक़ी था। निहालदे क साथ वह अपन पिता के बाग़ में गया, जिससे आखिरी दिन बिना किसी को पता लग बिता सके।

निहालदे थककर चूर हो गयी थी। उसकी आँखों के नीचे

काली कृष्णली दीख रही थीं। थैले में जो कुछ बाक़ी था, उससे उन्होंने अपनी भूख मिटानी चाही। एक कोने में माली की झोंपड़ी थी। चूंकि अन्दर गर्मी थी इसलिए सुल्तान ने टूटही चारपाई को खींचकर बाहर कर लिया ताकि निहाल उस पर सो सके। मगर निहाल ने कहा कि जब तक दोनों के सोने का प्रबन्ध नहीं हो जाता वह अकेली खाट पर नहीं सोयेगी। अत दोनों आकाश के चंदोवे तले जमीन पर ही सो गये।

'आख़िर हमने निर्वासन के दिन काट ही लिये,' सुल्तान ने कहा और दोनों एक-दूसरे की ओर देखने लगे। आवेश में उसने निहाल को आलिंगन में बांध लिया। निहाल उसके गठे शरीर से और भी लिपट गयी, और उसके सीने में अपना सिर छिपा लिया।

:: ३४ ::

फिल्लकोट की हालत बुरी थी। अकाल पड़ा हुआ था। राज्य की आय इतनी कम हो गयी थी कि उसका चल पाना मुश्किल हो रहा था। खज़ाना खाली था। राजा की भी हालत बुरी थी। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया था।

दूसरे दिन, सुबह सुल्तान ने दरबार में जाकर पिता को दण्डवत् प्रणाम किया। निहालदे ने भी अपने श्वसुर के चरण स्पर्श किये।

राजा मनपाल इतने अधिक आनन्द विह्वल हो गये कि रो पड़े।

सुल्तान यों लड़ाई से नफ़रत करता था पर वह नहीं चाहता था कि उसके शत्रु उस पर विजय पायें। सबसे पहले सुल्तान ने किचलकोट को सुदृढ़ बनाया जिससे वह शत्रुओं से सुरक्षित रह सके। वह जोश का गुलाम नहीं था, मगर सुराज की स्थापना के लिए उसका सुदृढ़ होना जरूरी था। उसने ऐसा इन्तजाम किया जिससे आसपास के राज्यों की सेनाओं की गतिविधियों का पता उसे लग सके। उसने नये ढंग के हथियारों को बनाने की खोज के लिए युद्ध-विशारद सेनानी नियुक्त किये। किचलकोट आने वाले यात्रियों पर निगाह रखी जाती कि दूसरे राजाओं के जासूस तो इस भेष में नहीं आ गये हैं। जब भी सुल्तान कोई लड़ाई लड़ता, वह नष्ट करने से अधिक निर्माण करने की बात सोचता।

कुछ दिनों बाद महाराजा मैनपाल ने निश्चय किया कि वह सन्यास लेकर अपने अन्तिम दिन भगवत् चिन्तन में बितायेंगे। उन्होंने घोषणा करवा दी कि उनके स्थान पर सुल्तान को राजा बनाया जाय।

वह एक शुभ मुहूर्त था। नगर को खूब सजाया गया। रंग-बिरंगे भड़कीले वस्त्रों में सजी गौरवदनियां इधर-उधर मंगलगान गा रही थीं। राजा ने गरीबों के लिए अपना निजी खजाना खोल दिया कि कोई भी नगर में अभावित न रह जाय।

सुल्तान परिवार के इष्ट देवता की पूजा करने गया।

लगभग दोपहर को वह पूजा करके निकला। उसे महल तक ले जाने के लिए सेना खड़ी थी। पुरोहित आये और उन्होंने मन्त्रोच्चार करते हुए पहले पवित्र तेल और पाँच पवित्र नदियों के जल से नहला कर सुल्तान का अभिषेक किया। निहालदे उसकी तलवार लिये खड़ी थी। सुल्तान वस्त्रों से सज्जित हो गया तो निहालदे ने उसे तलवार बाँध दी।

पहले पिता के पास जाकर उसने चरण स्पर्श किये। फिर बाहर चलकर आगे-आगे सेनापति और उनके पीछे वह अपने पिता के साथ विशाल सभागार में आया। नगर के सभी सम्मानित व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे। सारे क़िलेदार भी आये थे। योद्धाओं के शिरस्त्राण और मुकुट चमक रहे थे। शंखनाद और मन्त्रोच्चार के बीच राजपुरोहित ने उसके मस्तक पर टीका लगाया। प्रत्येक सामन्त और सेनापति ने बारी-बारी से सिंहासन के सामने आकर नये राजा को सम्मानांजलि अर्पित की।

पहला दिन प्रार्थना तथा आभार प्रदर्शन में बीत गया, किन्तु दूसरे दिन रागरंग होने लगा। गलियों सड़कों गृहों और मण्डपों में बाजे-गाजे गूँजते रहे। नर्तकियों के नाजुक पाँवों में बँधे घुँघरू दिन भर बजते ही रहे।

राज्य के सामन्तों और पड़ोस के मित्र राजकुमारों ने सुल्तान को एक शानदार दावत दी। संगीत और हास्य के बीच प्यालों-पर-प्याले खाली हो रहे थे। हरेक पर सरूर छाने लगा था। हर आदमी रंगरेलियाँ कर रहा था। एक राजकुमार तो उठकर एक लड़की की नक़ल करके नाचने ही लगा। उसे देखकर दूसरे लोग हँसने और तालियाँ बजाने लगे।

सुल्तान ने भी जीवन में पहली बार अपना संयम तोड़ दिया था। जब वह सोने के लिए चलने लगा, तो नशे में चूर था। लड़खड़ाता हुआ वह अपने शयनागार की ओर बढ़ा। आगे उसने घूँघट-काढ़े निहालदे की जैसी एक छाया खड़ी देखी। पानी की धारा देखकर पिपासाकुल पथिक की तरह उसने हाथ बढ़ाया, और उसे अपने से लपेट लिया। उसकी आँखें नशे की घोर मादकता से चमक रही थीं। घूँघटवाली के नरम हाथ उस झूमते हुए को थामकर कमरे में ले गये।

फिर वह सुल्तान के पास लेट गयी। मदिरा से सुल्तान की विचार-शक्ति क्षीण हो गयी थी। अन्त में जब सुल्तान ने उसका घूँघट हटाने की कोशिश की, तो उसने धीमे स्वर में कहा 'मेरे प्राण, आज मेरा घूँघट मत हटाओ क्योंकि इसमें मुझे कुछ अशुभ नज़र आता है।"

मगर वह भी तो आदमी था हाड़-मांस का पुतला। वे दोनों एक-दूसरे में लिप्त हो गये। सुल्तान की बाँहों ने उसे और कस लिया और युवती के भीतर का संगीत उभरने लगा। अन्तिम बाहुपाश के बाद सुल्तान ने अनुभव किया कि, घूँघट आँसुओं से भीग गया है मगर वह नींद से इतना बेकस था कि उसे सोचने की फ़ुरसत न थी।

दूसरे दिन सुल्तान शहनाई की मदमाती धुन से जाग उठा। कमरे में वह अकेला था। हालांकि घूँघटवाली युवती की उसे क्षीण याद थी, किन्तु राज-काज में फँसने के बाद वह उसे बिल्कुल भूल गया।

:: ३५ ::

निदान, सुल्तान संकट से मुक्त हुआ। पर मन में बार बार उठने वाली उल्लास और विजय की अनुभूति को वह दबाये रहता। वह इस वक्त भुलाने वाली शान्ति के उल्लास में भोग विलास से दूर रहा। ऐसे समय मनुष्य प्राय: अपने को अजेय और अडिग समझ लेता है, मगर सुल्तान के भीतर ऐसी कोई भावना न थी। अब वह जान गया था कि आस पास के बहुत से राजे उसके राज्य पर नजर लगाये हुए हैं। उनमें से बहुतेरे तो ऊपर से दोस्ती दिखलाते थे, पर भीतर ही भीतर उसे गिराने की ताक में थे। राजा के गुणों या अव गुणों से उन्हें कोई मतलब नहीं था। उनकी नजर में उसके गुणों का केन्द्र तो उसकी सेना ही थी।

जिधर भी वह देखता एक ही समस्या दृष्टि में आती। पश्चिमी क्षेत्र में कच्छ का राजा अपनी सेना बढ़ा रहा था और उसे दबाना जरूरी हो गया था।

जाड़ा आते ही दिन छोटे होने लगे और हवा में ठण्ड बस गई। आक्रमण की सारी तैयारियाँ हो चुकी थीं। क़िलों की दीवारों पर चढ़कर हमला करने के लिए मचान तैयार थे। हाथियों की सूँडों के लिए इस्पात की परतें तयार थीं जिससे वे दरवाजों को धकेलकर तोड़ सकें। क़िले पर गोले बरसाने वाली तोपें हाथियों को ही खींचकर ले जानी थीं। यातायात के लिए जमीन कठोर भी हो गयी थी। फसलें कट चुकी थीं, इसलिए लड़ाई से किसानों के रुष्ट होने का भी डर नहीं था। इसलिए सुल्तान ने दूसरे दिन कूच करने का आदेश दे दिया।

सुल्तान सोने की तयारी कर ही रहा था कि निहालदे चुपके से आयी। उसने बालों की एक लहराती लट को पीछे किया और घाघर की चुन्टों को सहेजा। एक कोमल शान्त भाव उसे अपने में लपेटे हुए था।

वह सुल्तान के पास बिस्तर पर बैठ गयी। उसने निहाल के बालों को सहलाया और काले बालों वाली युवती की ओर देखा, जिसका सिर पीछे को ढलका हुआ था वक्ष तने हुए थे और कानों में हीरे के बुन्दे दमक रहे थे। निहाल ने अंगड़ाई ली। यह अंगड़ायी मस्ती भरी थी जिससे उसकी देह का लचीलापन दरस गया साथ ही उसका उमग उठना उसके बस लावे सौन्दर्य में चार चाँद लगा गया।

सुल्तान ने उसे पास खींच लिया। मुस्कराती हुई वह झुकी मगर खाची जान से वह सुल्तान के कंधे पर गिर पड़ी। उसने हाथ बढ़ाकर निहाल का चिबुक अपनी ओर कर लिया। हल्के झटके से लम्बे केश खुल गये और उनके बीच से, ऊपर जलते हुए झाड़-फानूसों की रोशनी से उसकी गर्दन और कंधे चमकने लगे और दोनों एक-दूसरे में खो गये।

रात को देर तक ये आदमियों का चिल्लाना और घोड़ों का हिनहिनाना सुनते रहे। 'यह एक लम्बी लड़ाई हो सकती है।' सुल्तान ने कहा।

"हम कहाँ हटने वाले हैं?" निहाल बोली।

'यह 'हम' कौन है? तुम तो नहीं ही हो।'

'क्या इससे तुम्हें ताज्जुब होता है? क्या इसके पहले

तुमने मुझे तलवार लिये नहीं देखा है ?" बड़े ही आश्चर्य भरे ठण्डे स्वर में उसने पूछा ।

"मगर यहाँ वह बात नहीं है, यह लड़ाई बहुत कठिन है।"

नरमाहट से तुरन्त उसने अपना हाथ खींच लिया। एक हाथ के सहारे वह लेट गयी। "अब तक जो हुआ उसे देख कर भी तुम इसे कठिन बताते हो ?

उसने लम्बी साँस ली और उसकी आँखों में आँसू झलक आये। सुल्तान ने अनुभव किया कि वह काँप रही थी।

सुल्तान बोला "नहीं नहीं मेरा मतलब यह नहीं था।

निहालदे और सुल्तान का वैयक्तिक और सामाजिक जीवन एक-दूसरे से गुँथा हुआ था। वे दोनों मिलकर राजकीय कामों में भी उसी तरह हाथ बँटाते थे जैसा आनन्द वन में।

दूसरे दिन सुबह सुल्तान के साथ सेना के आगे-आगे एक दूसरा योद्धा भी था। निहालदे एक सुन्दर सफ़ेद घोड़ी पर सवार थी, और उसके दोनों ओर दो तलवारें लटक रही थीं। यह ऐसा दृश्य था जिसे देखकर सभी की आँखों में उत्साह की चमक आ गयी। किपसकोट का पश्चिम की ओर से होने वाले आक्रमण के आतंक से आज़ाद कराने के उद्देश्य से वे कच्छ की ओर बढ़ चले।

ज्यों-ज्यों सुल्तान कच्छ की ओर बढ़ने लगा, छोटे-छोटे राजाओं ने राह में घुटने टेक दिये। उन्होंने न केवल यही वचन दिया कि वे किपसकोट के खिलाफ़ नहीं लड़ेंगे, बल्कि वे कच्छ के खिलाफ़ लड़ने के लिए अपने दल-बल सहित सुल्तान की सेना में जा मिले।

ऊपरी तौर पर सुल्तान किथसकोट की ओर मुड़ गया। उसने अपनी सेना को दो भागों में बाँट दिया। पराजित राजाओं की सेनाओं को आगे रखा गया, और असली सेना को लोहा लेने के लिए पीछे। लगभग एक सप्ताह तक किथसकोट की ओर चलने के बाद एक रात मुख्य सेना चुपचाप लौटकर दूसरे रास्ते से कच्छ के रण की ओर चल पड़ी। यह सब सुल्तान ने सिर्फ़ इसलिए किया कि कच्छ का जगतसिंह सुल्तान की फ़ौज की गति के बारे में ग़ाफ़िल रहे।

वह रण में रुका। वही एक स्थान ऐसा था जहाँ के बारे में यह नहीं सोचा जा सकता था कि कोई सेना वहाँ आकर अपना पड़ाव भी डाल सकती है। इसलिए सुल्तान ने सोचा कि जगतसिंह इस दिशा में असावधान रहेगा।

सुल्तान को कच्छ के दुर्ग के बारे में यद्यपि सब कुछ पता था, फिर भी वह स्वयं शत्रु का भलीभाँति परिचय पाना चाहता था। वह जानता था कि उसके लिए यह बड़ा ही अच्छा समय है, क्योंकि जाड़ा ख़त्म हो चुका है। बसन्त आ गया है और मरुभूमि की हवा कुछ गर्म होने लगी है। दो महीनों में रेत असहनीय रूप से गर्म हो उठेगी। वह क़िले को घेर भी सकता था मगर वह ज़्यादा लम्बा तरीक़ा था।

अपने चुने हुए सिपाहियों के साथ वह भेष बदलकर गया। जब उन बड़े दरवाज़ों पर सूर्य की पहली किरण पड़ी तब वे खोले गये। सुल्तान ने आने-जाने वालों की संख्या बढ़ने तक प्रतीक्षा की और बाद में कपड़ों के नीचे अस्त्र छिपाकर एक यात्री के भेष में अन्दर घुसा गया। चक्करदार गलियों,

सँकरे रास्तों और अँधेरी सड़कों से वह चलता गया। लोग अपने रोजमर्रा के कामों में व्यस्त थे। लेकिन चन्द सन्तरियों के सिवा उसने सशस्त्र सेना कहीं भी नहीं देखी। यह चौंकाने वाली बात थी। अगर जगतसिंह उसकी खबर पा उस पर हमला करने निकल पड़ा हो तो सुल्तान की पराजय निश्चित थी। उसके अभाव में उसकी सेना ऐसे शक्तिशाली शत्रु का सामना नहीं कर पाएगी। इसीलिए वह घोड़ा दौड़ाता हुआ तुरन्त अपने पड़ाव की ओर लौट पड़ा।

शाम के वक्त उसे अपना पड़ाव दिखायी दिया। शायद जगतसिंह के साथ युद्ध चल रहा था। काठियावाड़ी टट्टुओं पर झुंडों-के-झुंड लपक-लपककर सुल्तान की सेना को जबर्दस्त नुकसान पहुँचा रहे थे। जब उसने देखा कि उसकी सेना में अजीब भगदड़ पड़ी है, लोग असमंजस में हैं, तो उसे बड़ा क्रोध आया। जंगलियों की तरह चिल्लाते हुए उसने अपने थोड़े-से आदमियों के साथ सरपट दौड़कर हमला बोल दिया।

शत्रु की सेना वापस मुड़ी। बस, सुल्तान को उनके सेनापति की याद रही, जो अपने चमकीले दाँतों से सेना को हुक्म दे रहा था और उसके शब्दों को हजारों लोग दुहरा रहे थे। अब काफ़ी अँधेरा पड़ चुका था। जैसे ही वह धूल उड़ाता हुआ सुल्तान के पास से गुजरा, उसने अपना भाला फेंककर मारा। सुल्तान ने वार को अपनी ढाल पर रोकना चाहा, पर उसकी आकस्मिकता के कारण वह भी चकित रह गया। भाले की चोट से उसकी कुछ पसलियाँ टूट गयीं और वह घोड़े से गिर पड़ा। जमीन पर गिरते समय उसने चाहा कि बायें हाथ

से टेक लगा म और इसी कोशिश में उसके हाथ की हड्डी भी टूट गयी। हवा म खुरों की गड़गड़ाहट और घोड़ों की हिनहिनाहट गूंज रही थी। इस कोलाहल में शत्रु बिना पीछे की ओर देखे चल दिया और दूर जाकर कहीं गुम हो गया।

थका और चोट व दर्द से संज्ञाहीन सुल्तान जमीन पर पड़ा था। धुंधलका अब घन अँधेरे में डूब गया था। आकाश म कुछ ही तारे दिखलायी पड़ रहे थे और सफ़ेद रेत पर मद्धिम चमक थी। उसने कई बार उठने की कोशिश की, पर उठ न सका। बहुत कमजोरी महसूस हो रही थी। वह बुरी तरह उत्तेजित था। अपने खेमे तक पहुँचने की उसे कोई आशा न थी। आसपास की खून की बदबू से उसका दिमाग़ फटा जा रहा था। घायल सैनिक असहनीय कष्ट से चीत्कार रहे थे और मौत धीरे-धीरे उन्हें लपेटती जा रही थी। जंगली गीदड़ मृत देहों को नोचते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। बड़ी कठिनाई से उसने एक मरे हुए सैनिक से तलवार खींचकर अपनी रक्षा का यत्न किया।

आधी रात को उसने देखा कि दो मद्धिम मशालें मंद-मंद उसकी ओर आ रही हैं। कुछ सैनिक थे, और साथ में एक लम्बे क़द की स्त्री, जिसे सुल्तान ने निहालदे समझा। वे भाषा में किसी को खोज रहे थे। जब वे उससे थोड़ी दूर थे, तभी वह अपने को सँभाल नहीं सका और चिल्ला पड़ा, "निहाल निहाल!"

स्त्री आवाज़ की ओर घूमी, और उधर को ही दौड़ने लगी। पीछे-पीछे सैनिक दौड़े। 'मेरे प्राण! आह!' कहती

हुई वह सुल्तान के शरीर पर गिर पड़ी और उसे अपने से दबोच लिया।

'तुम तो मुझे मारे डाल रही हो।' सुल्तान ने धीरे से कहा।

उत्तेजित होकर शंकित दृष्टि से देखती हुई वह उठ बैठी मगर बैठने के साथ-साथ हथेलियों से मुंह ढँककर फफक-फफक कर रो पड़ी। वैद्य जो उसके साथ आया था, तुरन्त दौड़कर सुल्तान को देखने लगा। जब वह उसे देख रहा था तब निहाल ने अपने को संयत कर लिया।

अँधेरे की वजह से जगतसिंह ने अपनी सेना को हटा लिया था, और गोपू जो उस दिन सुल्तान की सेना का सेनापति था यह महसूस करने लगा कि वह मैदान में अकेला रह गया है। सैनिक चुप थे। उनके भीगे कपड़ों से भाप उठ रही थी। उनके घोड़ों के मुँह फेन उगल रहे थे और उनकी बाँहें दर्द कर रही थीं। धीरे धीरे थके-मांदे वे अपने पड़ाव पर पहुँचे और वहां पहली बार उसने भेष बदले हुए उन आदमियों को पहचाना जो सुल्तान के साथ गये थे। मगर सुल्तान कहीं दिखलायी नहीं पड़ा।

काफ़ी रात बीतने पर जब सब खाना खा चुके और थके हुए घोड़ों की देखभाल होने लगी तो मिहालदे और गोपू सुल्तान के पास बैठकर दूसरे दिन की योजना बनाने लगे। सुल्तान को अब आराम था। उसने ऊपर देखते हुए कहा 'हमारी एक-तिहाई सेना तो मारी जा चुकी है।' फिर उसने गोपू को घूरकर देखा। गोपू चुप था।

उसके दाहिने हाथ में एक म्यान में कटार थी और बातों के उतार चढ़ाव पर वह बार-बार पलंग की पाटी पर उसे मारता। कभी-कभी वह एक कटे हुए पेड़ की तरह स्थिर हो जाता—ऐसे पेड़ की तरह, जो झुकेगा नहीं, टूट भले ही जाय।

निहालदे ने मौन तोड़ते हुए कहा 'मेरा एक सुझाव है। जहाँ तक मुझे पता है कच्छ में लड़ने के लिए अब कोई सैनिक नहीं है। शत्रु का ध्यान बँटाने के लिए गोघू पाँच हजार सैनिक लेकर वहाँ जाय और अगर जीत सके तो क़िला जीत ले यहाँ का युद्ध मैं सँभाल लूँगी।'

सुल्तान थका हुआ था। कभी-कभी कराह उठता था। लेकिन उसे लगा, जैसे एकाएक स्थिति उसके हाथ में आ गयी हो। उसने मुस्कराकर कहा 'हाँ यह तो गजब की सूझ है। उससे ज्यादा तो मैं भी नहीं कर सकता।

दूसरे दिन का युद्ध स्मरणीय था। उसके बाद से सुल्तान को वह शीतल भोर और उस छरहरी महिला की प्रेरक मूर्ति सदा याद रही, जो दाँतों से रास दबाये कच्छी सैनिकों से धरती को पाट रही थी। दोनों हाथों में दो तलवारें लिए चक्र की तरह वह शत्रुओं के शीश काटती जाती। सुल्तान के घुड़सवार आगे बढ़ते गये क्योंकि शत्रुदल बिल्कुल टूट चुका था। वे भेड़-बकरी के झुंड की तरह जगतसिंह के सैनिकों को काटते, दबोचते और खदेड़ते चले गये। सुल्तान की घुड़सवार सेना के पीछे पैदल सेना वृहदाकार दरया की तरह हथियार झन-झनाती वज्र की दीवार की भाँति डटी हुई थी। उस ठोस दीवार में भी इधर-उधर झूमकर शत्रुदल को छिन्न भिन्न कर

दिया। घुड़सवारों के विपरीत उनके पास छोटी-छोटी तलवारें थीं जो ज्यादा कारगर थीं क्योंकि लम्बे खड्गों से लड़ने की जगह न थी। चीख-पुकार से वातावरण गूँज रहा था तलवारों से तलवारों के टकराने की आवाजें हो रही थीं और धूल के बवण्डर उठकर आकाश पर छा गये थे। दोपहर तक शत्रुदल के पैर उखड़ गये।

जगतसिंह ने नगर की पराजय की खबर सुनी और हथियार डाल दिये। उसने अपने काका बनीसिंह के क्षत्रों को भी छीन लिया था, इसलिए कच्छ दो व्यक्तियों के बीच में बँटा हुआ था। अब चूँकि जगतसिंह की पराजय हो चुकी थी इसलिए सुल्तान को उससे कोई शत्रुता नहीं रह गयी। मगर वह बनीसिंह के साथ भी न्याय करना चाहता था। जब उन्होंने सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली तो वह किचलकोट लौट आया।

सुल्तान के राज्य में सभी प्रजा सुखी थी। उसके राज्य के प्रमुख आधार किसान थे। वे खुशहाल थे। किसानों की दरिद्रता दूर करने के लिए उसने कई व्यावहारिक नियम बनाये थे। उसने अपने राज्य के विभिन्न क्षत्रों को भी मजबूत बनाने का प्रयत्न किया और उन लोगों में साहस पैदा किया जो कुछ कारणों से इन गुणों को अपने में विकसित कर व्यापार नहीं बढ़ा पाये थे। अब वह बिना किसी भय के अपने राज्य से अनुपस्थित भी रह सकता था।

और फिर, एक दिन आसपास की रतीली घाटी में भाले चमचमाने लगे। हरएक गली की दीवारों और पहाड़ियों से

शस्त्रों से सजी सेनाएँ आती हुई देखी गयीं। बालू के टीलों पर सूर्य अचानक एक गुज़रते हुए भाले की नोंक पर या सुसज्जित घुड़सवार के शिरस्त्राण पर चमक उठा। पहाड़ियों की तलहटी में पत्थरों पर घोड़ों की टापों की आवाज़ों और हिन हिनाहट से सारी घाटी गूँज उठी।

बड़े-बड़े सामन्त, क़िलों के सेनापति और राजकुमार, बड़ी शान से अपने-अपने अंगरक्षकों सहित साफ़ा बाँधे जिनके छोर हवा में काँप रहे थे दाढ़ी साफ़ कराये या छोटी दाढ़ियों में—सभी रंग-ढंग के राजपूत किचलकोट की ओर क़दम बढ़ाते हुए चलने लगे।

मुल्तान ने अपने बावनों क़िलेदारों को सन्देश भिजवा दिया था कि हर एक सेनापति अपने १५ सौ सशस्त्र सैनिकों के साथ उससे आ मिले। किचलकोट से उसने अपने चुने हुए सैनिक लिए। उनमें से हरएक की उम्र २२ और २५ के बीच में थी। प्रत्येक के पास एक सिखाया-सधाया हुआ घोड़ा था, और हर व्यक्ति शस्त्रों से पूरी तरह लैस था।

मुल्तान दक्षिणी बुर्ज पर था। सूरज ने पत्थरों को गरमाना शुरू कर दिया था। उसने देखा कि छह घुड़सवार उसके क़िले की ओर बढ़ते चले आ रहे हैं। उनकी पगड़ियाँ किचलकोट के सैनिकों से भिन्न थीं। उनके अगुवा को देखकर मुल्तान को लगा कि उसे कहीं देखा है। वह जान गया कि वे मारू के भेजे सन्देश-वाहक होने चाहिएँ। वह नीचे उतरा। यह मारू की बेटी के ब्याह का निमन्त्रण था। दूसरी बातों के अलावा पत्र में लिखा था—

'भाई सुल्तान, अपने साथ ५२ गढ़ियों के सेनापतियों और निडर योद्धाओं को लाना मत भूलो। भाई, उन्हें ऐसे घोड़ों पर चढ़ाकर लाना, जैसे मेरे पति राजा ढोलकुँवर ने देखे भी न हों। मादा की राता की तरह काल रंग के हाथी लाना और मेरी भाभी यानी अपनी रानी को १६२ दासियों के साथ मोतियों से सजी पालकी में बिठाकर लाना। भाई, मेरे राज में प्रवेश करते ही हर राहगीर पर हीरे-मोती, पन्ने और मूँगे बरसाना शुरू कर देना जिससे आने वाली सात पीढ़ियाँ इस शुभ अवसर को सदा याद करती रहें।'

सुल्तान के राज के कोने-कोने से लोग आकर शामिल होते गये। उसने अपने दोनों सहायकों जानी और गोमू को भी बुलाया।

इस तरह एक दिन वह अपने दुर्ग के सोहद्वार से बाहर निकला। फिर वह अपने ऊँचे भूरे घोड़े पर बैठा। अपनी विशाल काया में वह दिव्य लग रहा था। खिड़कियों छतों और क़िलों की ऊँची दीवारों से झुण्ड-के-झुण्ड लोगों ने हजारों के आगे बड़ी शान से उसे घोड़े पर सवार देखा। अपने सर्वोत्तम मन्त्रियों को किपलकोट में छोड़कर वह चल पड़ा।

पहले उन्होंने द्वारकोट का रास्ता पकड़ा। वहाँ फूलकुँवर को भी सुल्तान ने साथ आने के लिए कहा। आगे-आगे घोड़ों पर सवार एक अग्रसेना चल रही थी ताकि किसी भी आने वाले खतरे को वह भाँप सके। हमसायरों से आगाह करने के लिए चट्टानों और टीलों पर सन्तरी खड़े थे कि देखकर बतायें, रास्ता सुरक्षित है न। पीछे के संकेत से वे देने योग्य खबर

कर देते। एक टुकड़ी एक पड़ाव आगे चल रही थी कि वह रात में पड़ाव डालने के लिए उचित स्थान खोजकर वसा ही प्रबन्ध कर सके। अग्रसेना के पीछे एक सौ तोपें थीं, और उनके पीछे हाथी थे। यह दल-बल धीरे-धीरे बढ़ने लगा। सुल्तान जब-तब अपने सेनापतियों से बातचीत करने के लिए स्वयं दल-रल के लिए निकल पड़ता। कारवां की विशालता और उसकी समृद्धि-सम्पत्ति ने उन सब गांवों का ध्यान खींच लिया जिनके प्रदेश में से वह गुजरा। उन सबने अनुमान लगाया कि कारवां की कुल सम्पत्ति १५० करोड़ रुपयों के बराबर है। मगर वे साथ में चलने वाली सेना से भयभीत थे।

शाम को दल अपने पड़ाव की जगह पर पहुँच गया। रात बिताने के लिए तम्बू गाड़ दिये गये। आकाश का नारंगी और नाबुई रंग सैकड़ों चूल्हों से निकलते हुए धुएँ से पट गया। साथ में मनोरंजन के लिए नाचने-गाने वाले भी थे।

बिना किसी दुर्घटना के वे इदरकोट पहुँच गये। वहाँ बिताये दिनों को याद कर निहालदे कांप गया। इदरकोट के बाहर आकर फूलकुँवर के साथ राजा कामध्वज राव ने उनका स्वागत किया। सुल्तान अपने दलबल सहित तीन दिन वहाँ ठहरा। जब वे चलने लगे तो फूलकुँवर भी अपने पाँच सौ मनिकों के साथ जा मिला।

:: ३६ ::

इयरकोट के बाद साबरमती नदी पार करने तक वे चलते रहे।

यहाँ से क्षेत्र बदल गया। ज़मीन कठोर थी मगर हरी भरी ज़्यादा। धूप से चमकती वह सुन्दर सुबह थी। मन्थर गति से साबरमती बही जा रही थी। नदी का पानी स्वच्छ और मनोहारी था।

नदी के किनारे चलते हुए सुल्तान ने देखा कि धारा में कोई चमकदार चीज़ बही जा रही है।

'वह क्या है ?' उसने पूछा।

उसके ठीक पीछे खड़ा जानी बोला, 'बोतल मालूम पड़ती है।'

'देखना चाहिए।' सुल्तान ने कहा।

जानी ने बोतल निकाली। उसके अन्दर एक सन्देश रखा हुआ था। राजा सुल्तान ने जल्दी से बोतल खोलकर उसे पढ़ा, 'महकदे मनुष्यता के नाम पर यह प्रार्थना करती है कि अगर उसकी रक्षा न की गयी तो उसे बलात् मुसलमान बनाकर आदिलशाह से उसकी शादी कर दी जायगी।

सुल्तान ने एक लम्बी साँस खींची।

आबू के आगे साबरमती में एक छोटा-सा टापू था। इस टापू पर नवाब आदिलखाँ ने एक मज़बूत क़िला बना रखा था, जो मोटी दीवारों से घिरा हुआ था और तोपों की लम्बी क़तार जिसकी रक्षा करती थी। आदिलशाह की सेना दिन रात चौकस रहती थी। अगर कोई नदी पार करने की कोशिश करता

सो उसे तोप से उड़ा दिया जाता। चारों ओर के प्रदेश पर उसका दबदबा था।

सुल्तान ने कहा, 'जहाँ तक मैं जानता हूँ यह एक सबसे मजबूत क़िलों में से है।" क्षणभर चुप रहकर वह बोला, "नहीं, अब हम ज्यादा देर यहाँ नहीं ठहर सकते। उस शैतान कुत्ते को मैं फिर कभी सजा दूँगा।

कारवाँ चलने लगा। वह थोड़ी ही दूर गया होगा कि पाँच हजार सैनिकों की एक सेना ने रास्ता रोक लिया। सुल्तान को ताज्जुब हुआ, 'ये लोग क्यों खून बहाकर खुदकुशी करना चाहते हैं। उसकी समझ में नहीं आया।

अपने कुछ तीरन्दाजों और बन्दूक़चियों के साथ वह अपना घोड़ा दौड़ाकर आगे आया। एक लम्बा आदमी सामने वाली सेना के आगे खड़ा था। सुल्तान चिल्लाया, 'तुम लोग क्यों व्यर्थ मरना चाहते हो? मैंने तुम्हारा कोई अहित नहीं किया है। मेरा रास्ता मत रोको।"

योद्धा ने लगाम ढीली छोड़ दी और उसका घोड़ा सुल्तान के नजदीक आ खड़ा हुआ। 'ईश्वर की यही मरजी है। मैं राजा ढोल हूँ। आदिलशाह मुझ पर आक्रमण करके मेरी बेटी को हर ले गया। या तो मेरी मदद करो, जिससे मैं अपनी बेटी को छुड़ा सकूँ या हम लड़ते हुए खत्म हो जायेंगे।"

'पर यह कैसे सम्भव है? आपके कहने के अनुसार तो यह एक अजेय दुर्ग है। सुल्तान ने क़िले की तरफ़ देखा।

ढोल बोला, "सबमें कहीं-न-कहीं कुछ कमजोरी तो होती ही है। तुमने तो इससे भी गिरी हालतों में मैदान जीता है।

सुल्तान सोचने लगा। पहले उसने क़िले की रखवाली करने वालों की चौकसी को परखने का तय किया।

उसने बाँस के सात भारे तयार कराये उन पर बत्तियाँ रखीं, और उन्हें नदी में तरा दिया। ज्यों ही वे भारे क़िले के सामने आये तोपों ने उनको भुरकुस कर दिया।

जानी आगे आकर बोला, "जो कुछ हथियारों से नहीं किया जा सकता वह कभी-कभी तिकड़म से हो सकता है।"

"उसमें तुम्हीं होशियार हो और तुम सबसे दूर की देख सकते हो। लेकिन तुम्हारी होशियारी से हमारा रास्ता खुलने तक पहले हमें छिपकर ही काम करना पड़ेगा।" यह कहकर सुल्तान जानी को अपनी योजना पूरी करने के लिए छोड़कर चला गया।

जानी ने पहला काम तो यह किया कि एक लम्बे बाँस में २५ मशालें बाँधीं। फिर दीवार पर चढ़ने के लिए कुछ लोहे की नुकीली खूँटियाँ और हथौड़ा लेकर वह चला। अब वह नदी म गोता लगाकर पानी के नीचे-नीचे बाँस को थामे हुए क़िले की ओर बढ़ा।

क़िले के सन्तरियों ने जलती हुई मशालें देखीं तो उन्होंने समझा कि कोई टुकड़ी नदी पार करना चाहती है। यह सोचते ही वे तोपें गरजने लगीं। उनकी प्रतिध्वनि नदी के किनारों से टकराकर उठने लगी। २५ गोले चलाकर २५ मशालों को बुझाया गया और जब तक यह हुआ, तब तक जानी वहाँ पर पहुँच चुका था, जहाँ वह पहुँचना चाहता था।

जानी हफ्ते भर ग़ायब रहा। सुल्तान को बड़ी घबराहट

हुई और वह चिन्तित भी हुआ। उसने गोधू से कहा, 'मैं सोचता हूँ कि अगर महुकले के लिए नहीं, तो जानी की खातिर हमें लड़ना अवश्य ही होगा।"

रात भर वह आबिसखाँ को हराने की तरकीबें सोचता हुआ सो नहीं पाया। जब-तब वह अपने बिस्तर से उठकर कमरे में बेचैनी से चहल-कदमी करता। असल सुबह थी, और अभी अँधेरा ही था कि उसने सुना कि एक नाव किनारे की ओर आ रही है। वह दौड़कर बाहर आया। जानी उसे पहचाने इसके पहले ही सुल्तान ने जानी को पहचान लिया। वह खुशी से चिल्ला पड़ा। जानी किनारे पर कूदा, और सुल्तान ने उसे बाँहों में भर लिया।

"मनुष्य की हर कमजोरी के बारे में मुझे पता है मगर तुमने यह कैसे किया?" उसने पूछा।

"मैं सिर्फ इसकी थोड़ी-सी जानकारी रखता हूँ और वह थोड़ी-सी जानकारी है भगवान् की इच्छा।" और, अपने रवाना होने से लेकर अब तक का जानी ने पूरा किस्सा कह सुनाया।

:: ३७ ::

जब तक कि एक-एक करके तोपों ने मशालों को बुझाया, जानी किले की दीवारों तक पहुँच गया। आधी रात का गजर बज रहा था, और हर घंटे की ध्वनि के साथ वह दीवार में एक खूँटी ठोंक देता। इस तरह उसने एक प्रकार की सीढ़ी

बना थी जिसके सहारे वह क़िले की दीवार पार कर उतर गया।

ठोस पत्थर के बने उस विशाल प्राचीर के अन्दर एक पूरा शहर था। खिड़कियाँ बाहर की ओर नहीं खुलती थीं। मकान सारे भीतर की ओर खुलते थे। खूबसूरत रास्ते थे और बीच-बीच में शान्त, शीतल सुगन्धपूरित पुष्पों से भरे अनूठे आँगन।

दौड़ता-कूदता वह एक बाग़ में पहुँच गया, जिसे उसने समझा कि शायद नवाब का है। वहाँ एक पेड़ के नीचे वह सो गया।

बाग़ की रखवाली एक माली और उसकी स्त्री करती थी। सुबह जब मालिन ने देखा कि पेड़ के नीचे कोई सो रहा है, तो वह डर गयी। अगर नवाब को पता लग गया तो वह सिर्फ़ न उस नौजवान को मार डालेगा बल्कि उसे यह भी शक होगा कि माली-मालिन भी उस अजनबी से मिले हुए हैं।

इसलिए कोई देखे, इसके पहले ही मालिन ने जानी को जगाया। जानी ऐसे मौक़ा पर बन्धान बाँधने में बड़ा तेज था। वह जँभाई लेता हुआ बोला 'अपने इस उजड्ड भतीजे को माफ़ करो, मौसी! अम्मा ने मरते समय तुम्हारे बारे में बताया था। उन्होंने तुम्हें खोजने के लिए मुझसे वचन ले लिया था।"

मालिन ने अपनी बहन को क़रीब २० साल से नहीं देखा था। इसलिए उसे सहज ही विश्वास हो गया कि यह नौजवान उसकी बहन का ही लड़का है। उसकी आँखों में स्नेह के आँसू

भर आये। जानी को दिलासा हुई। उसने मौसी का हाथ पकड़ लिया। "मेरे प्यारे बेटे" कहते-कहते मालिन का गला भर आया।

जब वह मालिन के साथ उसकी झोंपड़ी की तरफ़ चला, तो चारों ओर के सुन्दर वृक्षों को देखकर चकित हो गया। जहाँ तक नज़र जाती, नदी के किनारे की दीवार के साथ छायादार वृक्षों की कोमल पत्तियाँ और फूल ही नज़र आते थे। पत्ती-पत्ती पर सूर्य की किरणें दमक रही थीं, और चारों ओर चमकती, झलकती मुस्कराती हरियाली फली थी। दूसरी तरफ़ कुछ और झोंपड़ियाँ थीं।

मालिन ने जानी से कहा, "मैं तो बाहर जाने ही वाली थी। घंटे भर म लौट आऊँगी।'

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ?"

'नहीं बिल्कुल नहीं। मुझे राजकुमारी महकदे के लिए फूलों का गजरा गूँथकर ले जाना है।'

"मैं हार बनाने म माहिर हूँ। तुम्हार लिए म ही यह काम कर दूँ, मौसी!"

मालिन को एक सोने का सिक्का देकर जानी बोला, "रेशम का धागा लाओ। प्यार की गाँठा वाला गजरा राज कुमारी को ज़रूर सबसे ज़्यादा पसन्द आयेगा।"

हार के भीतर उसन एक ख़त गूँथ दिया। मालिन न हार तयार देखकर कहा, तू तो बड़ा होशियार है रे" और, एक थाल म हार भरकर वह चली। उसकी आँखों म सन्तोष की चमक थी।

राजकुमारी ने हार की बड़ी तारीफ़ की, पर उसकी तेज आँखों से कागज़ का वह कोना न छिप सका। कागज़ निकाल कर उसने पढ़ा, "राजकुमारी, राजा मुल्तान ने मुझे तुम्हें छुड़ाने के लिए भेजा है।—जानी।

"मौसी, आज का हार किसने बनाया है?' महकदे ने पूछा।

मालिन को लगा कि उसे ताप आ जायगा। ज़रा देखो तो लौंडे की हिम्मत कि राजकुमारी को परेम-पत्र भेज दिया, उसने सोचा। फिर हकलाती-सी बोली 'मेरे भानजे की घर वाली ने बनाया है।'

'क्या उसे बुला सकती हो? मैं उससे मिलना चाहती हूँ।'

बुढ़िया न बहाना बनाया 'अभी वह जवान है और बीच बाजार स भला कैसे आयेगी?

महल से पालकी मे लो।' राजकुमारी ने दासियों की ओर इशारा करते हुए कहा।

मालिन घर लौटी तो उसका चेहरा देख जानी ने पूछा, 'क्या हुआ?'

अब हम भागों की मौत आ गयी है, बुढ़िया न काँपते हुए कहा। और उसका गुस्सा उभरने लगा। रो रोकर उसने जानी को चुनी हुई गालियाँ सुनायीं। फिर थोड़ा सयत होकर बोली, "घर में अपने भानजे की औरत कहाँ से लाऊँ? पालकी तो अभी आने वाली है।

जानी हँसा, "अच्छा बस इतनी-सी बात है?

बुढ़िया ने जानी के छरहरे बदन की ओर देखा। फिर वह तुरन्त निकली और कुछ कपड़े लेकर लौट आयी।

उसने मज़ाक़ करते हुए कहा, "अरे ओ, तू औरतों के कपड़े पसन्द करता है? इसे सूँघ तो ज़रा। अब दूसरा मौक़ा नहीं मिलेगा। यह नवाब की रखैल के हैं। धोबी से उधार माँगकर लायी हूँ।

जब वह तैयार हो चुका तो बुढ़िया बोली, 'हाय हाय! तू तो बड़ा खूबसूरत लगता है, ज़रा पीछे घूम तो, देखूँ।'

जानी पीछे घूमा, तो बुढ़िया ने और तारीफ़ की। बुढ़िया यो हँसी अपनी दबा रही थी, फिर भी हँसी आती जा रही थी। भरोसा दिलाकर उसे पालकी में विदा किया।

"मालिन के भतीजे की बहू के लिए रास्ता दो,' एक सुन्दर युवती को आते देखकर सन्तरी चिल्लाये।

आखिरी ड्योढ़ी पर एक अन्धा हिजड़ा बैठा था। जब वह उसके पास पहुँची, तो हिजड़ा बोला "हाय, शरमीली रानी का मुँह देखने दो।" और हाथ मटकाने लगा।

तब तक जानी ने एक ज़ोरदार रसीद किया।

हिजड़ा चिल्लाया 'बाप रे बाप, यह तो लौंडिया के हाथ नहीं मालूम पड़ते।' जानी ने अपने को सँभाल लिया।

राजकुमारी अकेली थी। पालकी भेजने के लिए उसी ने कहा था, पर उसे डर था कि आगन्तुक कहीं पकड़ न लिया जाय। जानी को देखकर उसने चैन की साँस ली।

'तुम मुझे बचाना चाहते हो? क्या तुम समझते हो कि ऐसा सम्भव है?'

"यह कोई आसान काम नहीं है मगर हिम्मत न हारिये। लेकिन सबसे पहले मालिन के भानजे की बहू पर सन्देह न हो, यह तजवीज करनी चाहिए।'

"पर तुम्हें तो सब समझते हैं कि तुम औरत हो।"

'हाँ, पर वह लड़की जो राजकुमारी से मिलने आयी है। सभी पूछताछ करेंगे।'

उसने एक उपाय सोचा। नवाब को सूचना देने के लिए उसने एक सन्देश लिखा कि सुल्तान का दूत यहाँ आ गया है। उसे एक बाण पर चढ़ाकर नवाब के महल में फेंक दिया। "हिम्मत रखिये" उसने महकदे से कहा, और माली की झोंपड़ी में लौट आया।

३८ ::

आदिलशाह आपे से बाहर हो गया। किले की जिस दीवार के पास जानी न खूँटियाँ गाड़ी थीं, वहाँ के पहरेदारों को बाँधकर कोड़ों से बुरी तरह पीटा गया। सुल्तान के गुप्त चर को पकड़ने के लिए हर गली-सड़क पर सैनिक निकल पड़े। जबकि सैनिक चारों ओर ढूँढ़ रहे थे जानी माली की झोंपड़ी में छिपा था।

सैनिकों ने जब सारा किला छान मारा तो किलदार नवाब के सामने हाजिर होकर बोला, 'जो आदमी आया है वह बहुत ही चालाक मालूम पड़ता है। अगर हुक्म दें तो मैं

डिसाई कर दूँ। जब वह जरा असावधान हो सामने आ जायगा तब अपने ही जाल में फस जायगा।

तय यह हुआ कि उस रात क़िलेदार खुद अकेले क़िले का पहरा देगा। आमी ने माली से यह खबर पा ली क्योंकि उसे रोज़ महल में आना होता था।

घने अँधेरे में एक छोटी-सी लालटेन की रोशनी में एक गजब की खूबसूरत लड़की को क़िलेदार ने बाज़ार से आते देखा।

"जरा यहाँ आओ," क़िलेदार ने रोआब से कहा।

उसने घबराकर पीछे देखा।

"डरो मत, मैं तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

सड़क के पत्थरों की ओर देखती हुई वह उसके पास आयी।

"अय सुन्दरी! क्या तुम मेरे साथ रात बिताने आयी हो? मैं बहुत खुश हूँ।"

लड़की ने अपने चेहरे पर उँगलियाँ फेरीं, मानो पसीना पोंछ रही हो और उत्तेजित स्वर में बोली, "मैं कहीं मिलने गयी थी, मगर बातों-ही-बातों में रात काफ़ी हो गयी। मेरे अब्बाजान नवाब के कर्मचारी काफ़ी परेशान होंगे।"

"मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें वहाँ पहुँचा दूँगा।"

वे चरन से आगे बढ़े। लड़की ने पूछा, "यह क्या जड़ा हुआ है? ऐसा तो मैंने कभी नहीं देखा।"

"क्यों? यह तो चारों के लिए होता है।"

"और इस बस खोलते हैं?"

क़िलेदार ने उसे खोला और बताया कि क़ैदी के पर कहाँ बाँध जाते हैं। लड़की ने आज़माने के लिए अपना एक पाँव आगे बढ़ाया।

"न, न, यह तुम जैसी परियों के लिए थोड़े ही है। लो मैं दिखाता हूँ।" उसने बरन में अपने पर रख दिये। जानी देर करने वाला कहाँ, उसने झट से ताला लगा दिया।

'अच्छा क़िलेदार साहब मैं वही हूँ आप जिसकी तलाश में हैं? आपकी रात आराम से बीते। नमस्ते!'

क़िलेदार का ख़ून सूख गया। नवाब क्या कहेंगे। उसे बेवकूफ़ बना दिया गया। क़िलेदार ख़ूबसूरत लड़कियाँ देखकर फिसल पड़ता था। अब वह अपनी बीवी को क्या मुँह दिखायेगा!

:: १९ ::

आदिलख़ाँ महक़दे के कमरे में पहुँचा। वह रोगी पशु की तरह हताश हो सिकुड़ी पड़ी थी। उसकी चेहरे पर की रेखाएँ ही उसके घोर कष्ट को प्रकट कर रही थीं। अचानक वह कोहनियों के बल उठी और बैठ गयी। आदिलख़ाँ ने सोचा कि उसके अन्दर आने की आहट महक़दे ज़रूर पा गयी होगी।

वह रो नहीं रही थी। इतनी अपार पीड़ा थी उसे कि आँसू उसके सूख गये थे। उसका सलोना कोमल मुखड़ा कुम्हला गया था। आँखों के नीचे सिलवटें पड़ रही थीं फिर भी उसमें अनुपम पवित्र सौन्दर्य था।

"बिना मेरे हुक्म के कोई भी किले के बाहर नहीं जा सकता। तुम्हारा दोस्त कौन है? क्या तुम चाहती हो कि वह मार डाला जाय?'

"मैं जानती हूँ कि तुम सर्वशक्तिमान हो मगर मुझे जाने दो नहीं तो तुम्हें मालूम ही है कि उसका अन्त है मौत!'

'तुम्हें क्या हो गया है? किसी की हिम्मत नहीं हुई कि मेरी हुक्मउदूली करे। मैं तुम्हें खुश करने की कितनी कोशिशें कर रहा हूँ। जरा तो इधर खयाल करो। बोलते-बोलते उसने महकदे को अपने बाजुओं में भरने की कोशिश की।

महकदे ने घूरकर देखा। महकदे की नजर से उसे धक्का सा लगा और पलभर के लिए वह डरकर पीछे हट गया।

'मैं तुम्हारे लिए क्या-क्या नहीं कर रहा हूँ। फिर भी मुझे तुम्हें छूने तक का हक नहीं है!"

वह चिल्लायी, नहीं कभी नहीं।

'मगर मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मैंने हमेशा तुम्हें चाहा है। तुम्हें मैं अपनी मलका बनाऊँगा।' उसने फिर महकदे के कन्धे पर हाथ रखना चाहा।

चौंककर वह उससे दूर हट गयी और बगल वाले कमरे में जाकर उसकी साँकल चढ़ा ली।

अच्छा, मेरी जान, मैं पहले इस सूफिया लड़की को पकड़ लूँ जो सबको बेवकूफ बना रही है।" इतना कहकर आदिल महल के बाहर तेजी से निकल गया।

जानो जानता था कि उस माली की झोंपड़ी से बचना पड़ेगा। लड़की का स्वाँग उसने जरा ज्यादा अदा कर दिया,

और बहुत मुमकिन है कि आज नहीं तो कल उस लड़की की तलाश ज़रूर होगी।

मासी महल से लौटकर आया, तो उसने बताया कि सेना हर जगह तलाश कर रही है। सेनापति को उस लड़की की तलाश करने का जिम्मा दिया गया है जो ग़ज़ब की खूबसूरत थी।

'क्या सेनापति बहुत समझदार आदमी है?'

"हाँ, है तो" मोसी ने कहा "मगर इस समय वह दुखी है। उसकी बेटी, जो पिछले १८ साल से अपने घर में दुखी थी अब पति से झगड़ा करके लौट आयी है।'

'पति क्या कहता है?'

'सुना है कि वह उसे वापस बुलाने को तैयार है। सेनापति ने उसे यहाँ बुलाने के लिए कुछ आदमी भेजे हैं और वह किसी भी दिन आ सकता है।

सुनकर जामी सोचने लगा। उसने एक ज्योतिषी का भेष बनाया और सेनापति के यहाँ पहुँचा। सेनापति तो था नहीं हाँ उसकी पत्नी और बेटी घर में थी।

बीबी ने कहा "मैं तो ज्योतिष विद्या की बड़ी इज्जत करती हूँ हालाँकि मेरे पति को इसमें तनिक भी विश्वास नहीं।"

'मुझे अपना हाथ दिखाइये और मेरी भविष्यवाणियों की जाँच का काम अपने पति पर छोड़ दें।'

क्षण भर वह बिना बात ज्योतिषी की ओर टक लगाये देखती रही।

उसने लड़की का हाथ पकड़ा और उसकी हथेली जानी के हाथ में पकड़ा दी, 'आप तो कोई पहुँचे हुए मालूम पड़ते हैं, जरा मेरी बेटी का हाथ तो देखिये।'

'इस समय आप दुखी हैं पर घबराइये नहीं, आगे सुख ही-सुख है।'

लड़की ने हँसकर पूछा "मुझे क्या कष्ट रहा है ?"

'यह कहना कठिन है। क्या पति के साथ कुछ झगड़ा हो गया है ?'

"पता नहीं। कम-से-कम मैं जैसा चाहती थी वैसा तो नहीं चल रहा है।'

"हाँ, मुझ पता है। यह दुख की रेखा ही गड़बड़ कर रही है। ज्योतिषी ने कहा और एक रेखा पर हाथ रख दिया।

क्या गड़बड़ी है ?

लड़की घर से बाहर ले जाने का इससे अच्छा मौक़ा जानी नहीं पा सकता था। वह जानता था कि माली के घर की तलाशी ली जायगी। अगर एक दिन उसे सेनापति के घर में रहने को मिल जाय तो वह बच जायेगा और कामयाब भी होगा।

'आपका सारा रवैया बड़ा दुखदायी और निराशापूर्ण हो गया है। आपकी बोलचाल, आपकी आवाज, आपके कपड़े पहनने का ढंग। इस सन्ध्या को खूब सज-धजकर हाथ में माला लिये फाटक के पास अपने पति का इन्तजार करिये।"

माँ ने लड़की से पूछा, 'क्या तुमने कभी यह भी सोचा है कि तेरे पति ने दुखी होकर कहीं आत्महत्या न कर ली हो।'

"दुःख, कैसा दुःख ?" लड़की ने घबराकर पूछा।

"जब तुम उसे छोड़कर चली आयीं तो उसे दुःख नहीं हुआ होगा ? ज्योतिषी बड़ा होशियार है। माला लेकर तुम चलकर उसका स्वागत करना।'

जानी उसकी आँखों में जिज्ञासा का भाव देखकर जरा घबराया कि वह लड़की गड़बड़ में है और पूछने को शब्द नहीं खोज पा रही है। पर वह क्षण बीत गया। जानी ने चैन की साँस ली।

माँ ने कहा "धन्यवाद। ज्योतिषीजी, मेरी बेटी जरूर वैसा ही करेगी।' फिर एक सोने की मोहर उसने ज्योतिषी को दे विदा किया।

४०

शाम के क़रीब जानी झोंपड़ी में लौटा। रात होने तक उसे बाट जोहनी थी। सेनापति को अगर अपने दामाद की याद हो, और वह जानी को पहचान जाय तब ? लेकिन १५ साल में तो बहुत कुछ बदल जाता है। यह जोखिम तो जानी को लेनी ही पड़गी।

सेनापति की लड़की सचमुच तैयार होने लगी। उसने अपने को परम सुन्दर युवती की तरह शृंगारों से सजा लिया। मुलायम हरे रंग के कपड़े के छोटे घूँघट को एक पतली सुनहरी लड़ी ने अपनी जगह टिका रखा था, जिसके दो सिरे उसकी

छातियों तक झूल रहे थे और उनके छोर पर हीरे की पातें थीं। हाथ में माला लिये वह घर के बाहर निकल आयी। अभी वह कुछ ही दूर गयी होगी कि एक सैनिक ने साथी से पूछा, "यहाँ के लिए यह नयी मालूम पड़ती है।"

हे भगवान्, शायद वही हो। दूसरा बोला।

"ज़रा सुनिये। पहले ने कहा। दोनों उसकी तरफ़ बढ़े।

उसने बेपरवाही से सिर हिलाया, और वहाँ से चल दी। अब दोनों ने जल्दी क़दम बढ़ाकर उसका रास्ता रोक लिया।

"क्या चाहते हो? क्या मेरे पिता को नहीं जानते?" उसके चेहरे पर आश्चर्य का भाव था और माथे पर सिलवटें पड़ गयी थीं।

"हम तुम्हारे साथ थाने तक चलेंगे, और बस नवाब तुम्हें बता देंगे कि हम क्या चाहते हैं?"

वह दूर हटकर उन्हें तेज आँखों से ताकने लगी।

"हम कुछ पूछना चाहते हैं," एक बोला "आप अँधेरा पड़ने के बाद क्यों बाहर निकली हैं?"

'दूर हट जाओ, नहीं तो पछताओगे," कड़ककर वह बोली।

"चलना चाहती है तो सीधे चली चल, नहीं तो हम तुझे पकड़कर ले चलेंगे।'

"तुम लोग भूल कर रहे हो। क्या तुम समझते नहीं, बेवकूफ़ो!'

'सिपहसालार से खुद कहना कि तुम उनकी बेटी हो।" उसका कहना-सुनना किसी काम का साबित नहीं हुआ।

जब उसे थाने में बन्द कर दिया गया तब यह चकित रह गयी।

जानी झोंपड़ी से बाहर आया। उसने ऐसा भेष बनाया था मानो बहुत दूर से थककर आ रहा हो। रोशनी मद्धिम थी, और वह बच-बचकर चल रहा था। एक छाया उसकी ओर बढ़ी। उसे साफ़-साफ़ देखना तो मुश्किल था, मगर दूरी का अन्दाज उसने लगा लिया था। छाया ज्यों ही उसके पास आयी, उसने बायें हाथ से आक्रमण करने का बहाना बनाकर दायें पैर से उसके पेट पर कसकर लात जमाई। जानी का अन्दाज ठीक था ठोकर हाड़-मांस की ठोस छाया पर लगी। चोट खाकर वह आदमी गिर पड़ा। फिर जानी ने टेटू पर दोनों हाथ बांधकर ऐसा वार किया कि वह वहीं ढेर हो गया।

जानी ने मरे हुए सैनिक की वर्दी ले ली और ऊँचे सँकरे रास्ते से होता हुआ सेनापति के घर की ओर चला।

रात जरा चढ़ गयी थी। सेनापति अपनी ड्यूटी पर निकल गया था पर उसकी बीवी घर में बैठी अपनी बेटी और दामाद का इन्तज़ार कर रही थी। दरवाज़े पर हल्की-सी थप थपाहट सुनते ही वह खुश हो लपककर सांकल खोलने गयी। सामने खड़े नौजवान को देखते ही खिल उठी।

सन्ताप की सांस लेते हुए उसने कहा आ गये। आओ, आओ।

वह घर में घुसा तो सास ने देखा कि वह अकेला था। 'लेकिन मीरा तो तुमसे मिलने के लिए फाटक तक गयी थी। अच्छा, कोई बात नहीं, शायद वह तुम्हें न देख सकी। तुम्हें

बुरा नहीं मानना चाहिए। उसका मिजाज कुछ गर्म है।
—कहती थी तुम बड़े कड़े और गुनकमिजाज हो। वह खाम
खाह तुमसे झगड़ पड़ी। देखो मैंने तुम्हारी तरफ़दारी की।
मैंने कहा, कि वह तुम्हें बहुत चाहता है इसीलिए हर बारे में
खास दिलचस्पी लेता है। वह कहने लगी कि तुमने उससे यह
भी नहीं कहा कि घर छोड़कर मत जाओ। पर यह भी कोई
मानने की बात है? मैं तो खूब जानती हूँ कि तुम उसे बहुत
चाहते हो।"

जो-जो वह कहती गयी जानी उस पर सिर हिलाता
गया।

"तुम कितने अच्छे, समझदार हो मेरे बेटे! मैं उसे
बड़ी डाँट पिलाऊँगी। यह सब मेरे ऊपर छोड़ दो।

आधी रात बीत चुकी थी। अब उन्हें चिन्ता होने लगी
थी कि मीरा नहीं आयी। लम्बे लम्बे डग भरता हुआ सेनापति
आया। जानी कुछ घबराने लगा। बहुत मुमकिन था कि मीरा
लौट आये, और उसे पहचान जाय। लेकिन मुसीबतों का
सामना करते-करते वह आदी हो गया था सब कुछ भाग्य के
भरोसे छोड़ देने का। इसलिए सेनापति के चेहरे की खुशी ने
उसमें नई आशा और विश्वास भर दिया।

"हमने उस शरारती लड़की को पकड़ लिया है।" घुसते
ही उसने कहा 'दो-तीन दिन में जब उसका दिमाग़ ठण्डा हो
जायेगा, तो हम उस नवाब के सामने पेश करेंगे।'

'बेटी मीरा अभी तक नहीं आयी हालांकि जमाई आ
गया है।"

सेनापति ने पहली बार जानी को देखा और मान लिया कि यही जमाई है। "मैंने तुमसे मना किया था कि ज्योतिषियों के चक्कर में मत पड़ा करो। वह शायद अभी तक फाटक पर ही इन्तजार कर रही हो।'

"क्या ज्योतिषी ठीक नहीं कह रहा था? मेरा बेटा आ गया। वह शायद इसे देख ही न सकी होगी। जाओ, और उसे भी तो खोजो।"

सेनापति घोड़े पर चढ़कर मुख्य द्वार पर पहुँचा। लेकिन वहाँ किसी ने किसी भी लड़की को आते-जाते नहीं देखा था। आधी रात को संतरियों का पहरा बदल गया था। मगर पहले के पहरेदारों ने भी उससे कुछ नहीं कहा था। वह निराश होकर लौट आया।

## ४१

जानी ध्यान बँटाने के लिए कोई बहुत चौंकाने वाला काम करने में विश्वास करता था। इसलिए उसकी कल्पित पत्नी के गायब हो जाने से उसे मामला और भी उलझाने का मौका मिल गया। महफ़ूज़े को छुड़ाने के लिए वह एक दिन और चाहता था इसलिए ऐसी कोशिश में था कि सेनापति और उसकी पत्नी उस पकड़ी गयी नवयुवती से न मिल पायें, जो कि शायद मीरा ही होगी, उसने सोचा।

बड़े नाटकीय ढंग से वह उठा और दीवार से सिर

टकराता हुआ चीखने लगा, "मैं अपने आपको कभी माफ़ नहीं करूँगा, मगर मेरी वजह से मीरा कुछ कर बैठी !"

वह दीवार से सिर फोड़ता रहा । सेनापति ने दौड़कर उसे बचाया और शान्त किया । लेकिन सेनापति की पत्नी तो अपने दामाद के रोने चिल्लाने में शामिल हो गयी ।

सास ने कहा, "मीरा कोई बच्ची तो है नहीं । वह तो तुम्हारा नाम सुनकर ही सुध थी कि कोई ऐसा ग़लत क़दम उठाये ।"

जब उषा का प्रकाश फैलने लगा, और उसने समझ लिया कि अब कोई ऐसी बात नहीं होगी, तो वह सोने के लिए जाने को तैयार हुआ । 'हम हिम्मत तो रखेंगे, पर जब तक मेरी प्यारी बीबी वापस नहीं आ जाती, मैं रोटी का टुकड़ा मुह से नहीं लगाऊँगा ।'

सेनापति और उसकी बीबी को भी लगने लगा कि बेटी को खोजने के लिए उन्हें भी कुछ करना चाहिए ।

सेनापति ने चारों ओर पता लगाया, मगर कोई खबर नहीं मिली । इससे उसे बड़ी झुँझलाहट हुई । उसने दारोग़ा को बुलाया, जो रतजगे के बाद थोड़ा आराम कर रहा था ।

"तुमने मेरी बेटी के बारे में सुना है ? उसे फ़ौरन खोज निकालो, वरना मैं तुम्हें फाँसी पर चढ़वा दूँगा ।"

दारोग़ा के चेहरे पर निराशा छा गयी । पर उसने धृष्टतापूर्वक कहा 'यह तो उचित नहीं है । सारी देख रेख तो आपके ही जिम्मे थी यह आपकी अपनी नाकामयाबी का नतीजा है ।'

"चुप रहो। तुम मुझे इन्साफ़ सिखाओगे? जाओ, उसकी तलाश करो।"

नवाब को क़ैदी के बारे में सूचना दी गयी। उसने कहा कि उसे कुछ दिन तक जेल में रखकर सड़ने दिया जाय।

शाम तक लड़की का कोई पता न लगा तो माँ घबरा गयी। अब वह सारा दोष अपने पति को देने लगी।

'तुमने उसे लाने के लिए आदमी क्यों भेजे?'

'मगर तुम्हीं तो उसे देखने के लिए बेचैन थीं और मीरा भी यही चाहती थी।'

जानी के निकल भागने की घड़ी अब आ गयी थी। सारा वातावरण उसके अनुकूल था।

"अब मुझे ही मीरा को खोजने के लिए जाने दीजिए। मैं उसका स्वभाव खूब जानता हूँ। मरे हुए सिपाही के कपड़ों का बण्डल लेकर वह बाहर आ गया।

एकान्त जगह में आकर उसने वर्दी पहन ली। सिपाही के भेष में जानी-जैसे आदमी के लिए यह सहज था कि वह नवाब के महल के रसोई घर तक आ पहुँचे।

उस दिन नवाब बड़ा प्रसन्न था। हाँ अब महकदे आना-कानी न करेगी। महकदे क्या क़ैदी की मौत चाहेगी? नवाब सोचते-सोचते शराब के लिए चिल्ला उठा।

फ़व्वारे वाले आँगन से होकर खम्भे वाले रास्ते और गूँजते हुए कमरों में से वह साक़ी के पीछे-पीछे चल पड़ा। साक़ी नवाब के निजी कमरे में घुसने वाले दरवाज़े पर जा पहुँची।

जानी भी चुपके से पीछे-पीछे वहीं आ गया। लड़की माल

म से आग बढ़ी। वह हाथ बढ़ाकर नवाब का कमरा खोलने ही वाली थी कि जानी ने एक हाथ से उसका मुंह दबाकर दूसरे से सुराही छीन ली।

सुराही को जमीन पर रख लड़की का मुंह एक कपड़े से बन्द कर उसे पर्दे की रस्सी से उसने बांध दिया और लटकते हुए पर्दे के पीछे उसे सुलाकर वह बोला, "सात-धरम सूत जाओ मेरी जान, मैं तुम्हारे कपड़े बदलूंगा।"

एक-एक करके उसने लड़की के कपड़े उतारे और खुद पहनता गया। उसने अपनी वर्दी से लड़की को ढंक दिया। वह छरहरे लचकीले बदन का था, और भेष बदलने में तो उस्ताद था ही। हां, कपड़े बदलते समय वह लड़की के सुगठित शरीर की तारीफ़ किये बग़ैर नहीं रह सका। आदिलशाह सुन्दर सुकुमारियों पर मरता था। उसकी खिदमत में सिर्फ़ नौजवान बांदियां ही रहती थीं।

जानी ने एक पुड़िया निकाली और शराब में कुछ मिला दिया। वह ज्यों ही चलने को हुआ उसे एक लड़की की खिलखिलाहट सुनायी दी। कमर के ऊपर विवस्त्र एक लड़की नवाब के कमरे से बाहर निकली, और तेजी से बोली "अरी कितनी देर कर दी। नवाब साहब बिगड़ रहे हैं।'

जानी लड़की के पीछे-पीछे कमरे में आया। नवाब एक दीवान पर लेटा हुआ था। सुघड़ शरीर की कमर तक नंगी एक और युवती बड़ी मस्ती में ज़री के झालरों वाला ताड़ का पंखा झुला रही थी। दम-दम बत्तियां बाम दो बड़े फ़ानूसों में

सुगन्धित तेल जल रहा था। चमेली के फूलों की महक चारों ओर फैली हुई थी।

कुछ क्षणों के लिए जानी पर भी माहौल का नशा छाने लगा। पहली बार जीवन में वह जाम लेकर आ रहा था। डर रहा था कि कहीं पाँव लड़खड़ा गये तो सब कुछ जमीन पर ढरक जायेगा। किसी तरह उसने अपने को सँभाला।

नवाब पर नशा चढ़ा था। वह बक रहा था, तो मेरी यह हालत हो गयी कि शराब के लिए भी इन्तजार करना पड़ता है। मैं मुल्क के इस इलाके का सबसे बली हूँ। चारों तरफ़ मेरी बहादुरी और बुलन्दी का दबदबा है। फिर एक अल्हड़ लड़की अपनी चालों से मुझे जितना परेशान कर रही है, उतना तो मैं अपने दुश्मनों की तिकड़मों से भी परेशान नहीं होता।' उसने जानी की ओर घूरकर देखा। जानी के चेहरे पर शिकन तक नहीं आयी।

'तुम्हारी क्या राय है, मेरी जान। मैं महकवे को दिखला दूँगा कि यहाँ का मालिक कौन है?

जानी चुप।

''मेरी हूर, तुम बोलती क्या नहीं? और उसने जानी की ओर इस तरह देखा मानो अपनी बाँहों में ही भर लिया हो!

'अरे तुम मेरी नजरों से घबराती हो। हा हा हा! बड़ी उमंग से उसने हाथ बढ़ाकर अंगिया का बन्धन खोलना चाहा। जानी का काटो तो खून नहीं। पर तुरन्त उसने शराब भरकर प्याला सामने बढ़ा दिया।

जल्दी ही आदिलखाँ मद में धुत होकर बेहोश हो गया।

युवती का चेहरा लाल हो उठा। चाहते हुए भी वह सुल्तान से आँखें मिला न सकी। घबराहट से उसका गला भर आया।

उसकी निरन्तर बदलती आवाज़ की मिठास वह पीती रही, उसने देखा सुल्तान की सुदृढ़ ठोढ़ी तिरछी उठी हुई थी। उसकी गहरी दृष्टि से विश्वास झलक रहा था। मगर यह सब उसके मोहक व्यवहार के सामने कुछ नहीं था। अजीबे-से अजीबे व्यक्ति का संकोच दूर कर अपनापन दरसाने की उसमें विलक्षण क्षमता थी, और शायद यही उसके आकर्षण का बहुत बड़ा रहस्य था। मौन रहकर भी मानो वह कह रहा था "मैंने तुम्हें पा लिया।"

मेरी सगाई किचमकोट के महाराजा अमपाल के पुत्र राजकुमार सुल्तान से होने वाली थी कि उनको निर्वासित कर दिया गया। अब मेरे पिता इंदरकोट के राजकुमार फूलकुँवर से मेरा ब्याह करने वाले हैं।"

मगर सच यह था कि उसका मन फूलकुँवर से बहुत दूर था। उसी क्षण उसे लगा, मानो बादल ने सूर्य को ढक लिया, पर बादल सूर्य पर नहीं निहालदे की आँखों में घुमड़ आया और गर्म-गर्म प्यार के आँसू ढलने लगे।

वह सुल्तान के पास बैठ गयी। बाँहें उठाकर उसने दोनों हाथ सिर के पीछे बाँध लिये। वह अत्यन्त रूपवती तो थी ही, जैसे दीप की शिखा। सुल्तान की आँखें नीची हो गयीं।

वह सौकुमार्य-संकोच से सीधी तरह तो नहीं कह पायी,

आखिरी प्याला देते हुए जानी ने आदिलखाँ के हाथ से चुपके से शाही मुद्रा निकाल ली, फिर सुराही उठाकर वह दोनों लड़कियों को वहीं छोड़ बाहर आ गया।

अब तक का काम उसके लिए आसान रहा।

जानी सारी ड्योढ़ी में चक्कर लगा आया कि कहीं कोई आ तो नहीं रहा। भीतर किसी भी मर्द को, बिना खास इजाजत के, आने की आज्ञा न थी, इसलिए वह अपने को सुरक्षित समझता था। वह लौटकर वहीं आया जहाँ लड़की को बाँध कर छोड़ गया था। लड़की अधीरता से इधर-उधर ताक रही थी कि शायद कोई आ जाये।

'जबान बन्द रखो, तुम्हारा कोई नुकसान न होगा।' सुराही उसने वहीं रख दी। वर्दी बदलकर, लड़की को उसके दुपट्टे से ढँककर, निकल आया। वह बरामदे तक आकर फ़व्वारे और लता-मण्डप के पास पहुँचा।

रात के गश्त का दारोगा महल के दफ्तर में था।

उसने शाही मुद्रा दिखलाकर कहा "मुझे हुक्म मिला है कि मैं शाहज़ादी महक्दे को नदी के दूसरे किनारे पर ले जाऊँ।'

"लेकिन तुम्हें ही यह हुक्म क्यों मिला?'

"नवाब के पास मेरे सिवा और कोई आदमी नहीं था। शाही के बारे में मैं नहीं जानता।"

दारोगा ने भार अविश्वास की दृष्टि से जानी की ओर देखा, और फिर शाही मुद्रा की ओर।

"नवाब साहब कहाँ हैं?"

'अपने कमरे में, हुजूर! मुझे तो शामें भीतर ले गयी।'

दारोग़ा को अपने कानों पर विश्वास न हुआ। वह जानी के साथ रसोई घर तक आया, मगर बाँदी वापस नहीं लौटी थी।

दारोग़ा ने डाँटते हुए कहा, "तुम्हें पता है कि इसकी सज़ा मौत है।"

जानी के दिल की धड़कन जैसे एकबारगी रुक गयी। किसी तरह अपने को सँभालते हुए बोला "हुज़ूर, मैं कुछ नहीं जानता मुझे जो हुक्म मिला है, वह आपसे अर्ज कर रहा हूँ।"

'अच्छा, तो हुक्म की तामील करो। जानी ने उसे चौराहे के पास जाते देखा, फिर वह महकदे के महल में गुम हो गया। जानी को लगा मानो इन्तज़ार करते मुद्दत बीत गयी। जानी बहुत घबरा रहा था। दारोग़ा एक बाँदी के साथ लौटा, तो जानी की साँस में साँस आयी।

'बाँदी के साथ जाकर राजकुमारी को नाव पर ले जाओ। नाव को तुम्हारी इन्तज़ारी में रुकने का हुक्म दे दिया गया है।

– ४२ –

चलते चलते वे बूँदी की सीमा पर आ गये। शाम का वक्त था। पहले पहुँचे हुए लोगों ने एक छोटी झील के किनारे पड़ाव डाल दिया था।

सुल्तान ने जानी से कहा हम हाड़ा के राज्य में आ

गये हैं। उनका हमारे साथ विशेष मित्र-भाव नहीं है, इसलिए सतर्क रहना चाहिए।

श्यामसिंह हाड़ा बूंदी का राजा था। उसके गुप्तचरों ने सुल्तान तथा उसके दल-बल के बारे में पहले से ही सूचना ले रखी थी। मगर वह सुल्तान की हथियारबन्द सेना से भिड़ने में डरता था। श्यामसिंह का दुर्ग बड़ा मजबूत था। सुल्तान के लिए उसमें घुसकर हाड़ाओं को हराना सम्भव नहीं था। लेकिन क़िले के बाहर सुल्तान के सामने हाड़ाओं का कोई मुक़ाबला न था।

ब्याह का समय आ पहुँचा था। सुल्तान के दल-बल को देर हो रही थी। साबरमती को पार करने के बाद वे रेगिस्तान से गुजरने लगे। रेगिस्तान में छुट-पुट कुछ आँटी के वृक्ष अवश्य थे, पर चारों ओर रेत ही रेत थी। तपते हुए सूरज के नीचे उन्हें सफ़र करना पड़ रहा था। आसमान बिल्कुल साफ़ होने से गर्मी और भी तेज थी। बूंदी के पास पहुँचने पर दृश्य एकदम बदल गया। शुष्क रेगिस्तान को पार कर अब पानी के एक अद्भुत सोते से भाग के दोनों ओर इधर-उधर फूल और घास उगी हुई दिखायी दी। हरियाली भी दिखलायी पड़ती थी।

सूरज डूब चुका था। अपने खेमे के पिछवाड़े एकान्त में निहालदे अकेली बैठी इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि भोज में कोई नहीं होगा और वह अँधेरे में शीतल जल का सुख उठा सकेगी। उसने अपनी ओढ़नी उतार दी थी, सिर्फ महीन अंगिया और घुटने तक का लहँगा लपेटे ठण्डी रेत पर

हाथ के सहारे लेटी हुई थी। उसके केश उसके गालों पर लटके हुए थे, और नरम गर्दन के नीचे उसके आध खुले गोरे चौड़े कन्धे डूबते हुए सूरज की मद्धिम रोशनी में चमक रहे थे। छरहरा बदन कटावदार था। सुरुचिपूर्ण होकर भी वह वासना पैदा करने वाली थी। उसकी भिड़ की तरह पतली कमर के ऊपर उसके भरे हुए उरोज बड़े ही खूबसूरत लग रहे थे।

फूलकुँवर अभी तक निहालदे को भूल नहीं सका था। ऊपर से तो वह सुल्तान से बड़ा मेल-जोल दिखाता मगर अन्दर अन्दर वह उससे बहुत जलता था। एक छोटे टीले के पीछे खड़ा वह निहालदे को निहारने में मग्न था। निहालदे का चेहरा बिल्कुल नवयुवतियों के जैसा दीख रहा था। तपते हुए सूरज की गरम हवा और सफ़र में शृंगार की बेफ़िक्री ने उसमें एक तरह का मासूम अल्हड़पन भर दिया था। स्त्री के प्रति मनुष्य की आदिम भूख फूलकुँवर में तेज़ झकोरों की तरह गहन और खूंखार हो उठी। जब उसने निहालदे को बदन उघारे रेत पर लेटे देखा तो उसकी इच्छा हुई कि ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाये 'मुझे प्यार करो ईश्वर के लिए मुझे प्यार करो।' वह अपनी इन्हीं इच्छाओं में इस क़दर खो गया कि अपने स्थान को भूलकर निहालदे के पास तक जा पहुँचा।

निहालदे ने उसे देखा। उसने ओढ़नी खींचकर अपनी देह पर डाल ली और उसकी आँखें डरावनी होकर फूलकुँवर को देखने लगीं। वह स्वतः पीछे हट गया।

'यह क्या हो रहा है?' निहालदे ने गुस्से में चीखकर कहा।

"नहीं, इस तरह मुझ पर मत चिल्लाओ।" उसने कहा, "अब मैं और अधिक नहीं सह सकता। तुम मेरी होने वाली थीं। मगर मैं सुल्तान के हाथ से मार दिया जाता, तो अच्छा था, किन्तु इस तरह का असहनीय कष्ट मैं नहीं झेल पाऊँगा। उसने अपना घूँसा उठाया, और फिर वह क़सम खाकर पीछे की ओर घूमा और भाग गया।

निहालदे की तीव्र घृणा से उसे ऐसा लगा कि खुद उसके भीतर भी एक तरह की खूनी और हत्या की भावना उदय हो गयी है। उसने महसूस किया कि निहालदे द्वारा प्यार किये जाने से उसे छटपटाती देखना उसे कहीं ज्यादा सुख देगा।

निहालदे भीतर से बड़ी अशान्त हो उठी। उसने अवश्य ही उस अद्भनम्न वध लिया होगा। वह एक दुश्चरित्र व्यक्ति था इसलिए सिवा आवेश और वासना के उसके दिल में निहालदे के लिए और कुछ नहीं था। क्या वह सुल्तान से कह दे? मगर भमन्न बढ़ाने से कोई फ़ायदा नहीं। उसे प्रतिहिंसा पर क़ाबू रखना चाहिए। उसे चाहिए कि वह फूलकुँवर को एक बीमार आदमी समझे।

फूलकुँवर आपा खो बैठा। वह पागल की तरह अपने कमरे में पहुँचा। उसके विवेक-बुद्धि पर आवेश और ईर्ष्या छा गयी। भीतर में उसे बड़ी बेचैनी थी। उसने गुनगुनाते हुए कहा, 'सुल्तान से बदला लो बस यही एक रास्ता है। डाकुओं की मदद करो। पर ऐसा सोचते समय नीम वृक्ष के तने के पीछे खड़े लम्बे व्यक्ति को वह नहीं देख सका।

:: ४३ ::

लड़की डर से काँपती हुई सुल्तान के खेमे के सामने आकर गिर पड़ी। जब तक उसने सब-कुछ सुल्तान से कह न दिया, उसे शान्ति नहीं मिली।

अँधेरा हो रहा था। सब ने जी भरकर स्नान किया और वे अपने खेमे में लौट आये। चाँद अभी तक नहीं उगा था। मौक़े को देख निहालदे अपनी केवल तीन सखियों के साथ चुपचाप अँधेरे के पर्दे में निकली। झील दर्पण की तरह दिख रही थी। हाँ, कभी-कभी उसकी सतह पर लहरदार चमकती झलकें दौड़ जाती थीं।

उसने अपने मिट्टी जमे हुए पसीने से तर कपड़े उतारे और चैन की साँस ले ठंडे पानी में उतर गयी। बदन को ख़ूब मल मलकर नहाने के बाद वह कपड़ा लपेटकर बाहर निकली और उसने पोशाक पहन ली। फिर शीश उठाकर उसने प्यार से झील के किनारे खड़े पेड़ों के बीच से झाँकते सितारों की ओर देखा। अचानक उसे लगा कि कहीं कोई है। शान्तिपूर्ण हृदय में ज़रा सुरसुराहट हो गयी। पेड़ पर से एक चमगादड़ उड़ गया। बार-बार मुसीबतें सहने के कारण उसकी आत्म रक्षा की भावना तीव्र हो उठी। वह नंगे पाँव ही अपने खेमे की ओर दौड़ने लगी। उसकी एड़ियाँ लम्बी नरम घास को दबाती-कुचलती हुई भाग चल रही थीं।

एकाएक वह किसी पुरुष से टकरा गयी और हाँफते हुए उसने एक साँस ली। बचने के लिए उसकी छटपटाहट बेकार थी। उस पर क़ाबू पा लिया गया। मुँह में कपड़ा ठूँसकर

उसे घोड़े की पीठ पर बाँध दिया गया। भयग्रस्त बड़ी आँखों से, उड़ते बालों के बीच से, वह सामने के घने विस्तृत अन्धकार को देखती रही। वह पाटलवर्ण घोड़ा दौड़ता जा रहा था और झील के पूर्वी किनारे से होता हुआ तेज़ी से क़िले की ओर सरपट भागने लगा। मिहालदे एक पुलिंदे की तरह बँधी हुई थी। उसकी अधखुली आँखों से पकड़े जाने की शर्म के कारण आँसू बह रहे थे। दो दासियाँ भी पकड़ ली गयी थीं। तीसरी, धर-पकड़ में, अँधेरा होने से छूटकर भाग गयी।

सुल्तान काँप उठा। तीसरी दासी ने जैसा वर्णन किया था और जिधर घोड़े गये थे, उससे तो सुल्तान को यही लगा कि उसे पकड़कर ले जाने वाले हाड़ा ही थे। उसने भी "अब मुझे क्या करना है?' चिल्लाकर प्रकट कर दिया कि वह भी भयभीत हो गया है।

फूलकुँवर और आली भी वहीं थे। हालाँकि फूलकुँवर ने ऊपर से बड़ी घबराहट दिखायी पर आली को उसकी बातों में एक छिपी हुई खुशी की लहर का अन्दाज़ा लग गया। फूलकुँवर के प्रति वह शंकाशील हो गया, इसलिए वह कुछ बोला नहीं।

सुल्तान कुछ देर तक चुप रहा। आगे क्या करना चाहिए यह नहीं सोच सका। अन्त में बोला, 'अब हमें हाड़ाओं से लड़ना ही है, ईश्वर हमारी सहायता करेगा।'

सरदारों में सिर्फ़ों में एक तरह की फुसफुसाहट हुई, मगर कोई बोला नहीं। आली ने आगे बढ़कर कहा, 'आपका कहना ठीक है महाराज! पर मैं नहीं सोचता कि रानी को अभी वे कोई नुकसान पहुँचायेंगे। रात भर हम ज़रा और विचार कर लें।'

जब सब चले गये, तो जानी ने सुल्तान से कहा, "आप यह मुझ पर छोड़ दें, मैं किसी तरकीब से कल शाम तक रानी को यहाँ ले आऊँगा। अगर मैं असफल रहा तो हम तब भी हमला कर सकते हैं।'

जानी ने नर्तकी बिजली को बुलाया, और उसकी तरह बन-ठनकर तैयार हो गया। लचकीले, छरहरे बदन के खूबसूरत जानी को बिजली का रूप धरने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

॥ ४४ ॥

श्यामसिंह अपने दरबार में बैठा था। उसे घेरकर मन्त्रीगण सेनापति और दूसरे खास-खास दरबार बैठे थे। शराब का दौर चल रहा था। दरबार का हॉल बहुत बड़ा था—खूब खूबसूरत और अच्छा सजा हुआ। सात-आठ जवान लड़कियाँ, जो लगभग अर्धनग्न थीं, अफ़ीम की गोली के साथ-साथ शराब ढालकर दे रही थीं। श्यामसिंह पर नशा चढ़ गया। दो लड़कियाँ उसे पंखा झल रही थीं। एक कश्मीरी लड़की झीने वस्त्र पहने बड़ी मृदुल मुद्रा से देह लचकाती हुई, कामोत्तेजक नृत्य कर रही थी। नशे में श्यामसिंह कभी रुपया तो कभी जवाहरात या जो भी हाथ में आया, लड़की पर फेंक देता। वह झूम-झूमकर नाचती रही जब तक कि वह थककर एक मूर्ति की तरह जड़ नहीं हो गयी। संगीत थम गया।

इस समय एक अपूर्व सुन्दरी को राजा श्यामसिंह के सामने पेश किया गया। उसके कन्धों के पीछे सहराती रेशमी चादर लटक रही थी। सामने किमखाब की अंगिया और हरे घांघरे की चमकती चीजें मद्धिम रोशनी में झिलमिला रही थीं, मानो वह अपनी शोभा में दमक रही हो।

उसने आदाब बजाते हुए कहा "एक अरसे से मैं इस दिन की इन्तजारी में थी। मैं केलागढ़ की नर्तकी हूँ। आज आपके आगे नाचने की मेरी बहुत दिनों की तमन्ना पूरी हुई।"

"क्या कहा ? केलागढ़ ! मुझे बहुत खुशी हुई बहुत-बहुत।" श्यामसिंह ने लड़खड़ाती जबान से कहा "मेरे पास केलागढ़ का ही एक और अनमोल नगीना है। निहाल निहालदे।"

"अगर हुजूर का मतलब महाराजा माथ की बेटी से है, तो वाह क्या कहना ! मैं तो उसके सामने कई बार नाच चुकी हूँ।"

"वाह खूब ! वही वही तो है। अगर तुम जरा दोस्ती कर सको, तो मुँह माँगा इनाम मिलेगा।

"मैं जरूर कोशिश करूँगी।"

नाचने वाली की पोशाक में सजे जानी को कोई नहीं पहचान पाया। उसे बड़ी खुशी हुई कि बिना खास दिक्कत के उसे निहालदे से मिलने की परवानगी मिल गयी।

दीवान पर एक ओर निहालदे सिर झुकाये पड़ी थी। भरी आँखों से वह रह रहकर दरवाजे की ओर देख लेती। वह बिल्कुल अकेली थी। उसे भविष्य की चिन्ता सता रही थी।

जानी अन्दर आया। निहालदे ने आँखें मलते हुए उसे देखा।

"हाँ, मैं ही हूँ, जानी।

लेकिन लेकिन कैसे! ' धीरे-धीरे वह समझने की कोशिश करने लगी। जानी को सिर से पर तक देखकर वह हँस पड़ी। ' अब मैं आराम की साँस ले सकती हूँ।'

'वक्त बरबाद मत करो। झटपट मेरे कपड़े पहन लो। मैं परदे के पीछे छिप जाता हूँ और तुम अपने कपड़े मुझे दे दो।'

'पागल ? क्या तुम समझते हो यह सम्भव है ?'

"खाश ! यह कोई आसान काम नहीं है। मगर अब और क्या नई मुसीबत आयेगी। दोनों गवैये बाहर इन्तज़ार कर रहे हैं, उनके साथ हमारे पड़ाव तक चली जाओ।

' नहीं मैं नहीं जाऊँगी। तुम मारे जाओगे।

'बहस मत करो। जल्दी भागो। मैं वादा करता हूँ कि बिना श्यामसिंह को मारे मैं नहीं मरूँगा।

उसके माथे पर शिकन पड़ गयी। एक आशा-किरण से स्फूर्ति पाकर उसने सिर हिलाया। दोनों ने जल्दी से कपड़े बदल डाले, और निहालदे सुल्तान के खेमे में जाने के लिए चल पड़ी।

जब श्यामसिंह ने कमरे में प्रवेश किया तो निहालदे की पोशाक पहने, जानी पेट के बल एक हाथ सिर के नीचे रखे लेटा हुआ था। वह अपना बायाँ पाँव घुटने तक उलटा उठा कर तान देकर धीमे स्वर में कोई गाना गुनगुना रहा था।

मगर संकेत से आह भरकर और अपने सुकोमल हाथों को हिलाकर उसने अपना मनोरथ समझा दिया।

"मैं ही तो वह अभागा सुल्तान हूँ। अगर मैं कहूँ कि मैं अपने आप से डरता हूँ तो क्या तुम विश्वास करोगी? मेरा मन क्या कहता है, यह तो समझ ही गयी होगी। मगर वचन पूरा न कर सकूँ तो कुछ भी कहना बेकार है।

"आप आप तो बड़ी निराशा भरी बातें कर रहे हैं।" स्नेह से भरा उसका कांपता कण्ठ हकलाने लगा।

भीनी भीनी ठंडी हवा का एक झोंका आया। चारों ओर फैली मौलिमा की निहालदे के वस्त्रों से उठी, मधुर सुगन्ध सुल्तान के मस्तिष्क में भर गयी। उसे लगा कि बरसों से वह इतना एकाकी नहीं था। क्या कुछ नहीं कर सकता? उसने एकाएक जल्दी से थूक निगला और अपने को संयत करते हुए एक लम्बी सांस भरी। "एक ही रास्ता है। तुम अपने पिता से कहो कि वे राजकुमारों और राजाओं को आमन्त्रित करें और तल-पात्र में पड़ती परछाइ को देखकर मछली की आँखें वेधने के लिए कहें। मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा में मेरे सिवा दूसरा कोई उत्तीर्ण नहीं हो सकता।"

राजकुमारी को यह बात जँच गयी। उसका मुँह खिल गया और आँखें चमक उठीं। कांपती हुई वह उठी। उसकी प्रत्येक क्रिया, और प्रत्येक भंगिमा में दृढ़ता और सुन्दरता घुली हुई थी। वह महल की ओर लौटने को उतावली हो उठी। उसका मन वासना में मँडरा रहा था, और वह भविष्य की छिपी फुलवारी को देखने लगी। सुल्तान उसकी धूमिल

श्यामसिंह ने हँसते हुए कहा 'अच्छा अच्छा मेरी भद्दी तुम्हारी क्रोधाग्नि बुझ गयी ?' वह नशे में चूर था। जानी धीरे धीरे उठा। चाँदी के एक प्याले में उसने राजा के सामने लाल-लाल सुगन्धित शराब पेश की।

शराब का प्याला लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए श्यामसिंह बोला 'मैं तुम्हारे प्यारे हाथों से जहर का प्याला भी ले सकता हूँ।'

जानी ने फुर्ती से राजा को हाथ खींचकर नीचे गिरा दिया और पर्दा फाड़ उसे कसकर बाँध दिया। उसने श्यामसिंह का साफ़ा अपने सिर पर बाँधा और उसके कपड़े पहनकर बाहर हो गया। पकड़े जाने के डर से धीरे धीरे बड़ी सावधानी से क़दम बढ़ाते हुए, बिना किसी अड़चन के वह घोड़े के पास जा पहुँचा। शाम हो चुकी थी। अँधेरे ने उसे क़िले से बाहर निकलने में मदद की।

:: ४५ ::

जानी के वापस न लौटने से सुल्तान बहुत बेचैन हो रहा था। निहालदे के आने का उसे पता चल गया था। 'कहीं जानी की चालाकी इस बार विफल तो नहीं हो गयी।' उसने कहा।

गोपू बोला 'देखने में वह दुबला-पतला तो जरूर है मगर दिल का बहुत मज़बूत है। लौटेगा वह जरूर।'

जानी अपने असली कपड़े पहन पहले निहालदे के सामने हाजिर हुआ।

निहाल ने पूछा, "श्यामसिंह के साथ कैसी बीती ?"

जानी ने होंठ बिचकाते हुए कहा 'हूँह, काम-वासना के नशे में धुत्त एक बीमार आदमी।'

फिर वह सुल्तान के सामने आकर बोला "महाराज आपको अब लड़ना होगा। पहली बार हम जीत तो गये हैं, पर दुश्मन के पास बड़े लड़ाकू सिपाही हैं। किन्तु फूलकुंवर की निगरानी के लिए मुझे छोड़ दीजिए।"

सुल्तान ने गोपू को आज्ञा दी कि वह दस हजार सैनिकों को लेकर उस ऊँचे टीले के पीछे जाय, जहाँ दुश्मन जरूर मोर्चा बनायेगा।

यह बहुत मुश्किल काम था। सुबह होने के पहले ही यह जरूरी था कि झील के दूसरे पार से और शत्रु-सेना की बायीं भुजा से होकर वहाँ पहुँचा जाय। इसके लिए खास फेरे हुए घोड़े होने चाहिए, क्योंकि जरा-सी आवाज से भी शत्रु को पता चल सकता था। सुल्तान ने कहा तेजी से जाओ, ईश्वर तुम्हारा साथ देगा।

सुल्तान के खेमे के सामने मशालों के जलने से दिन-जैसी रोशनी हो गयी थी। वह शत्रु को यह नहीं बताना चाहता था कि वह डरा हुआ है, और इसलिए गरज-गरजकर आदेश दे रहा था। देखते-देखते सैनिक लड़ने के लिए लैस हो गये।

जानी ने देखा कि एक दुबला नाटा आदमी चुपचाप घोड़े पर फूलकुँवर के खेमे की ओर जा रहा था। जानी के अलावा

शायद ही किसी और की नजर उस पर पड़ती। जानी ने म्यान से तलवार निकाल ली और बिना दिखावे दो तीन फुट बढ़ आया। जब तक कि घोड़ा बगल से भागे, जानी की तलवार घोड़े के सीने के आरपार हो चुकी थी। सवार गिर पड़ा। अब जानी के लिए उसे पकड़ना बड़ा आसान था।

पहाड़ी की ओर घुड़सवारों की एक बड़ी टुकड़ी गरजती हुई आ रही थी और धूप की किरणें उनके सफ़ेद साफ़ों पर सुनहरा रंग चढ़ा रही थीं। हाथी चिंघाड़ रहे थे घोड़े हिन हिना रहे थे, तुरहियाँ बज उठी थीं ध्वज आपस में टकरा रहे थे और नगाड़े धमक रहे थे। सुबह का सूरज जब उनकी मुट्ठियों में थमी तलवारों की धारों पर चमकने लगा तो सुल्तान की सेना शत्रु-दल पर टूट पड़ी। गरजती हुई पदल सेना के पीछे राजसी आन-बान का एक लम्बा खूबसूरत पुरुष घोड़े पर सवार था। यह औपचारिकताओं का समय नहीं था—बाक़ी सेना के साथ सुल्तान भी लपककर लम्बे घोड़े से मार-काट करने लगा। कभी वार को बचाकर घोड़े को अलग खींच लेता, सैनिकों और घोड़ों का समूह आगे-पीछे होता कभी लहर की भाँति आगे घूमता और कभी पीछे हो जाता।

बाँयें हाथ में रास लिये और दायें हाथ में खड्ग सँभाल विधासिंह एक मीनार की भाँति खड़ा था। वह धीरे धीरे आगे बढ़ रहा था। उसका खड्ग जरा-सा घूमता और एक घुड़सवार जमीन चूमने लगता। गिरे हुए घोड़ों की लाशें रास्ता रोकने लगीं। इस पराक्रमी योद्धा के आने से हाड़ाओं में नई उमंग आ गयी। मुल्तान की घुड़सेना पीछे हटने लगी।

सुल्तान ने चिल्लाकर कहा, "रुको विशालसिंह" और शीघ्रता से आगे बढ़कर एक पल में सुल्तान उस बहादुर योद्धा के पास पहुँच गया। अन्य हाडा सुल्तान की ओर बढ़े। दूसरे सवारों की सुल्तान ने परवाह न की। अपनी भयानक तलवार से उसने घोड़ों के गले काट दिये और सवार धराशायी हो गये। मृत जानवरों की देहों पर कूद-कूद अब वे दोनों लड़ने लगे। मौक़ा देखकर सुल्तान ने विशालसिंह के घोड़े पर प्रहार कर उसे नीचे गिरा दिया।

इसी समय गोखू ने पीछे से हमला किया। हाडाओं के पाँव उखड़ने लगे। श्यामसिंह ने समझ लिया कि आज का दिन हाथ से गया। उसके बाक़ी सैनिक भी भागते जा रहे थे। कुछ ने क़िले में भागकर जान बचायी। तोपचियों और तीरन्दाज़ों ने इन भागने की कोशिश करने वालों पर प्रहार शुरू किया। पर यह उन्हें सिर्फ़ डराकर हथियार डालने के लिए किया गया था न कि उन्हें ख़त्म करने के लिए। श्याम सिंह तलवार के वारों के बीच लड़ता हुआ गिर पड़ा। विशालसिंह पकड़ लिया गया।

४६

शाम के वक़्त विशालसिंह को सुल्तान के सामने हाज़िर किया गया। वह जंजीरों से बँधा हुआ था। उसने सुल्तान के बारे में बहुत-कुछ सुन रखा था और उस दिन सुल्तान से

वह लड़ा भी था पर उसे निकट से परखने का अवसर कभी नहीं मिला था। सुल्तान एक साधारण सैनिक की भाँति बैठा हुआ था। देखने से भद्रता टपकती थी, मगर चेहरे पर उदासी का भाव था। यद्यपि युद्ध के रास्ते में भाग्य उसे बार-बार खींचकर घसीट लिया करता तथापि उसे युद्ध से आन्तरिक घृणा थी। उस पर दूसरी नजर डालने से ही उसके साहस और सभ्यता का अनुमान होता था। उसका व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि विशालसिंह उससे आँखें नहीं मिला सका।

विशालसिंह ने कहा हम अपने अपराध का पता है। वह अशुभ दिन था जिस दिन मेरे भाई ने फूलकुंवर की राय मान ली।

फूलकुंवर गुस्से से चीख पड़ा 'तुम्हारी यह मजाल! तुम्हारे इस झूठ पर कौन विश्वास करेगा?

मेरे पास भी उसका एक सबूत है। जानी ने धीमी आवाज में कहा और उसने पिछली रात पकड़ गये नाट आदमी को पेश कर दिया।

सुल्तान स्थिर बैठा चुपचाप यह सब देख रहा था। जानी ने सुल्तान के चेहरे पर तनिक आश्चर्य का भाव देखकर कहा 'क्या आप इसे जानते थे?

नहीं मैं कुछ नहीं जानता था। मगर मैंने यह नहीं सोचा था कि फूलकुंवर इस हद तक जा सकता है।

फूलकुंवर उसके चरणों पर गिर पड़ा।

उदार हृदय सुल्तान उठ खड़ा हुआ और बड़े भाई की तरह उसने फूलकुंवर को दोनों हाथों से उठाते हुए कहा मैं

महाराज कामध्वज के उपकार से उऋण नहीं हो सकता। उन्होंने मुझे तुमसे ज्यादा स्नेह दिया है। किन्तु उनकी शुभ्रता पर तुम एक काले दाग हो।

फूलकुँवर के होंठ हिले, पर मुँह से कोई शब्द नहीं निकला। वह नतमस्तक खड़ा था, उसकी आँखें खुली थीं, पर वह उनसे कुछ देख नहीं रहा था। सुल्तान ने उसे प्यार से थपथपाते हुए कहा, 'भाई, मेरा जीवन सदा तुम्हारे हाथ में है" और फूलकुँवर को वहाँ से विदा किया।

विशालसिंह की ओर देखकर उसने जंजीरों को खोलने के लिए कहा, एक बहादुर राजा से बूंदी का सिंहासन खाली नहीं रहना चाहिए। अपने भाई की गद्दी पर बैठो। लेकिन अभी हमारे साथ बहुम माक के यहाँ चलो।

४७ ::

श्यामसिंह के बारे में जानी की योजना सबसे अधिक साहसपूर्ण थी। श्यामसिंह क्रुद्ध हो उठा। फटने के पूर्व ज्वाला मुखी की तरह उबलता और खदबद करता हुआ वह अपने प्रज्वलित भावों के निकलने का मार्ग ढूँढ़ता रहा। उसने अपनी सेना को आदेश दिया कि वह लड़ने को तैयार रहे। क़िले के बाहर की लड़ाई में वह बड़ी प्रतिकूल परिस्थिति में था। मगर क्या होगा इसकी उसने परवाह नहीं की। किसी भी तरह सुल्तान से वह बदला लेना चाहता था।

विक्रमसिंह ने कहा, "यह मेरा बाईसवाँ साल है। मैं एक राजपूत की परम्परा में बड़ा हुआ हूँ। जो कुछ मैंने सीखा है और जो कुछ मुझे पढ़ाया गया है वह इसीलिए कि एक विशाल हृदय बहादुर राजपूत बन सकूँ।"

वह सुल्तान का बड़ा भक्त था क्योंकि सुल्तान राजपूती आन का मूर्त रूप था।

"यह तो आपकी उदारता है। मेरी खुशामद न करें।" सुल्तान ने बात काटी।

लेकिन विक्रमसिंह कहता गया। उसने यह भी कहा कि सुल्तान के प्रति उसके भाई की ईर्ष्या उसे बड़ी दुःखदायी थी। भाई का हुक्म सुन वह काँपते कलेजे से अँधेरे में ताकता हुआ बैठ गया। फिर वह श्यामसिंह के पास गया। वह क्षण भर रुका, फिर बड़े सरल स्वर में बोला "क्या हम बराबर नहीं हो गये? हमने फूलकुँवर के कहने पर जो कुछ किया वह गलत था। अब हम सुल्तान को, जहाँ वह जा रहा है जाने देना चाहिए।'

श्यामसिंह ने व्यंग्य से कहा, "मैं नहीं जानता था कि तुमने चूड़ियाँ पहन ली हैं।

'चूड़ियाँ? नहीं भैया! मैंने एक भले आदमी की तरह जिन्दगी बितायी है। मैं राज्य की सदा सेवा करता रहा हूँ और अन्त तक करता रहूँगा। लेकिन भगवान् के सामने मैं यह जरूर कहूँगा कि हमारा पक्ष अन्याय का है।"

'क्या कहा? हम अन्याय की तरफ़ हैं?" श्यामसिंह ने दाँत किटकिटाते हुए कहा।

दूसरे दिन सभी फाटक से निकलकर पहाड़ी पर आ गये। केसरिया पगड़ी बाँधे ७० हजार सरदार व सेनापति, जिनके घोड़े बख्तर से ढँके हुए थे, अरबी घोड़ों से पैदा किये हुए सजीले घोड़ों पर घुड़सवार सेना, और निडर नौजवान पैदल सैनिक। मगर सबके चेहरों पर जरा संजीदगी थी। यह सोच कर कि उनका पलड़ा कमजोरी की तरफ है वे उदास थे।

श्यामसिंह आपे से बाहर हो रहा था। उसका चमकता हुआ साँवला मुख उन सेनापतियों को आतंकित कर रहा था, जिनका जीवन का लक्ष्य लड़ना ही था। विसालसिंह ने भारी मन से उसका साथ दिया क्योंकि लोगों पर छायी निराशा का ज्ञान उसे हो गया था।

जब सभी एकत्र हो गये तब श्यामसिंह ने अपने भाई और मन्त्रियों को बुलाकर पूछा, "मैं आप लोगों की राय जानना चाहता हूँ कि हमें सुल्तान से लड़ने के लिए आगे चलना चाहिए या यहीं रुकना चाहिए।" वे लोग सोचने लगे। अन्त में विसालसिंह ने मानो सबकी तरफ से सम्बोधित करते हुए कहा 'सुल्तान को अगर नरवलगढ़ आना है तो वह इधर से ही गुजरेगा। हम ऊँचाई पर होने से मजबूत पड़ेंगे। उसको यहीं आने दीजिए।'

इस तरह निर्णय हो गया। उन्होंने आ रहे शत्रु के विरुद्ध अपनी सेना खड़ी कर दी।

:: ४८ ::

कोई एक अजनबी नारसिंह होसईश्वर के सामने उपस्थित हुआ। वह खूब लम्बा था। उसकी मुस्कान और उसकी आवाज इतनी बुलन्द और फिर भी इतनी मीठी थी कि वह किसी अभिजात वर्ग का मालूम पड़ता था। वह हिरन के मुलायम चर्म का एक थैला लिये हुए था। उसके चारों ओर सोने की किनारियाँ थीं। उसे खोलकर उसने दो अत्यन्त मोहक बड़े-बड़े मोती निकाले। राजा ने जिज्ञासा से उसकी ओर देखा।

'महाराज मैं स्वान्त सुखाय यात्रा करता हूँ। मैं उत्तर में घूमा हूँ पूर्व में उत्कल तक गया था, और दक्षिण में बीजापुर तक। अगर आप मेरी यह साधारण-सी भेंट स्वीकार करें, तो मैं कुछ दिनों तक यहीं ठहरना चाहूँगा।

राजा ने भेंट स्वीकार करते हुए कहा मुझे तुम्हारे व्यवहार से बड़ी प्रसन्नता हुई है।

यह तो आपकी उदारता है।

नारसिंह नित्य दरबार में आने लगा। यहाँ तक कि वह राजा के साथ यात्रा पर भी जाने लगा। और सबके पास तो हथियार रहते पर उसके पास सिर्फ डेढ़ हाथ का लम्बा बाँस का डंडा था जो घोड़े की जीन से लटकता रहता था।

तुम्हारे और हथियार क्या हुए ?" राजा ने एक दिन पूछा।

अगर मरने के लिए न सकुचा हो, तो हथियार की क्या जरूरत ? बस यह डंडा ही काफ़ी है।

उसे महल से मदिरापान के भी निमन्त्रण मिलने लगे। अब-तब वह कोई-न-कोई खूबसूरत चीज लेकर राजा को भेंट करता। राजा का वह इतना अधिक प्रिय पात्र बन गया कि कभी-कभी उससे राज्य के मामलों में भी सलाह ली जाने लगी।

रूपादे के विवाह का दिन पास आ रहा था। मारू के पिता सुरजसिंह और उसके सगे भाई मेघसिंह मूल्यवान उपहारों के साथ आ पहुँचे थे। दूल्हे के किसी भी शुभ दिन पर आने की आशा थी। मगर सुल्तान के आने की कोई खबर न थी। ढोलकुँवर ने एक दिन कहा "सुल्तान पर क्या भरोसा और वह क्यों आने लगा ?

मारू बोली 'जब उसने आने का वचन दिया है तो जरूर आयेगा।

गर्मी के आखिरी दिन थे। रूपाद क विवाह के कुछ ही दिन रह गये थे। खबर आ पहुँची कि दूल्हा बारात के साथ तीसरे दिन आ रहा है।

अब भेंट देने का समय आ गया। मारू को सभी सम्बन्धियों का स्वागत करना था। एक-एक करके वे अपने अपने पद के अनुसार मारू को उपहार देते। अतिथियों में सुरजसिंह का पद सबसे बड़ा था इसलिए उसे ही पहले उपहार देना था। 'हमें इस ऋण स मुक्त हो जाना चाहिए जिसस कि हम विवाह में प्रसन्नतापूर्वक भाग ल सकें।'

इस प्रस्ताव स मारू विचित्र परिस्थिति में पड़ गयी। वह सोचने लगी कि बिना किसी को नाराज किय किस तरह

परछाईं को ताकता रहा। अब तो उसके द्वारा बिसराया सौम्य शान्त वातावरण ही रह गया था। वह भी उठ खड़ा हुआ। वैसे उसकी इच्छा तो सिंहासन के पास ही बने रहने की थी। उदास मन से उसने घोड़े को सँभाला।

जब महाराजा कामध्वज ने यह देखा कि उनका बेटा शिकार से अकेला लौट रहा है तो वे बड़े चिन्तित हुए। रात में काफ़ी देर बाद जब सुल्तान शहर की सीमा पर लौटा तो उसे तलाशने वालों के झुंड के झुंड मशालें लिये घूम रहे थे। उसने अँधेरे में पुकारा और मशालें उसकी ओर घूम पड़ीं। वे दौड़ और राजकुमार को महाराजा क पास ले गये। उसे लौटा देख राजा निश्चिन्त हुआ।

:: २ ::

कैलाशगढ़ नगर बड़े ही सुचारु रूप से सजाया गया था। शहर के बीच में एक विशाल पंडाल भी बनाया गया था। आसपास के राज्यों स बीसियों राजकुमार और राजे आये थे। सारा नगर उनसे और उनके अनुचरों से भर गया। चारों ओर वैभव दिखाई देता था। पतझड़ का मौसम आ रहा था और पेड़ों से पत्ते झड़ने लगे थे। पत्तों पर शरद् की लाली दीख रही थी।

सबसे ऊँचा तो राजमन्दिर दीख रहा था। उसके चारों ओर लाल कनेर के वृक्ष थे। हर पर्व पर महाराजा यहाँ पूजा

यह तिथि टाली जा सके। सुल्तान अभी तक नहीं आया था। उसके जैसे पराक्रमी व्यक्ति को, आमन्त्रित कर वह नहीं चाहती थी कि किसी अन्य से उपहार उससे पहले लिया जाय।

अपने पिता के सम्मुख सादर शीश झुकाकर वह बोली, "पिताजी, मैं आपकी बेटी हूँ, अतः मुझे आपसे किसी भी तरह का दुराव नहीं करना चाहिए। सुल्तान को जब बुलाया गया है तो क्या हमें उसकी प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए?

बुद्धसिंह ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। "बेटी, सुन, तुझे अभी बहुत-कुछ सीखना है। यह मेरे और तेरे बीच की बात नहीं है। यह तो दो राज्यों की बात है। किसका पद ऊँचा है इसका निर्णय दूसरे लोग करेंगे। निश्चय ही तुम्हारे पिता और भाई पद में सुल्तान से नीचे नहीं हैं।

'पिताजी, आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं। मैं आपके सम्मान के विरुद्ध कुछ नहीं कहती। सुल्तान बाहर का व्यक्ति है, जिसे मैंने भाई की भाँति आमन्त्रित किया है।'

बुद्धसिंह बहुत झुँझलाया। वह महाराजा डासकुँवर के पास गया, 'आखिर तुम पुरानी परिपाटी से अनभिज्ञ नहीं हो। एक नवयुवक मेरी जगह कैसे ले सकता है?"

माक भीतर से बहुत डर गयी। डासकुँवर की ईर्ष्यालु जलती आँखें मानो के हृदय को सेंकने लगीं। वह एक कदम पीछे हटी। गाजा बजने थे। वे बिना रक्षकों को लिये स्वयं उसके महल की ओर दौड़।

"तुम अपने पिता और भाई को सुल्तान की प्रजा नहीं मान सकतीं। वे बस अपनी भेंट देंगे।"

'आप यहाँ महाराजा हैं मगर यह मत भूलिए कि भोमसिंह से मेरी रक्षा सुल्तान ने ही की थी।"

'अच्छा! तो क्या तुम अब भी सुल्तान से प्यार करती हो?'

'सुल्तान-जैसे बहादुर राजा का अपमान मत कीजिए। कम-से-कम इतना तो याद रखिए कि एक दानव से उसने ही आपकी रक्षा की थी।

'क्या उसके लिए हमने उसे छह वर्ष तक अपने यहाँ शरण देकर वह ऋण नहीं चुका दिया?'

'कौन जानता है कि भोमसिंह की तरह का कोई और भी हम पर आक्रमण न कर दे। अगर आप सुल्तान-जैसे प्रबल मित्र को खो देंगे, तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। अब वह यहाँ दस दिन में पहुँच जायगा। क्या आप १० दिन तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते?

"नहीं रानीजी नहीं। वह तुम्हारा आराध्य हो सकता है, मगर मेरे लिए नहीं।

मारू का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। मैं अपने कमरे में जा रही हूँ और सुल्तान का स्वागत करने के लिए ही निकलूँगी। इतना कहकर वह चली गयी।

महाराजा भयानक क्रोध से काँपने लगे। वह नहीं जानते थे कि ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए। धीरे धीरे वह बाहर आये। सामने से उन्होंने मारसिंह को आते देखा। उसे देखकर महाराजा को इतनी शान्ति हुई कि वे महल की सीढ़ियों पर वहीं बैठ गये 'मारसिंह तुम बड़े मौके पर आये।' उन्होंने सारी बातें बताई।

नारसिंह बड़ा सतर्क था। सुल्तान से दुश्मनी दिखाना वह नहीं चाहता था। उसने बड़ी चतुराई से कहा 'महाराज आप सुल्तान को भीतर नहीं आने देना चाहते, तो अपना मुख्य द्वार बन्द करा लेने से काम बन जायगा।

जैसे ही दूल्हा क़िले के भीतर पहुँचा राजा ने सिंहद्वार बन्द करने की आज्ञा दे दी।

:: ४६ ::

साबरमती पार करने के बाद सुल्तान तेज़ी से बढ़ने लगा। अरावली की घाटियों के सँकरे रास्ते में सिजलिजेपन के कारण साँस लेना भी मुश्किल था। पहाड़ों के बाद कारवाँ बंजर धरती से होकर चलने लगा। सूर्य की किरणें चट्टानों पर आग बरसा रही थीं। धधकते हुए नेत्र की तरह सूर्य बिना पलकें गिराये ताक रहा था। सुल्तान बिना कहीं बीच में रुके नरवलगढ़ के हरे-भरे राज्य की ओर बढ़ रहा था, जो उसके लिए मृगजाल बना हुआ था। अन्त मे क़िला दिखायी पड़ा। क़िले की भूरी विशाल दीवारें पहाड़ी की ऊँची-नीची ढलान पर दूर तक फैली हुई थीं।

यहाँ उन्होंने अपनी सेना को दूसरे ढंग से खड़ा किया। क़िले के सिंहद्वार से जाने के लिए निहालदे की पालकी को सबसे आगे रखा गया। उसके पीछे निहाम की दासियाँ थीं। औरतों के पीछे सुल्तान अपने खूबसूरत सफ़ेद घोड़े पर सवार

था। उसके दोनों ओर गोमू और जामी थे। उनके पीछे सेनापति और फौज थी।

पालकी सिंहद्वार पर पहुँचो। वह बन्द था। रास्ता रोके बीसियों सैनिक खड़े थे। पहले तो वह विश्वास नहीं कर सकी। उसका सिर झुक गया जब उसने देखा कि रास्ता रोकने वाले राजा का आज्ञापत्र दिखला रहे हैं कि वहाँ वे क्यों खड़े हैं। जीवन में उसने बहुत-से अपमान सहे थे, मगर नरवरगढ़ में उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी।

उसे ताज्जुब हुआ "सुल्तान मारू का अपनी बहुत कहता है, फिर क्यों राजा उसे भीतर नहीं घुसने देते?' एक प्रकार की कुत्सित बात निहाल के शान्त प्रसन्न मन में उठी—क्या मारू और सुल्तान के बीच कुछ है? उसने बड़ा प्रयत्न किया कि ये विचार दब जायें।

विचित्र भाव से सुल्तान ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया। लेकिन दरवाजा उसके लिए भी बन्द था। उसने घोड़ा घुमाया और पीछे ले आया। कैसे उल्लासपूर्ण स्वागत की आशा उसे थी पर यहाँ दरवाजा उसके लिए बन्द है! अब पीछे लौटना तो असम्भव था। वह ओमर्दूमर से लड़कर उसे पराजित नहीं करना चाहता था, जिसकी पत्नी ने उसे भाई मान लिया था। घबराया हुआ वह प्रवेश द्वार के मेहराब तले खड़ा रहा। डूबते सूर्य की अन्तिम किरणें उसके शिरस्त्राण पर चमक रही थीं।

:: ५० ::

पहाड़ी पर एक जलधारा थी। उससे एक सोता क़िले के जलागार तक ले जाया गया था। जहाँ वह नहर क़िले में प्रवेश करती थी, वहीं पर एक घेरा था। दो बाघ निगरानी के लिए वहाँ रखे गये थे। सोते का मूल स्रोत कहाँ है यह एक गुप्त बात थी। चुने हुए कुछ लोग ही इसे जानते थे। अगर कोई उसे किसी तरह जानकर वहाँ पहुँचता तो बाघ उसे मार डालते।

गोपू ने कहा, "मैं उसके मूल स्रोत के बारे में जानता हूँ, फिर भी मुझे सुबह तक वहाँ पहुँच जाना चाहिए, नहीं तो लोग मुझे पहचान लेंगे। इसके अलावा अगर बाघ गरजे तो सैनिकों का ध्यान उधर बँट जायगा।"

'बाघ तुम पर कूदें तो कूदने दो, हम लकड़ी की कीलों लगी ढाल बनवा देंगे। उससे तुम्हारा बचाव हो जायगा। सुल्तान ने दिलासा देते हुए कहा।

झटपट लकड़ी की एक ढाल तैयार की गयी जिसमें कीलें जड़ी थीं। गोपू ने ढार खोलने में अपनी मदद करने के लिए तीन सैनिकों को चुना।

जब शाम का अँधेरा फैलने लगा, तो वे अपने गन्तव्य स्थल की ओर चल पड़े। उन्हें पहाड़ी की चढ़ाई के उस तरफ़ पहुँचना था जिधर से नीचे उतरकर क़िले के पीछे की ओर जाने का रास्ता था। और कहीं से वहाँ पहुँचना असम्भव था। तृतीया का चन्द्रमा हँसिए की तरह आकाश में लटका हुआ था। इससे उन्हें बीच के ऊबड़-खाबड़ स्थानों को पार

करने में कुछ सहायता मिली। चन्द्रमा इस समय टीले के पीछे था, और पहाड़ी की दूसरी ओर था अँधेरा। टीले के दूसरी ओर कुछ झोंपड़ियाँ थीं। वे उनके निकट पहुँचे, तो एक कुत्ता भूँकने लगा। गोपू ने रुककर इशारा करते हुए कहा, 'हम उधर से चलेंगे, नहीं तो रास्ते में खो जायेंगे।'

कुछ सोचने के बाद उन्होंने जंगल की ओर से झोंपड़ियों के पार निकल जाने का तय किया। पर जंगल इतना घना था कि झाड़ झंखाड़ से उनके कपड़े फट गये और हाथों में खरोंचें पड़ गयीं। लकड़ी की डाल लेकर चलना भी नामुमकिन हो गया, इसलिए वे बस्ती के इस तरफ़ ही बाहर आ गये।

"चलो अपनी क़िस्मत पर भरोसा करो" गोपू बोला।

जल्दी-जल्दी वे अपनी मंज़िल की ओर बढ़ चले। पहुँचने में उन्हें देर हो रही थी। पर जल्दी-जल्दी चलकर वे आधी रात को सोते के पास पहुँचे। उनके हाथों में खरोंच लगने से खून जम गया था। सोते के स्वच्छ जल में उन्होंने हाथ धोये। फिर लकड़ी की डाल को अपने सिर पर रख वे एक-दूसरे के पीछे-पीछे चलकर नहर में डुबकी लगा गये। साँस रोककर वे चलते रहे और जब दूसरे किनारे पर पहुँचे तब लगभग उनका दम घुट चुका था।

बाहर निकलकर साफ़ हवा लेने के लिए वे खड़े ही थे कि एक बाघ अँधेरे रास्ते से बाहर निकला। उसने अपना भारी भरकम शरीर हिलाया और वह कुछ क़दम आगे बढ़ा और कूदने के लिए तयार हुआ। गोपू ने जैसे ही डाल को ठीक किया, कि बाघ गरजकर कूद पड़ा। डाल में लगी बड़ी-बड़ी

कीलें उसकी देह में घुस गयीं। उन्होंने लाश वहीं छोड़ दी, और वे चुपचाप घेरे व सीखचों की ओर बढ़े। उनमें से एक उस पार जा चुका था जबकि दूसरा बाघ धीरे धीरे सामने आ खड़ा हुआ। तीनों बिना हिले डुले हाथों में कटारें थामे खड़े रहे।

बाघ घूरता रहा फिर गुर्राया और दहाड़कर पीछे लौट गया। यह उनके लिए बहुत अच्छा मौक़ा था। वे घेरे के पार हो गये।

सुबह होने ही वाली थी पर क़िस्मत ने उनका साथ दिया। बिना किसी दुर्घटना के उन्होंने क़िले को पार किया। फाटक पर चार सन्तरी खड़े थे। वे छिपकर फाटक तक पहुँचे और गोपू ने उनमें से दो पर दो कटारें फेंकीं। दोनों गिर पड़े। गोपू उन बच रहे दोनों के लिए अकेला ही काफ़ी था मगर चार आदमी देखकर वे दोनों डर गये। गोपू ने बढ़कर ताले खोले। दरवाज़ा बहुत भारी था इसलिए दो सन्तरियों को भी दरवाज़ा खोलने में मदद करने के लिए मजबूर किया गया। विशालकाय दरवाज़ों के खुलने के साथ ही सुल्तान की सेना हज़ारों कंठों से दहाड़ती क़िले में प्रवेश कर गयी।

:: ५१ ::

सुबह होने के पहले ही सबको पता चल गया कि सुल्तान आ गया है। जौहरी रम्भा भी सुल्तान के साथ आ मिला।

"इन दिनों राजा का सलाहकार कौन है ?' सुल्तान ने पूछा।

"नारसिंह नाम का एक आदमी है मगर किसी को पता नहीं कि वह कहाँ से आया है। वह अपने को एक घुमक्कड़ कहता है।'

सुल्तान के दिमाग में एक आवाज गूँज उठी। वह सोने में घानी-मानी करने लगा। फुसफुसाकर बोला शायद वह अब भी सुन ले।

'नहीं राजा अब सलाह के परे पहुँच चुका है। एक अरसे से उसने अपने विश्वासपात्रों से सलाह लेनी बन्द कर दी है।

"रत्ता, तुम एक काम करो। नारसिंह पर नजर रखो। पूरी बात का पता लगाओ।'

सुल्तान को वे दिन याद आये जब वह यहाँ रहता था। व्यापारियों के चौक से वह खूब वाकिफ़ था। वह चौकोर आँगन व गोदामघर और चक्करदार सीढ़ियाँ, जो रहने के कमरों से होती हुई ऊपर को घूम जाती थीं। उसे वह दिन भी याद आया, जब उसकी विदाई की वेला यह सारा चौक भरा हुआ था। शायद, अब कोई अगर उसे अपना दोस्त बताये, तो राजा उससे विद्वेष करेंगे।

वह ढोलकुँवर के पास पहुँचा। ढोलकुँवर दुर्बल हो गये थे। उनका चेहरा बीमार मालूम पड़ता था। पीने की लत और पकड़ गयी थी, और वे सारे दिन नशे में चूर रहते थे।

राजा ने कुछ नहीं कहा न सुल्तान का मामला सुलझाने

की कोई इच्छा प्रकट की। इस पर प्रजा में क्षोभ और घृणा भरने लगी।

वृद्धसिंह को भी पता चल गया कि मुल्तान आ गया है। दुनिया का खूब देख भूकन और मुल्तान की साक्षा जानने की वजह से उसने दूसरा स्थान स्वीकार कर लिया। मगर मेघसिंह नहीं माना, "पिताजी, मारू पहले हमारा स्वागत करे नहीं तो हम उत्सव में भाग नहीं लेंगे।"

"मारू, तुम्हारी छोटी बहन है। लोग क्या कहेंगे, अगर तुम उससे लड़ोगे?"

'ठीक है, तब मैं मुल्तान को मारू के महल तक पहुँचने से रोकूँगा। वह पहले मुझसे युद्ध करे।'

मेघसिंह ने अपनी दस हजार सेना बुलाई, और उसे मारू के महल के रास्ते में अड़ा दिया। इससे मुल्तान बड़ी दुविधा में पड़ा। "मैं मारू के भाई से नहीं लड़ूँगा। साथ ही, अगर इस चुनौती के बाद मैंने दूसरा पद स्वीकार कर लिया तो मेरा घोर अपमान होगा।"

ज्ञानी समझ गया कि मुल्तान को क्या कष्ट हो रहा था। उसने इस झंझट को खत्म करने का एक अपना तरीका भी सोचा। मगर वह मुल्तान से कहेगा तो वह तैयार नहीं होगा। इसलिए वह खुद सोचकर रात की बाट देखता रहा।

मारू को मुल्तान के आगमन का पता चल गया। वह बड़ी खुश हुई। उसने मेघसिंह के हठ के बारे में भी सुना और वह गहरी चिन्ता में पड़ गयी। अपने वृद्ध पिता को उसने समस्या सुलझाने के लिए बुलाया, क्योंकि मेघसिंह और मुल्तान

दाता ही उसका मान करते थे। मगर बुधसिंह ने कुछ भी सुनने से इनकार कर दिया।

रत्ना चौक पार कर के बाजार की ओर आ रहा था कि उसने देखा कोई नारसिंह से बात कर रहा है। देखते-देखते ही आगन्तुक घोड़े पर चढ़कर सरपट चल दिया। नारसिंह बाजार में कहीं गायब हो गया। थोड़ा मुश्किल से चौक के छोर तक पहुँचा होगा कि ठोकर खाकर गिर पड़ा। सवार भी दूर जा गिरा और पत्थर से टकराकर बेहोश हो गया। रत्ना तुरन्त उसके पास पहुँचा और उसे अपने घर पर ले गया। कुछ देर बाद सवार को होश आया तो उसने पूछा 'मैं कहाँ हूँ ?'

रत्ना ने जवाब दिया 'डरो मत तुम मित्रों के यहाँ ही हो।'

लेकिन मेरा यहाँ तो कोई मित्र नहीं है।

अगर तुम नारसिंह के मित्र हो तो मेरे भी हो।

नारसिंह का नाम सुनते ही सवार की जबान खुल गयी। उसने सब कुछ रत्ना को उगल दिया। वह रघुकोट का था। 'मैं राजा गर्ग की ओर से नारसिंह का सन्देश लाने-ले जाने के लिए नियुक्त हुआ हूँ यद्यपि मुझे पता नहीं चलता कि उन सन्देशों का मतलब क्या होता है।

शाम तक सवार चंगा हो गया और रत्ना से विदा लेकर वह चल दिया।

करने आते थे। उस दिन राजा और रानी राजकुमारी के साथ वहाँ पूजन करने आये और आकाश में चमकते सूर्य ने *अपनी शुभ्र किरणों से निहालदे पर आशीर्वाद बरसाया।* उस दिन निहालदे को स्वयंवर में अपना जीवन-साथी चुनना था और यह पूजा का विशेष अवसर था।

पहाड़ी की ओर के घने जंगलों के सामने प्रातःकालीन प्रकाश में महल का प्राचीर सुशोभित हो उठा। मत्स्य-लक्ष्य के चारों ओर सभी राजे और राजकुमार एकत्र हो गये। किशोर, तरुण, प्रौढ़ और दाढ़ी-बाल हँसते-बोलते दो-दो, तीन-तीन एक साथ खड़े थे। कुछ के मुकुटों पर मोर-पंख लगे थे कुछ के सिरों पर छोटे-छोटे ताज थे। वे वहाँ खड़ी स्त्रियों के सामने अपना कौशल प्रदर्शित करते हुए दिखाई पड़ रहे थे। निहालदे को घेरे हुए स्त्रियों ने अधीरता से साँस को रोक रखा था। सुल्तान शान्ति और निर्भयता से कामरूप राव के पीछे खड़ा था।

बारी-बारी से चारणों ने राजकुमारों और राजाओं की विरुदावली सुनानी शुरू की। प्रत्येक से राजा साधु ने प्रार्थना की कि वह अपने बाण से मछली की आँख को बेधे। हरएक बड़ी आशा बाँध आता और निराश हो वापस चला जाता। अन्त में फूलकुँवर का नाम पुकारा गया। उसे अपने ऊपर इतना अधिक विश्वास था कि वह बड़ी शान से उठकर लक्ष्य की ओर बढ़ा। क्षण भर के लिए निहालदे काँप गयी। कुछ भी हो वह उससे ब्याह करना नहीं चाहती थी। जब बाण छोड़ा गया, तो वह आँख में लगने के बजाय मछली की

:: ५२ ::

अगर किसी को किले की गलियों सुरंगों गुप्त दरवाजों और चक्करों का पता था तो वह आनी को ही था। उससे कुछ भी नहीं छिपा था। अँधेरा होते ही वह अपने काम पर चल पड़ा। हल्की चाँदनी रात थी। वह मकानों की आड़ में चलता रहा।

बुद्धसिंह राजकीय अतिथिगृह में ठहरा हुआ था जो महल के सामने था। भूमिगत सुरंग से महल उससे जुड़ा हुआ था। दोनों के बीच में थोड़ी-सी खाली जगह थी जहाँ कुछ सिपाही पहरे पर रहते थे। मगर राजा के महल में छिपकर आना आसान था।

वह अस्तबल में घुसा। चूँकि बहुत-से साईस इधर-उधर फिर रहे थे अँधेरे में कोई उसे पहचान न सका। अस्तबल के अन्त में एक बड़ा दरवाजा था जिसमें कोई सवार घोड़े पर बैठकर भी निकल सकता था। दरवाजा खुला था। वह उसमें प्रवेश कर गया। दूसरी ओर एक छोटा दरवाजा और था। वह जानता था कि पीछे से लकड़ी की आगल बन्द था। उसने अपने कपड़े निकालकर ज़ोर लगाया और आगल टूट गयी। दरवाजे की एक ओर राजा के शयनागार में पहुँचने की सीढ़ियाँ एक गुप्त द्वार के पीछे थीं। इस सतपर के अन्त की तरफ एक सुरंग था जो अतिथिगृह में खुलती थी। चारों ओर सिर्फ दीवारें ही-दीवारें थीं मगर, पत्थर के कारीगरों पर सारसापन था। उसने एक कोने में जाकर अपने हाथों से दीवार नापी। ठीक नाप के ऊपर उसने पत्थर पर

निशाना लगाया और हथा मारने से उसे पता चला कि वह खोखला है। उसने एक छेनी उठायी और पत्थरों के जोड़ पर से चूना छीलना शुरू किया। चूना गिरने लगा, और पत्थर ढीला पड़ गया। उसने पूरी ताक़त लगाकर पत्थर खींचा, और उसे हटाकर पास के दूसरे पत्थर को ठेला। वह दरवाज़े की तरह खुल गया। सामने एक खोखली सुरंग थी।

जानी ने एक फरवा जला सुरंग में प्रवेश किया। जल्द ही वह मील-जितनी लम्बाई पार कर गया, और दूसरी तरफ़ के तलघर में जा पहुँचा। फिर सीढ़ियाँ थीं और वह एक बड़े कमरे की ड्योढ़ी में आ गया। कमरे में एक बड़ा सन्दूक रखा हुआ था। जानी ने बड़ी चतुराई से उसे खोला। जो कुछ क़ीमती सामान उसमें था उसे निकालकर जानी ने एक थले में रख लिया और सन्दूक बन्द कर दिया। इसके बाद वह राजा के महल में आ गया, और गुप्त दरवाज़े से राजा के शयनागार में पहुँचा। उस रात डोगरकुँवर मारू के पास गये थे इसलिए थैले को राजा के पलंग के नीचे रखने में कोई कठिनाई नहीं हुई। फिर उसी रास्ते होकर वह घुड़साल की ओर चला आया।

साईस सभी जा चुके थे। दरवाज़े पर सिर्फ़ कुछ रक्षक थे। जानी ने सोचा कि आज की रात किसी घुड़साल में ही छिपकर काटनी होगी। सबेरे जबकि साईस लोग घोड़ों को फिराने ले जायेंगे तब निकल भागने में आसानी होगी।

सुल्तान के साथ की बातचीत में हिस्सा लेने को वह तैयार था। सूरज उग चुका था और उसकी किरणें रंग बिरंगे रेशमी शामियानों और तम्बुओं पर पड़ने लगी थीं।

गोपू और जानी ने अपनी राय जाहिर की। सुल्तान ने फूलकुँवर की ओर देखा हालांकि वह जानता था कि उसके भीतर बड़ी जलन हो रही है, इसलिए जो कुछ वह कहेगा उस पर कुछ किया नहीं जा सकेगा। तब भी सुल्तान उसका अपमान नहीं करना चाहता था।

जब सब लोग बोल चुके तो चन्द्रसिंह खड़ा हुआ और कहने लगा "अगर मुझे कहने की आज्ञा दी जाय तो मघसिंह के सामने यह प्रस्ताव रखा जाना चाहिए कि हम ठीक दोपहर को चौक में मिलें और दोनों साथ-साथ मान के उपहार ले चलें।'

सुल्तान को यह बात पसन्द आ गयी। सुल्तान अतीत और भविष्य—दोनों से सीखना चाहता था। पिछली परम्परा के अनुसार मघसिंह को मान के महल में पहले जाने का अधिकार था। उसने गोपू को अपना दूत बनाकर भेजा। मघसिंह ने युद्ध की निरर्थकता समझ ली थी, क्योंकि उसमें वह जीत नहीं सकता था। उसने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

— ५३ —

उसने हीरे का कण्ठहार पहना जिसका एक-एक हीरा सारे देश से चुन चुनकर मँगाया गया था। उसके सिर पर मुकुट था जिसके बीचोबीच जड़ा लाल बदख्शां से आया था। उसने बनारसी कीमखाब का लहँगा पहना, जिसे बुनने में कुशल

जुलाहों को ७ माह लगे थे। दुपट्टा उसका इतना महीन था कि उसे छह बार तह करने के बाद भी ऐसा लगता कि वह सिर्फ़ अंगिया पहने हुए है। उसने अपनी बरौनियों को फिर देखा, और जहाँ-तहाँ उन्हें काजल से रंग लिया।

उसने उस दिन खास सजधज से कपड़े पहने। वह अपने आपको माह से भी अधिक सुन्दरी दिखाना चाहती थी, पर थी वह काफ़ी घबराई हुई। अन्तिम बार जब वह शीशे के सामने खड़ी हुई, तो सुल्तान वहाँ आ पहुँचा। एक क्षण आश्चर्य से ताकते हुए उसने पुकारा — अरे निहाल! बढ़े गये से सुल्तान की बाँह पकड़ निहालदे पत्थर की सीढ़ियाँ उतर कर पालकी में बैठ गयी।

सुल्तान भी सवार हो गया। वह उत्सव के अनुरूप ही वस्त्र पहने था। सफ़ेद घोड़े पर चढ़कर वह चौक में पहुँचा। आकाश के नील मीन की छाया में उसका चेहरा ताँबे की तरह चमक रहा था। काली बरौनियों की मेहराब तले उसकी आँखों में दया और प्यार उमड़ रहा था। वह सेनापतियों के साथ था और एक हज़ार घुड़सवारों का रक्षक-दल उसके साथ था। उनके अनाथ घोड़े सड़क पर उड़ते ऐसे दीखते मानो उनमें वज़न है ही नहीं। घुड़सवार कीनख़ाब के कमरबन्द बाँधे ऐसे दिख रहे थे जैसे वे हवा पर ही सवार हों और उनके कलगियाँ साफ़ पीछे की तरफ़ उड़ रहे थे। निहालदे और उसकी सखियों की पालकियाँ गोखू और जानी की देखरेख में चल रही थीं।

फूलकुँवर एक लाल घोड़े पर सवार था, और वैद सौ

प्यादे बड़े-बड़े थाल लिये उसके पीछे चल रहे थे। वे बहुमू
मणियों से भरे थे।

मयसिंह और उसके पिता बुद्धसिंह भी अपने आत्मिय
के साथ आ गये। एक बड़ा सन्दूक चार आदमियों के कन्ध
पर लाया जा रहा था। साथ में बोसियों योद्धा थे। मयसिंह
थाम बढ़कर सुल्तान की बगल में खड़ा हो गया और जुलूस
माफ के महल की ओर बढ़ा।

शहर की सड़कें खचाखच भर गयी थीं। रूपकंवर ने
एक-एक करके अपने आदमियों को पास बुलाया और दोनों
हाथों से हीरे-जवाहरात लुटाता गया। तमाशबीनों में उन्हें
लूटने के लिए धक्कम धुक्की होती रही। इस तरह वे महल
के सजे-सजाये द्वार पर पहुँचे।

मणियों से जड़ा थाल हाथ में लिये माफ आरती उतारने
के लिए खड़ी थी। जड़ाऊ हरा और लाल कण्ठहार उसके गले
पर चमक रहा था। उसने मुट्ठीभर हीरे उठाये और अर्जुन को
भगाने के लिए सुल्तान के माथे के ऊपर से फेंके। सुल्तान के
स्नेह को देखकर उसका दिल कचोट उठा। उसे यह सपना-सा
मालूम दिया कि इतना शक्तिशाली और उदार पुरुष उसकी
सारी दूरी पार कर निकट उसके महल पर ही चला आया।

रूपकंवर सुल्तान के औदार्य से चकित हो माफ के पास
एक तरफ खड़ा था।

माफ बोली "महल भाई सुल्तान प्रवेश करें।"

मयसिंह चुपचाप खड़ा था। उसके चेहरे का रंग उड़ गया।
सुल्तान ने बीच में ही टोककर कहा "नहीं बहन मेरा

बहुत सम्मान हो चुका, असल में मेघसिंह का हक़ है पहले आने का।

माक आगे आयी। मेघसिंह की आन्तरिक उथल-पुथल को अनदेखी करती हुई माक ने उसका हाथ पकड़कर भीतर कर लिया। मेघसिंह काँप गया। वह जानता था कि अपनी बहन द्वारा वह इस तरह कभी अपमानित नहीं किया गया था। और अब वह उस अपमान पर पर्दा डाल रही है। तीव्र आकुलता को बग़ैर बताये वह बिना कुछ बोले नीचे ताकता हुआ खड़ा था पर भीतर-ही भीतर उसका क्रोध उबल रहा था और उसके चेहरे पर भी उसके भाव उभरने लगे थे। यकायक बुद्धसिंह जो मेघसिंह के पीछे था, बोला, "हमारे उपहार लाओ।

उसके आदमी सन्दूक को भीतर ले गये, तब तक द्वार पर सुल्तान और उसके सैनिक खड़े रहे।

मेघसिंह सन्दूक के पास आया। माक आश्चर्य से देखती रही। एक नौकर ने चाबी घुमाकर ताला खोला। उसने कुछ चीथड़े बाहर निकाले। मेघसिंह गुस्से मे लाल हो गया। वह चिल्लाया, "यह कौन-सा सन्दूक ले आये ?'

हमसे यही लाने को कहा गया था। यहाँ और कोई सन्दूक था ही नहीं। नौकर ने सकपकाकर कहा।

मेघसिंह स्तम्भित हो उठ गया। माक मन्द-मन्द मुस्कराती रही 'उपहार तो भ्रातृ-स्नेह के आगे तुच्छ वस्तु है। मुझे तो तुम्हारे स्नेह पर ही गर्व है।'

डोमकुँवर, जो अभी तक चुपचाप सब कुछ देख रहे थे,

अब अपने को नहीं रोक सके 'क्या इन्हीं चीथड़ों के लिए तुम सुल्तान के पद से होड़ लगा रहे थे? मारू तुम्हारी बहन हो सकती है पर यह मत भूलना कि वह नरवलगढ़ की महारानी भी है। तुमने उसका अपमान करने की हिम्मत कसे की ?

मुर्दासिंह मुसकुराया हमें लूट लिया।

ढोलकुँवर चिल्लाये तुम मेरा अपमान करना चाहते हो ? मेरे राज्य म कोई एक पत्ता भी नहीं खड़का सकता।

निराश होकर पिता और पुत्र दोनों चले गये। उन्होंने अपने को इतना अधिक अपमानित अनुभव किया कि अपने डेरे तक भी नहीं लौटे, बल्कि अपने आदमियों के साथ वहीं से वापस चले गये। यह मुर्दा घुड़सवारों का जुलूस था।

-- ५४ --

रूपादे का दूल्हा एक छोटे-से इलाके का सामन्त था मगर था बड़ा तेज। पहली बार मिलते ही दूल्हा-दुल्हन दोनों एक-दूसर को चाहने लगे। सुल्तान ने लाल और हीरों से जड़ा एक मुकुट रूपादे को भेंट किया। दूल्हे को उसने सोने के म्यान म रखी एक बड़ी खूबसूरत तलवार भेंट दी। मारू को उसने मुर्गी के अडे क बराबर दो पन्ने दिये। फिर उसने एक छोटा सा डिब्बा खोला और उसके भीतर की चीजें पास म बिखेर दीं। लगता था कि सूर्य के प्रकाश म विविध रगों की आग चमक उठी हो। हीरे-माणिकों से जड़ी अलग अलग रगों की

सकती अँगूठियाँ और झटकनें थीं। मारू लज्जा से लाल हो गयी। इतनी बहुमूल्य चीजें कोई भी यहाँ तक कि उसके पति भी उसके लिए नहीं लाते।

नरवलगढ़ से अलग होने के बाद पहली बार वे यहाँ मिले थे। तब सुल्तान आश्रित था मारू और ढोलकुँवर पर किन्तु आज वह एक स्वतन्त्र शक्तिशाली राजा था।

रानी के समक्ष उपस्थित होते समय जो औपचारिकताएँ बरती जाती हैं सुल्तान उन्हें पूरी तरह निभाया करता। पर अब वह इनसे परे था बल्कि उसके जैसे इतने बड़े प्रतापी राजा के सामने दूसरों को औपचारिकताएँ करना जरूरी था। फिर भी एक बहन के प्रति भाई का जो व्यवहार होना चाहिए, उसे उसने बहुत खूबी से निभाया। मारू का यह नया रिश्ता बहुत भाया। स्वभाव से भी उसे दरबारी रुकाव और क़ायदा की गुलामी से चिढ़ थी। वह स्वाधीन रहना चाहती थी उस चिड़िया की तरह जो खुलकर गा सके सीटियाँ बजाये और जहाँ चाहे उड़ सके।

सुल्तान से अपने और पति के सम्बन्धों के बारे में— चाहे वे कितने ही नाजुक क्यों न हों, बहस करने में वह कभी सकुचायी नहीं। उसने पति की रसम नरवलगढ़ की ज़िन्दगी, और दरबार के हँसी-मजाक की भी बातें कीं। फिर दोनों खूब खुलकर हँसते रहे। कभी कभी सुल्तान भी अपने से सम्बन्धित घटनाएँ सुना देता था। वे उन पुराने दिनों की चर्चा करते, जब कि वह यहाँ रहा था। मारू उससे इतने मान और प्यार से पूछती थी कि सुल्तान यह भूल जाता कि वह कहाँ है और

वह सब-कुछ बता देता। एक दिन उसने निहालदे से हुई पहली भेंट का भी पूरा विवरण सुनाया। और इस तरह समय बीतने नहीं बल्कि भागने लगा।

वह सुल्तान की ओर ऐसी भावपूर्ण आँखों से देखती और इस तरह मुस्कराती जैसा किसी और को देखकर नहीं। वह उन्मुक्त होकर गर्व से चलती। ऐसा किसी ऐसे व्यक्ति के सामने यही स्त्री कर सकती है जिसका उसके लिए कोई अर्थ हो।

आज भी वह उससे अधिक उम्र की नहीं मालूम देती थी जितनी कि पहली बार सुल्तान से मिलने पर प्रतीत हुई थी। वह दीवान पर आँखें खोले लेटी रहती और वे आँखें विचारों में खोयी-सी रहा करती थीं। कोहनी का सहारा ले कर वह लेटी हुई थी और उसके सामने बैठने वाले को उसके दोनों भरे-से उरोज जरूर एक नजर देख पड़ते। उसे यह भी खूब अच्छी तरह मालूम था कि वह चर्चा का विषय बन गयी है। मारू में सौभाग्य था, और साथ ही एक प्रकार का अहं भी जिसके द्वारा वह सुल्तान में तीव्र आकर्षण जगाना चाहती थी। पहले भी उसने कई बार इस ओर कदम बढ़ाये थे किन्तु अन्त में वह हिम्मत हार बैठी थी। अगर सुल्तान आज भी कोई संकेत करता, तो वह शायद इनकार न करती। यद्यपि सुल्तान भी कभी-कभी इच्छाओं के लहराते झोंकों में बहकर उसकी ओर झुकता मगर उसने मन अपने को अवश होने से रोक लिया।

स्वयं मारू भी अब नहीं चाहती थी कि वह सुल्तान और निहालदे को एक-दूसरे से दूर कर दे। जब कोई नतीजा नहीं

निकलना था, तो अपने को सामने से फ़ायदा ? उसके पति ने सब कुछ उस पर ही छोड़ रखा था । अब वह पूरी तरह राज भोगती रानी थी । साथ-साथ सुल्तान का वहीं पर रहना उससे खूब बातें करना, उसके साथ हँसी-मज़ाक़ करते रहना भी उसे कितना अच्छा लगता था । नहीं, वह यह सब खोयेगी नहीं।

निहालदे इधर-उधर घूमकर बड़ी व्यस्त रही । वह समदबुर्ज भी गयी जहाँ सुल्तान ने अपने निर्वास के पाँच वर्ष बिताये थे । पनिया पठान ने अवकाश ग्रहण कर लिया था और उसकी जगह अब दूसरे ने ले ली थी । वह भी पहले अवसर सुल्तान के साथ गया था और अपने अटूट साहस के लिए प्रसिद्ध था । क़िला तो यह था ही, सौन्दर्य और कला का भी यह केन्द्र था । निहालदे ने घूमकर सब ओर देखा । वहाँ के लोगों ने बड़ी धूमधाम से उसका स्वागत किया और उसके आगमन पर एक शानदार दावत दी । उसने सुल्तान द्वारा बनवाई झील में भी जाकर स्नान किया । उसकी सखी सहेलियों ने भी उसमें डुबकी लगायी । उस दिन बानी उनकी रखवाली पर था । उसने खूब विस्तार से उस घटना का वर्णन किया जब भीमसिंह ने नाक का उड़ाने की कोशिश की थी ।

रत्ना जौहरी की पत्नी मेदना ने निहालदे को अपने यहाँ आमन्त्रित किया ।

जब निहालदे पालकी से उतरी तो मेदना ने उसके सम्मुख झुककर कहा "मैं यहाँ आपका स्वागत करने वाली कौन हूँ ? यहाँ सब कुछ आपका ही है । यह भाई सुल्तान की दया का फल है, कि हम अभी तक इतनी मौज से हैं ।"

पूँछ से आ निकला। फूलकुँवर हताश! उसकी शान मिट्टी में मिल गयी।

महाराजा माथ भी बड़े चिन्तित हुए, क्योंकि सभी ने प्रयत्न किया, पर किसी को भी सफलता न मिली। कोई भी अगर सफल न हुआ तो क्या निहालदे कुँवारी ही रह जायगी!

महाराजा कामध्वज आगे आकर बोले—"मेरा एक और यह भी मेरा बेटा ही है और मुझे विश्वास है कि वह आपकी शर्तें अवश्य पूरी करेगा। मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आप उसे और अवसर दें।"

इससे महाराजा माथ के मन में कुछ आशा जगी और उन्होंने राजकुमार सुल्तान को लक्ष्य बेधने के लिए बुलाया। उपस्थित जन-समुदाय उसकी ओर अचरज से देखने लगा। महाराजा कामध्वज ने उसकी पीठ थपथपाई और कहा—"जाओ मारो निशाना।"

निहालदे काँप गयी, 'अगर सुल्तान भी असफल रहा तो? हे भगवान् लाज रख लो।"

सुल्तान धनुष-बाण लेकर बड़ी विनम्रता से आगे आया। तैल-पात्र के निकट खड़े होकर उसने परछाईं में देखकर निशाना साधा और जब तक लोग देखें कि धनुष से बाण छूटा तब तक मछली की आँख बींधी जा चुकी थी।

राजकुमारी निहालदे नायक की ओर बढ़ी। आवेश से उसका हृदय धड़क रहा था। लज्जा से उसका चेहरा लाल हो रहा था। तो भी साहस बटोर कर वह आगे बढ़ी और जयमाला सुल्तान के गले में डाल दी। एक दूसरे की आँखें

निहालदे को सुल्तान और जिन के युद्ध के बारे में पता तो था पर वह ऐसे साहसिक कार्यों के बारे में सुनना चाहती थी। मेदना ने उसे सारा क़िस्सा बताया। इस तरह उसके दिन ऊपर से खुशी से बीतने लगे मगर भीतर-ही भीतर उसके दिल में एक अजब थी।

पहले ही दिन से सन्देह का जो बीज उसके दिमाग़ में पड़ा था वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। जब सुल्तान को निर्वासित कर दिया गया तो वह उन दुखद घटनाओं को भूल गयी थी। लेकिन अब वह उनके दिल में घर करने लगीं। वह उदास रहने लगी।

अपनी दो दासियों को बातें करते एक दिन उसने सुना 'मैंने देखा कि राजा सुल्तान आज आकर जिनकी अल्पी बन गये।'

"मैं जानती हूँ कि बहनापा दिखलाने के बहाने मारू क्या चाहती है। जरूर

निहालदे की आहट पाकर वह एकदम चुप हो गयीं।

निहालदे ने अपना चेहरा घुमा लिया। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो उठा था। अच्छा अब औरों में भी यह चर्चा शुरू हो गयी उसने सोचा। अब तक ऊपर से खुशी का जामा पहने थी पर अन्त में यह खाल भी बिल्कुल फट गयी।

दौड़ती हुई वह अपने कमरे से निकली। कपड़ों तक की उसे सुध-बुध नहीं थी। दुपट्टा कन्धे से नीचे गिरकर उसके पीछे घिसटता रहा। अपनी मोन चांगी की पालकी में जा बैठी, और उसके ४० कहार झाप हो उसे महल तक पहुँचाने चले।

पालकी से बाहर उतर निहालदे उछलती तीन सीढ़ियाँ चढ़कर बरामदे में जा पहुँची। वहाँ परदा टँगा हुआ था, और खाली फाँक से रोशनी आ रही थी, जिससे पता चलता था कि अन्दर कमरा रोशन है। उसने परदे को हटाकर भीतर का दरवाजा खोला। मारू हरी पोशाक पहने दीवान पर लेटी हुई थी। पास ही, एक मोढ़े पर सुल्तान बैठा था दोनों हँस रहे थे। निहालदे ने होंठ काट लिये। उनकी बातें सुनने के लिए भी वह नहीं रुकी। वह बाहर की ओर दौड़ी। दुनिया को भुला वह चाँदनी रात के अँधेरे में भागती गयी। पेड़ों कुंजों की रगड़ से वह लहू-लोहान हो रही थी। सहसा एक उसे असह्य पीड़ा हो उठी। उसके उड़ते हुए केश एक कँटीदार झाड़ी में फँस गये थे, और वह चीख पड़ी।

सुल्तान और मारू ने एक साथ उसकी चीख सुनी। दोनों उठकर उसकी ओर दौड़ पड़े। सुल्तान सीढ़ियों से उतरकर दौड़ा सहसा निहालदे का दिल धड़क उठा। उसने अपने केश झटककर खींचे और दौड़ने वाली ही थी कि सुल्तान ने पीछे से बच्चे पकड़कर उसे अपने बाहुओं में कस लिया।

निहालदे जमीन पर बैठ गयी। 'तुमने मुझे डरा दिया।' वह बोला।

अच्छा तो वह तुम्हारी 'वह' है ?

'कौन क्या है ?"

"तुम्हारी रखैल।

क्या कह रही हो ?

'ठीक-ठीक सच्ची बात बता दो।

मेरी कोई रुसल-दलील नहीं है।'

'जो भी हुआ अब मुझे सब कुछ सच-सच बता दो।'

मान, जो झाड़ियों की आड़ में खड़ी थी, सामने चली आयी। उसने निहाल को सीने से लगा लिया और फफककर रोते हुए कहा 'मैं नहीं जानती थी कि बात यहाँ तक बढ़ जायेगी।"

पेड़ों पर चाँदी की झारियाँ नाच रही थीं। अँधेरे में उनके आँसू एक-दूसरे से मिल गये और उनमें निहालदे के दिल का मल बह गया।

सुल्तान ने उठने के लिए सहारा दिया और वे अपने खेम में चले गये।

सुल्तान ने फुसफुसाते हुए उससे कहा मेरी रानी!"

निहाल का मुँह खुला और उसने उसे चूम लिया।

"मुझे तुम्हारे ऊपर पूरा भरोसा है और तुम्हारे बिना मैं जीवित नहीं रह सकती। वह बोली 'पर अब घर चलो।"

सुल्तान ने तब जाना कि उसकी ऊपरी शान्ति एक छलना थी स्थिर लगभग जड़ बाह्य के अन्दर में भावनाओं का ऐसा अन्धड़ हो सकता है कि कोई सोच भी नहीं सकता।

:: ५५

सुबह की चमचमाती किरणों से सुल्तान की नींद टूट गयी। सुबह में ही बड़ी उमस थी। उसने उत्तेजित आवाज़ों

की गूँज सुनी। सागरसिंह पहरे पर था। सुल्तान ने खेमे से बाहर झाँकते हुए पूछा, "यह किस बात का शोर है?"

"वे कहते हैं कि मेघसिंह का जो माल चुराया गया था वह मिल गया है।

"कहाँ किसे मिला?

'वह एक थले में राजा के पलंग के नीचे रखा हुआ था। राजा ढोलकुँवर भी सुस्त हो गया है।'

सुल्तान को ताज्जुब हुआ। उसने पूछा "जानी कहाँ है?'

'अलस-सुबह वह महल की ओर जा रहा था।"

मगर उसने यह किया है तो महल में जाने की उसे क्या जरूरत थी?' सुल्तान सूत्र की तलाश में था। "मेरा मन नहीं मानता। उस पर शक करना अनुचित है।'

उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं रहा। मगर उसने देखा कि रानी का एक दूत उसकी ओर आ रहा है और अचानक उसे फिर घोर पीड़ा हुई। वह दूत के साथ चलने को तयार हो गया। उसे याद आया कि एक बार पहले भी रानी की एक दासी उसे समदबुर्ज से बुलाने आयी थी। आज दासी के बदले सेवक है। पर अब तक कोई बहुत गम्भीर बात न हो, मारू उसे नहीं बुलाती।

गोघू को आगाह करते हुए उसने कहा 'कोई मुसीबत हो तो हो सकता है हम तुरन्त चल पड़ें। तयार रहना।

मारू अपने निश्चित स्थान पर बैठी आगन्तुकों के स्वागत के लिए तैयार थी। वह जानती थी कि बात कैसे शुरू करनी

चाहिए। उसे अपना काम बनाना था। 'तुमने तो मुझे कभी कुछ देने से इनकार नहीं किया।

'हाँ, हाँ, मेरा जीवन तक तुम्हारा ही है।

'क्या मैं जानती नहीं ? पर यह दूसरी ही बात है। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए। नहीं यह बिल्कुल ग़लत था।' उसने लड़खड़ाती जबान से कहा लेकिन यह तो तुम्हारे ही लिए किया गया था इसलिए उसने सोचा और मैंने उसे माफ़ कर दिया।

पहले तो सुल्तान उलझन में पड़ गया, फिर कुछ समझते हुए बोला "क्या जानी के बारे में कह रही हो ? क्या बात है ?

वह विजित और विस्मित-सा हो उठा। मारू के चेहरे का रंग यकायक बदल गया। वह बोली मेरे भाई के उपहार ?'

सुल्तान अडवल् खड़ा था। अतीत और वर्तमान दोनों मिलने लगे। यह वही व्यक्ति था जिसे एक बार पहले भी क्षमा किया जा चुका था। मगर पहले वह चोर था इस बार उसने राज्य के प्रति ही अपराध किया है। मारू चुप थी। वह साँस रोके खड़ी थी शायद सुल्तान इनकार कर रहा है।

आखिर उसने जबान खोली 'ठीक है जभी तुम्हारी इच्छा नहीं तो उसने अपराध बहुत बड़ा किया है।"

मारू ने एक लम्बी साँस खींची 'मेरी दूसरी चिन्ता यह है कि मेरे पति और मेरे भाई में लड़ाई जरूर छिड़ जायेगी।'

'यह तुम मुझ पर छोड़ दो। भगवान पर म
विश्वास है।"

"मेरे पति शायद तुम पर भी क्रुद्ध हों। वे युद्ध
कायर हैं ही पर हारने में भी कायर हैं।

"मैं तुरन्त चल पडूँगा।"

मैं नहीं जानती थी कि इतनी जल्दी जाना होग
शायद तुम्हारे लिए यही ठीक है।

सुल्तान विदा लेकर चल पड़ा।

: ५६ :

सुल्तान जब जसलमेर के पास पहुँचा तो उसने
तैयारियाँ देखीं। सशस्त्र सैनिक ऊँटों पर चढ़े हुए गाँव
रहे थे। सम्बन्धी मित्र और विभिन्न कबीले सभी तैय
रहे थे। अच्छे ऊँटों को चुन चुनकर अलग किया जा रह
यह इलाक़ा ऊँटों के लिए मशहूर था। लगभग हर ग
ऊँटों को पैदा करने के काम थे। यहाँ के लोगों की आजी
के मुख्य साधन ऊँट और भेड़ की ऊन यही दो थे। पान
बहुत कमी थी। जो पानी था भी, उसे बहुत गहरे
खींचना पड़ता था। फ़सल भर के लिए भी पानी नहीं म
था। सिर्फ़ घास हो जाती जिसे भेड़ें चरती थीं।

सुल्तान की सेना बहुत थोड़ी रह गयी थी। क्या
सेनापति अपने सैनिकों के साथ अपने क़िलों में लौट गये

जानी और चन्द्रसिंह को रघुकोट और उसके राजा के बारे में पता लगाने का जिम्मा दिया गया था। मुल्तान और चन्द्रसिंह, दोनों बचपन के साथी थे। वह एक अच्छा जवान बन गया था और मुल्तान के लिए बड़ा उपयोगी था।

मुल्तान ने कहा, "मुझे फिर झंझट में मत डालना। जानी ने शर्म से सिर नीचा कर लिया।

चन्द्रसिंह की स्मरण-शक्ति अद्भुत थी। एक बार किसी जगह को देखकर वह उसे सदा याद रख सकता था। सिर्फ गोपू और फूलकुँवर अभी तक मुल्तान के साथ थे, और उसके पास १५ हजार सैनिक थे।

मुल्तान ने किले के सामने घोड़ा रोक दिया। बुद्धसिंह और मेघसिंह उसके स्वागत के लिए आगे बढ़े।

उन्होंने कहा, "हम अपने घर में तुम्हारा स्वागत करते हैं।" और घोड़ों से उतरकर मुल्तान और मेघसिंह कसकर एक-दूसरे से लिपट गये।

मुल्तान जल्दी ही बातचीत करके फुरसत पाना चाहता था। ज्यों ही वे महल के अन्दर गये, उसने पूछा, "ये तैयारियाँ किसलिए हो रही हैं?"

"मैं कायर सोमकुँवर को अलमनगाहल का मजा चखाना चाहता हूँ।

"यह उनकी गलती न थी। आप मेरी बात पर विश्वास करें। बुद्धिमान लोग अकारण नहीं लड़ा करते।"

"मगर उन्होंने हमारी बेइज्जती की। क्या हमारा अपमान नहीं हुआ?

"इसीलिए तो उनके बदले प्रायश्चित्त करने
मेरा एक प्रस्ताव है।'

मेघसिंह सोच विचार में पड़ गया। सुल्तान
"अगर आप उन पर चढ़ाई करते हैं, तो हमारी
दोमकुँवर का साथ देगी।'

"हम सच्चे राजपूतों की तरह कट मरेंगे।

'मुर्दे मान प्रतिष्ठापित नहीं करते।

'तब तुम्ही कहो, क्या करें ?'

सिर्फ मैं और तुम दोपहर से शाम तक लड़ें
ही तुम्हारी बात का फ़ैसला करेगी।

बुद्धसिंह ने कहा, मैं मानता हूँ कि सुल्तान
सर्वोत्तम है।

दोनों एक ही गठन और ऊँचाई के थे। मे
चेहरा देखकर सुल्तान को लगा कि वह उसे मान

महल के सामने अखाड़ा तैयार किया गया।
मेघसिंह ने सुल्तान की बात मान ली थी, तो भी रि
बड़ी बेचैनी मालूम पड़ रही थी। सुल्तान से लड़
कोई खुशी नहीं थी, क्योंकि वह सुल्तान की इज
चरित्र के लिए ही नहीं करता था बल्कि उसे वह
और भी मानता था।

सुल्तान और मेघसिंह दोनों घोड़े पर सवार होक
की ओर चले। ज्योंही सुल्तान उसके पास से निक
मेघसिंह की झिझक का पता चल गया। "तैयार

द्वन्द्वयुद्ध देखने के लिए सभी एकत्र हो गये थे। निहालदे बड़ी उदास थी। युद्ध का अन्त क्या होगा यह वह जानती थी। उसे पूरा शक था कि सुल्तान अपने प्रतिद्वन्द्वी का बचाव करके ही लड़ेगा।

तलवार की लड़ाई में कोई औपचारिकता नहीं होती। पर यह तो एक-दूसरे ही ढंग की लड़ाई थी। वे तलवार भाँजते वार बचाते, लपकते और एक-एक कदम आगे बढ़ाता हुआ सुल्तान अपने प्रतिद्वन्द्वी को ढकेलता उस ओर ले जाता जहाँ घोड़ों के झुंड खड़े थे, मगर उसने उसे घायल करने की कोशिश नहीं की। जब भी मेघसिंह मौका पाकर वार करता, सुल्तान घोड़े पर एक तरफ झुककर वार बचा जाता। इस तरह शाम तक लड़ाई होती रही। अचानक मेघसिंह आगे बढ़ा। सुल्तान अपने घोड़े पर दाहिनी ओर झुका मगर उसकी जाँघ बिना बचाव के रह गयी और मेघसिंह की तलवार ने पूरा घाव कर दिया।

देखने वाले स्तम्भित रह गये। किसी के चेहरे पर शिकन तक नहीं दिखी। बुर्जसिंह ने मौन तोड़ा। वह घोड़े से कूद पड़ा, साथ ही मेघसिंह भी। उन्होंने सहारा देकर उसे महल तक पहुँचाया।

— ५७ —

सुल्तान को कोई छह-सात घाव लगे थे। उनमें सब स

गहरा घाव भी था। एक शिरा के कट जाने से बहुत खून बह रहा था। उसे उठकर चलने लायक होने में पन्द्रह दिन लग गये। निहालदे ने बड़ी लगन से उसकी सेवा की। वैद्य के अनुभव और बुद्धिमानी से भी बड़ी मदद मिली।

आजकल मारू की छोटी बहन निरन्तर निहालदे के पास आती रहती। वह १६ वर्ष की एक अत्यन्त सुन्दरी और मोहिनी युवती थी। उसके मुखड़े की गठन ऐसी थी, मानो छेनी से तराशी गयी हो। उसकी त्वचा का रंग बेदाग था। गर्दन सुराहीदार थी और कन्धे बड़े खूबसूरत ढंग से घुमाव दार थे—सब कुछ मारू के जैसा ही था, फिर अपनी बड़ी बहन के अनुपम सौन्दर्य से उसकी कोई तुलना न थी।

उसके आने पर फूलकुँवर उसे देखता। बार-बार देखने से उसे लगा कि वह उसे चाहता है उसमें सारी दुनिया से दूर सिर्फ उसके संग रहने की कामना है। आखिरकार वह अपने को सँभाल नहीं सका और सुल्तान के पास पहुँचा। उसने जसकुँवर के बारे में बात शुरू की और अन्त में बोला "कितनी निडर है वह और उसके बोल क्या हैं मानो कोई सुरीली तान।" इतना कहते-कहते वह शरमा गया और दूसरी ओर ताकने लगा।

सुल्तान ने वादा किया कि वह उसके पिता के सामने बात चलायेगा। उसी शाम सुल्तान बुद्धसिंह से इस विषय की बात करने का मौका देखने लगा। मेघसिंह भी वहाँ पर था।

'क्या तुम फूलकुँवर का नाम बताते हो ?' मेघसिंह ने पूछा।

मिली और उनके अन्तर का आह्लाद लहरा उठा। निहालदे का हृदय आनन्द के अतिरेक से धड़क रहा था। उसे लग रहा था, शायद वह गिर पड़ेगी मूर्च्छित हो जायेगी।

महाराजा माघ ने पुरोहितों को बुलाया और अपेक्षित उत्सव के साथ निहालदे तथा सुल्तान का विवाह सम्पन्न हो गया। कामरूप्त बड़े प्रसन्न थे कि उनके दत्तक पुत्र ने लक्ष्य बेधकर वहाँ उपस्थित सभी राजकुमारों का गर्व तोड़ दिया।

अब निहालदे को भी बिछोह का कोई भय न रहा था। रात को उस महकहाती पुष्प-शय्या पर उन्हें एक-दूसरे का हाल जानने का पहले-पहल अवसर मिला। निहालदे ने सुल्तान से पूरा किस्सा सुना। उसने अपना भी बताया कि कैसे लक्ष्य-वेध स्वयंवर के लिए उसने अपने पिता को राजी किया।

राजकुमारी निहालदे बाग से सीधी अपनी माँ के पास जाकर बोली, 'माँ, आपने पहले किचलकोट के राजकुमार 'सुल्तान' से ही मेरा विवाह करना चाहा था। जैसी कि ईश्वर की इच्छा थी, वह ब्याह नहीं हो पाया। पर अब क्यों मुझ गाय-बैल की तरह इदरकोट के राजकुमार को सौंपा जा रहा है। आपकी बेटी का ब्याह तो उस से होना चाहिए जो महान् और वीर हो, राजा होने के योग्य हो।" उसने सुल्तान से सुना प्रस्ताव भी बताया।

रानी थोड़ी देर तो सोचती रही, पर देखते-देखते वह बड़ी प्रसन्न हो उठी कि उसकी बेटी कितनी अच्छी सलाह दे सकती है। उसने निहालदे को स्नेह से गले लगा लिया।

आखिर उसमें क्या कमी है? उसका राज तो बड़ा नहीं है पर नाम तो है।' सुल्तान ने कहा।

कुछ भी हो मैं उसे ज्यादा समझ नहीं पा रहा हूँ। मुझे कुछ और विचार करना पड़ेगा। आवेश में आकर माँग करना गलत है, और आवेश के साथ बुद्धि हो भी तो यह काफ़ी नहीं है। चरित्र जरूर होना चाहिए, और आदर्श भी। बुधसिंह ने जवाब दिया।

फिर भी प्रस्ताव को उसने मंजूर कर लिया और उसी दिन सगाई की घोषणा कर दी। निहालदे ने जसकुंवर का हाथ दबा दिया। उसका चेहरा लाल हो उठा। वह निहालदे से छोटी बहन की तरह हिल गया। सुल्तान में अभी पूरी तरह ताकत नहीं लौटी थी पर उसे बाहर घूमने की आज्ञा मिल गयी थी।

एक दिन निहालदे ने सुना कि पड़ोस के गाँव में किसी नरभक्षी शेर ने आतंक फैला रखा है।

वह बड़ी अच्छी घुड़सवार थी और अच्छा निशानेबाज भी। वह शब्दवेधी बाण चलाने में भी प्रवीण थी। उसने शिकार करने की इच्छा प्रकट की। सुल्तान अभी-अभी सवारी करके लौटा था। उसे भी प्रस्ताव पसन्द आया। दूसरे दिन सुबह दो दर्जन सैनिकों को साथ लेकर वे शेरों का शिकार करने निकल पड़े। सख्त गर्मी के दिन थे और बड़ी उमस थी। वे गाँव में दोपहर को पहुँचे। गाँव के बाहर उन्होंने एक नौजवान की लाश देखी जिसे शेर ने मार दिया था। वहाँ से शेर के पंजों के निशान देखते हुए वे आगे बढ़े। चट्टानों के पास जाकर निशान खो गये।

अब तक वे काफ़ी दूर निकल आये थे, पर थोड़ी दूर उन्हें किसी बस्ती के चिह्न दिखाई दिये। वन के इस भाग में कुएँ का पानी पीने लायक नहीं था, इसलिए गाँव के लोग बड़े कुण्ड बनाकर वर्षा का जल उनमें इकट्ठा कर लिया करते। जलागार की हमेशा निगरानी होती थी, क्योंकि वहीं पीने का पानी था।

सुल्तान ने कहा "शेर का कोई पता नहीं है अब यहाँ से हम चलें। उस गाँव में जरा आराम कर लें।

यह एक अच्छी खासी बस्ती थी जहाँ कुछ बड़े मकान भी थे, और एक सरदार वहाँ का मालिक था। एक कुण्ड भी पास में बना था आरामगाह देखकर वे वहीं उतर गये। वहाँ पहरे पर दो सैनिक थे। 'तुम लोग चाहे जो कोई भी हो यहाँ ठहरने के लिए हमारे मालिक की आज्ञा लेना जरूरी है।'

सुल्तान ने कहा, अपने मालिक से जाकर कहो कि वे हमें ठहरने की इजाजत दें।"

सैनिक गये, और लौटे तो साथ में एक १४ वर्ष का बालक भी था।

लड़के ने कहा 'मेरे नाना यहाँ नहीं हैं इसलिए मैं ठहरने की इजाजत नहीं दे सकता।'

सुल्तान बोला, 'बेटे, हम इस तपती गर्मी में चलते रहे हैं, इसलिए थके और प्यासे हैं। हमें इस तरह यहाँ से न निकालो।'

आप जो कहते हैं वह ठीक है लेकिन मुझे तो यहाँ

हुक्म है। इस साल पानी की कमी के कारण हमारा जखीरा आधा ही भरा हुआ है।"

'हम तुम्हारा क़ीमती पानी बर्बाद नहीं करेंगे।'

'खेद है कि हम अनजाने लोगों को यहाँ ठहरने नहीं देते।'

मुल्तान का एक सैनिक आगे बढ़ा और उस बदतमीज लड़के को धक्का देने लगा मगर लड़का बड़ा फुर्तीला निकला। एक हाथ से सैनिक को पकड़कर वह धक्का दिया कि सैनिक जमीन सूँघने लगा। मुल्तान को बचपन का वह दिन याद आया जब वह किचलकोट में था। वह धन गुरुसा नवमी थी। उस दिन दुर्गा माता के नाम पर मेला लगता था। मेले में ऊँची-लम्बी कूद, कुश्ती और कटार भाँजने के खेल होते थे। एक लम्बा-तगड़ा आदमी कुछ लड़कों को तंग करता था। मुल्तान उस पर टूट पड़ा और गर्दन से पकड़ कर उसके साथ जमीन पर लोट-पलोट खाने लगा। मुस्टंड का गला घुटने लगा और वह दर्द से चीख पड़ा। लड़के वहाँ जमा होकर मुल्तान को तालियाँ बजाकर बढ़ावा देने लगे।

मुल्तान को आश्चर्य हुआ। वह उठकर लड़के की पीठ थपथपाने आगे बढ़ा, लेकिन लड़के ने कुछ दूसरा ही समझा, और कटार लेकर वह उसकी ओर लपका। मुल्तान और लड़के में लड़ाई होने लगी। लड़के के हाथ से वह कटार छीन लेना चाहता था, और लड़का अपने को बचा रहा था। मुल्तान को उससे कटार छीनने में बड़ी दिक्कत हो रही थी क्योंकि वह अपनी उम्र से ज्यादा मजबूत था। इसी झगड़े में लड़के

की बाँह का कपड़ा फट गया और वहाँ पर निहालदे को एक पदाइशी निशान दिखाई पड़ा। उसने सुल्तान और लड़के के चेहरे में भी काफ़ी मेल पाया। वह तुरन्त बीच म आ गयी और उसकी विनती पर लड़का मान गया।

निहाल ने पूछा, "बेटे तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं ?

"मैंने अपने पिता को कभी नहीं देखा पर मेरी माँ घर पर है।'

"क्या तुम लोगों को वहाँ ले चलोगे ?

लड़का मान गया और वे लोग उसके पीछे चलने लगे। सुल्तान को घर क बाहर छोड़कर निहालदे भीतर गयी। एक क्षण भर बाद सुल्तान को बड़ा आश्चर्य हुआ, जब लड़का दौड़ता हुआ बाहर आया और उसके पाँवों पर गिर पड़ा। उसने सुल्तान का हाथ पकड़ कर विनयपूर्वक कहा 'आप मेरी माँ के पास चलिए।'

लड़के के हाथ का स्पर्श करते ही सुल्तान की देह रोमांचित हो उठी। घर के भीतर निहालदे एक अपूर्व सुन्दरी के साथ खड़ी थी। उसने हँसते हुए कहा 'आओ अपनी दूसरी पत्नी मृणाल और अपने बेटे जगदीप से मिलो।

सुल्तान बड़े अचम्भे में था। वह निहालदे को बड़े अचरज से देखने लगा।

'अचरज म मत पड़ो। जो कुछ मैंने कहा, वह सही है।"

लेकिन तुम क्या कह रही हो ? मैंने तुम्हारे सिवा किसी दूसरी स्त्री से कभी शादी नहीं की।'

'तुम्हारा कहना सच है, पर मैं जो कुछ कहती हूँ वह भी सही है।"

सुल्तान अचरज में पड़ गया। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

सुन्दरी सामने आयी।

"क्या तुम्हें किसी घूँघट वाली स्त्री की याद है ? जसदीप तुम्हारे राजतिलक का उपहार है। मैं तुमसे एक पुत्र की कामना करती थी।

सुल्तान न तो कुछ समझ सका, न कुछ निर्णय ले सका। वह उन भयकर सम्भावनाओं को समझता था अगर उसने जसदीप के लिए कुछ किया। नरवलगढ़ का विस्फोट उसे याद था और वह वैसी ही स्थिति में अपने को नहीं डालना चाहता था। साथ ही उसने यह भी सोचा कि जसदीप के प्रति भी उसका दायित्व है। यद्यपि धोखे में यह सब हुआ था, फिर भी जसदीप से उसके सम्बन्ध को कैसे खत्म किया जा सकता था ? फिर जसदीप की माँ का क्या होगा ? अगर वह जसदीप को गोद में ले तो क्या सबका उसे स्वीकार करेगा ?

किन्तु उसे चिन्ता करने की जरूरत न थी, क्योंकि निहाल जसदीप के बारे में जानती थी, और उसे आशा थी कि पिता पुत्र किसी दिन तो मिलेंगे ही। पहली बार मिलते ही निहाल पुत्र और उसकी माँ से प्यार करने लगी थी।

निहालदे ने बड़ी प्रसन्नता से जसदीप को गले लगाते हुए कहा 'मेरा बेटा, अहा, मैं कितनी प्रसन्न हूँ।'

जब वे लौटे, तो जसवीर और उसकी माँ भी उनके साथ थीं। जैसलमेर लौटने पर उन्हें पता चला कि उसी दिन फूलकुँवर का ब्याह है। यह चौंकाने वाली बात थी, तो भी सुल्तान ने अपने आश्चर्य का भाव दबा रखा और तब तक निहालदे ने जसकुँवर से सब कुछ पूछ-पाछ लिया।

:: ५८ ::

सुल्तान को फूलकुँवर के व्यवहार से बड़ा धक्का लगा।

जब उसको सुल्तान ने बुलाया तो फूलकुँवर का दिल बैठ गया। सुल्तान ने झिड़कते हुए कहा "अगर तुम मुझे क़त्ल भी करना चाहो, तो मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा। लेकिन अगर महाराजा कामध्वज का पुत्र किसी दुर्व्यवहार के कारण मार डाला जाय, तो मैं उसके बचाने के लिए उँगली भी नहीं उठाऊँगा।" और वह क्रुद्ध होकर चला गया।

पानी की कमी होने से जैसलमेर में कोई बाग़ लगाना मुश्किल था। मगर महल के गन्दे पानी से एक आँगन में छोटा-सा बाग़ लगाया गया था। चमेली के पेड़ों का गमकता कुंज निहालदे और जसकुँवर को उसके नीचे बैठने में बहुत सुहाता था। फूलकुँवर पर सुल्तान का जो भी थोड़ा-बहुत दबाव था, वह उसके अनुपस्थित रहने पर जाता रहा। फूलकुँवर खूब जमकर शराब पीने लगा। वह जानता था कि जसकुँवर शाम चमेली के कुंजों में बिताती है। निहालदे के

न रहने पर उसकी दो सखियाँ साथ जातीं। फूलकुंवर एक पेड़ के पीछे छिप गया, और उसकी भूखी आँखें औरतों की खिलवाड़ देखती रहीं। वह जसकुँवर को उस झीने रेशम की पोशाक में खड़े देखता रहा जिसकी अंगिया इतनी छोटी थी कि उरोजों के ठोस उभार ललचाने लगते। वह दुपट्टा फेंककर फुदक रही थी।

आज वह बहुत ही प्रफुल्लित थी। उमंग में वह खास राजस्थानी नाच झूमर नाचने लगी। जब वह नाचते-नाचते अपने पंजों पर घूमर करती तो उसका घाँघरा उड़कर जंघाओं तक उसे नग्न कर देता।

बाग़ में बस उनकी हँसी की गूँज थी। फूलकुंवर ने उसकी पतली कमर को बहुत सराहा और उजले पाँवों को भी जो कुंजों की छाया में और सुन्दर लग रहे थे। अचानक उसका प्रणयोन्माद भयानक हो उठा। चुपचाप बाहर आकर वह उसकी बग़ल में खड़ा हो गया। उसकी वासना तीव्र होने लगी। जसकुंवर की आँखें भय से और बड़ी हो गयीं। वह लज्जा से लाल हो गयी और कुछ कह नहीं पा रही थी। दासियों ने अपने अपने दुपट्टे लिये और उसे अकेली छोड़कर भाग गयीं।

नहीं प्रिये, तुम मेरी हो। तुम मुझसे डरो मत।'

जसकुंवर ने गुस्से से काँपते हुए कहा 'आप यहाँ से तुरन्त चले जाइए।"

उसने जसकुंवर के नंगे कन्धों को दोनों हाथों से जकड़ लिया, पर जसकुंवर उसे धक्के मारकर दूर करने की कोशिश कर रही थी। वह पागल की तरह अपने को छुड़ाने लगी।

जब वे लौटे तो जलदीप और उसकी माँ भी उनके साथ थीं। जैसलमेर लौटने पर उन्हें पता चला कि उसी दिन फूलकुँवर का ब्याह है। यह चौंकाने वाली बात थी, तो भी सुल्तान ने अपने आश्चर्य का भाव दबा रखा, और तब तक निहालदे ने जसकुँवर से सब कुछ पूछ-पाछ लिया।

-- ५८ --

सुल्तान को फूलकुँवर के व्यवहार से बड़ा धक्का लगा।

जब उसको सुल्तान ने बुलाया तो फूलकुँवर का दिल बैठ गया। सुल्तान ने झिड़कते हुए कहा, "अगर तुम मुझे क़त्ल भी करना चाहो, तो मैं तुम्हें चोट नहीं पहुँचाऊँगा। लेकिन अगर महाराजा कामध्वज का पुत्र किसी दुर्व्यवहार के कारण मार डाला जाय, तो मैं उसके बचाने के लिए उँगली भी नहीं उठाऊँगा।" और वह क्रुद्ध होकर चला गया।

पानी की कमी होने से जैसलमेर में कोई बाग़ लगाना मुश्किल था। मगर महल के गन्दे पानी से एक आँगन में छोटा-सा बाग लगाया गया था। चमेली के पेड़ों का गमकदार कुंज निहालदे और जसकुँवर को उसके नीचे बैठने में बहुत सुहाता था। फूलकुँवर पर सुल्तान का जो भी थोड़ा-बहुत दबाव था, वह उसके अनुपस्थित रहने पर जाता रहा। फूलकुँवर खूब जमकर शराब पीने लगा। वह जानता था कि जसकुँवर शाम चमेली के कुंजों में बिताती है। निहालदे के

न रहने पर उसकी दो सखियाँ साथ जातीं। फूलकुँवर एक पेड़ के पीछे छिप गया, और उसकी भूखी आँखें औरतों की खिलवाड़ देखती रहीं। वह जसकुँवर को उस महीन रेशम की पोशाक में खड़े देखता रहा जिसकी अंगिया इतनी छोटी थी कि उरोजों के ठोस उभार सख्त लगते। वह दुपट्टा फेंककर फुदक रही थी।

आज वह बहुत ही प्रफुल्लित थी। उमंग में वह खास गढ़वाली नाच झूमर नाचने लगी। जब वह नाचते-नाचते अपने पंजों पर घूमर करती तो उसका घाँघरा उड़कर जाँघों तक उसे नग्न कर देता।

बाग में बस उनकी हँसी की गूँज थी। फूलकुँवर ने उसकी पतली कमर को बहुत सराहा और उजले पाँवों को भी जो कुंजों की छाया में और सुन्दर लग रहे थे। अचानक उसका प्रणयोन्माद भयानक हो उठा। चुपचाप बाहर आकर वह उसकी बगल में खड़ा हो गया। उसकी वासना तीव्र होने लगी। जसकुँवर की आँखें भय से और बड़ी हो गयीं। वह लज्जा से लाल हो गयी और कुछ कह नहीं पा रही थी। दासियों ने अपने अपने दुपट्टे लिए और उसे अकेली छोड़कर भाग गयीं।

'नहीं प्रिय तुम मेरी हो। तुम मुझसे डरो मत।'

जसकुँवर ने गुस्से से काँपते हुए कहा 'आप यहाँ से तुरन्त चले जाइए।'

उसने जसकुँवर के सुन्दर कन्धों को दोनों हाथों से जकड़ लिया पर जसकुँवर उसे धक्के मारकर दूर करने की कोशिश कर रही थी। वह पागल की तरह अपने को छुड़ाने लगी।

वह चिल्लायी "नहीं नहीं, यह तो बड़ी बेहयाई है।" फूलकुँवर ने उसकी आँखों में भयानक क्रोध देखा।

यकायक पीछे से किसी ने फूलकुवर के दोनों हाथों को बाँह में भर लिया। जसकुँवर अपने को छुड़ा और अपने को ढँकती हुई महल की ओर भाग निकली। मेघसिंह ने अपनी तलवार की मूठ से पीठ पर मारते हुए कहा "बदमाश सुल्तान शर्म से गड़ जायेगा नहीं तो इसके लिए मैं तुम्हें मार डालता।"

एक लम्बे अटूट मौन से मेघसिंह ने उसे तेज आँखों से देखा, और कसकर उल्टे हाथ से एक थप्पड़ रसीद किया। फूलकुँवर के मुँह से खून बहने लगा और वह गिर पड़ा।

:: ५९ ::

वे कियलकोट वापस आ गए थे। सूरज अभी-अभी क्षितिज में डुबकी लगा गया था। सारा राजमहल अपने में मग्न था। सेनापतियों की बातचीतों से विलास सभा भवन गूँज रहे थे। पारदर्शी फ़ानूसों के कोरों से टकराकर मद्धिम रोशनी की लौ भी सौगुनी प्रज्वलित हो उठती। पवित्र वस्तुएँ भिक्षा-पात्र जिसे लेकर सुल्तान इदरकोट से निकला था और बारहसिंघे का वह सिर, जिसने सिंहासदे से उसका मिलन कराया था सारी वस्तुएँ दीवार पर टँगी चमक रही थीं।

"जब मेरी माँ मेरे पिता के पास गयीं, तो उन्होंने कहा, 'मैं फूलकुँवर से अपनी बेटी का ब्याह करने का वचन दे चुका हूँ। राजपूत अपना वचन कभी नहीं पलटता। अब मैं कोई दूसरी शर्त नहीं मानूँगा। उसका ब्याह फूलकुँवर से होकर ही रहेगा।' '

"माँ ने कहा, मगर एक बार तो आप अपना वचन पलट चुके हैं। आप जानते हैं कि सुल्तान जिंदा है मगर उसे खोजने की आपने कोई चेष्टा भी की? तब धीरे-धीरे वह ढील पड़े और माँ ने अपना प्रस्ताव मनवा लिया।"

"अब तुम मेरी हो। कोई भी तुम्हें मुझसे नहीं छीन सकता।' सुल्तान ने कहा।

वह चुप थी। उसके कन्धे पर सिर टिकाये अपने आप में खोयी हुई मानो दूर कहीं उसकी आँखें कुछ खोज रही थीं। केवल कभी-कभी उसकी कलाइयों के कंगन झनक जाते।

क्यों प्रिये, तुम बादलों की तरह दूर क्यों हो रही हो? '

खोयेपन से जैसे वह जाग पड़ी, और सुल्तान के पास खिसक आयी। उसने कहा, "मेरे और पास हो जाओ। मुझे अपने से दूर न होने दो।'

मेरी प्राण, नहीं, कभी नहीं। सुल्तान ने कहा और पास खींचकर उसे अपनी बाँहों में कसते हुए चूमने लगा। वह एक क्षण काँपी और फिर उसके चौड़े वक्ष में मुँह छिपा लिया।

केलागढ़ में तीन दिन रुकने के बाद सुल्तान अपनी वधू के साथ इन्दरकोट लौट आया। महाराजा माघ ने हाथ जोड़ कर महाराजा कामध्वज राव से विदा ली और कहा—

उस दिन शाम को लौटने पर निहालदे ने पूछा, "महाराजा कहाँ हैं ?"

"मरवसगढ़ से कोई दूत आया है, और वे लोग किसी महत्वपूर्ण विषय पर विचार कर रहे हैं। जानी भी उनके साथ ही है।'

निहालदे इस समाचार से उद्विग्न हो उठी। वह अब कोई भी नयी मुसीबत मोल लेना नहीं चाहती थी, और माल्ह का दूत बिना कोई गम्भीर बात हुए नहीं आया करता। संगमरमर के खम्भे उस कक्ष से ऊपर प्रकोष्ठ तक चले गये थे। उन्हीं के बीच से होकर वह सभा भवन की ओर दौड़ी।

मुल्तान दूत से कह रहा था 'मुझे इसका पूरा निश्चय है।"

फ़र्श पर एक पत्र पड़ा था। निहालदे ने उसे उठाया। वह माल्ह का था।

'तुम्हारे आने के कुछ ही दिनों बाद महाराजा नारसिंह के साथ कहीं गये और फिर नहीं लौटे। कोई नहीं जानता कि नारसिंह कहाँ से आया था। अभी एक सन्देश मिला है जिसमें कहा गया है कि राजा को तभी छोड़ा जायगा जब बदले में मैं अपने आपको समर्पण करने की प्रतिज्ञा करूँ। मुझे उस के बाद क्या करना है, यह आदेश बाद में भेजा जायगा। अगर महीने भर के भीतर यह घोषणा नहीं की जाती, तो महाराजा का क़त्ल कर दिया जायगा।

तिथि दस दिन पीछे की पड़ी थी। माल्ह अपने को मृत्यु

के निकट समझ रही थी। सिर्फ़ बीस दिन और बाक़ी हैं कोई नहीं जानता कि इसके पीछे कौन है।

निहालदे के घुटने शिथिल पड़ने लगे, और वह बठ गयी।

सुल्तान ने कहा "हमें पता है कि मारसिंह उनके साथ था। यह गर्ग का ही काम होगा। अगर हम आज ही चल पड़ें, तो पहुँच जायेंगे।

जानी और चन्द्रसिंह रपुकोट से लौट आये थे। चन्द्रसिंह ने अच्छा काम किया था। उसने बड़ी बारीकी से योजना बनायी थी। वह क़िले तक पहुँचने के रास्ते जानता था। उसे यहाँ तक पता था कि खास-खास जगहों पर कितने सैनिक तैनात थे और कब उनकी पारी बदलती थी।

रपुकोट एक छोटी जमींदारी थी। उसका मालिक गर्ग अपने को राजा कहता था यद्यपि उसका इलाक़ा क़िले तक ही सीमित था। गड़रियों और भेड़ों को पोषण देना ही उसकी आय का साधन था। जिसके पास भी पशुओं का झुण्ड होता वह उसके सैनिकों को उधार माँग सकता था। इसलिए उसका क़िला पशुओं के झुण्डों के लिए हमेशा खुला रहता था। क़िले में घुसने का एक ही तरीक़ा था कि पशु चराने वाला गड़रिया बन जाय।

सुल्तान ने उसी दिन गोपू जानी और अपनी सेना के साथ कूच कर दिया। निहालदे पीछे रुकने के लिए तैयार नहीं हुई। वह भी उनके साथ सवार होकर चली। उसने पति से कहा, "मैं अपनी फ़िक्र अपने आप कर लूँगी तुम चिन्ता मत करो।"

= ६० =

उस सुनसान प्रदेश में पूरे दिन वे घूमते रहे तब जाकर कहीं क़िले का धुंधला आकार दिखायी पड़ा। दो सौ पशुओं के साथ बीस गड़रिये क़िले के भीतर घुसे। सदा के नियमानुसार उन्हें रात भर ठहरने की आज्ञा मिल गयी। दूसरे दिन वे भाव-ताव तय करके कुछ सैनिकों के साथ चले जायेंगे।

मुम्तान ने कहा हमारे लिए एक ही दिन में हमला करके निबटारा कर देने में कोई मुश्किल न होगी। मगर ढोलकुँवर उनकी क़ैद में है और वे जिन्दा नहीं बचेंगे। इसलिए खुले तौर पर आक्रमण करने का विचार छोड़ दिया गया। उन्हें तरकीब से अपना काम पूरा करना था। गोधू इसमें अगुवा बना।

चाँद व तारों को ढँकते हुए वर्षा के घन बादल छा गये। घुप्प अँधेरा था। क़िले के फाटक के पहरेदारों के सिवा सभी लोग सो गये थे। चूँकि धर्मसिंह क़िले के चप्पे चप्पे के बारे में जानता था, इसलिए उसे ही अगुवा बनने को कहा गया। उनके पास हथियार के नाम पर पेड़ों से शाखा काटे हुए मोटे मोटे डंडे थे। देखने में तो वे पशु हाँकने के लिए थे, पर उनसे काम कुछ और ही लेना था।

वे मुख्य द्वार की तरफ़ चले। वहाँ लगभग पच्चीस सैनिक रहते थे।

झुण्ड में कुछ साँड़ भी थे। उन्होंने उनमें से दस भयंकर साँड़ों को छाँट दिया। उन्होंने साँड़ों की पीठ पर नोक चुभाकर उन्हें आगे भगा दिया। डंडों की नोंक से मार खाने पर वे बिगड़ैल हो फाटक की ओर भागे। फाटक के पहरेदार

अचम्भित हो किंकर्तव्यविमूढ़ रह गये। कुछ तो साँडों के सींगों से खोम दिये गए, बाकी से गोभू और उसके सैनिकों ने समझ लिया। पशुओं को एकत्र करने के लिए चिल्लाना-पुकारना तो नित्य का नियम था, किसी ने चिल्लाहट सुनी तो उसकी परवाह भी नहीं की।

चन्द्रसिंह ने फाटक का ताला खोल डाला, और सुल्तान के चुने हुए दो हज़ार सैनिक क़िले में घुस आये। सबसे बाद में सुल्तान ने प्रवेश किया। सभी ग्रामीणों की पोशाक में थे घोड़ों को उन्होंने दूरी पर ही छोड़ दिया और वे पैदल ही आये थे। ये सैनिक इतने पटु थे कि मौक़ा पड़ने पर मल्लयुद्ध से भी नहीं डरते थे।

वे क़िले के कोने-कोने में फैल गये और क़िले के सैनिकों के घरों को उन्होंने घेर लिया। घरों के दरवाज़ों पर रोक लगा दी गयी और भागने के सभी रास्ते बन्द कर दिये गए। लड़ सकने के लिए कोई बाक़ी नहीं छोड़ा गया।

सुल्तान ने अपने कुछ चुने हुए योद्धा लिये, और वह गर्ग के महल की ओर चला। किसी आन्तरिक शंका से गर्ग सचेत हो उठा था, और भागने ही वाला था। जब सुल्तान भीतर घुसा तो उसने देखा कि निहामते तलवार से गर्ग का रास्ता रोके खड़ी है।

गर्ग चिल्लाया, 'रास्ते से हट जाओ। मैं औरतों से नहीं लड़ता।'

'ओह! तो शत्रु भी इतने इज़्ज़तदार होते हैं!' सुल्तान ने अन्दर घुसते ही कहा।

क्रुद्ध होकर गग पीछे घूम पड़ा। वह एक अच्छा योद्धा था और क्रोधोन्मत्त हो लड़ता रहा। परदों और गद्दों को फाड़ते हुए व आगे-पीछे बढ़ते रहे। सुल्तान अभी तक अपनी पहले की शक्ति प्राप्त नहीं कर सका था, इसलिए गग उसे एक दीवार तक ढकेल ले गया। यह मौत की लड़ाई थी। निहालदे बाच में दखल नहीं दे सकती थी क्योंकि सुल्तान के लिए वह घृणित बात होती। पर गर्ग एक पर्दे से उलझ गया, और इससे सुल्तान को मौक़ा मिला। गर्ग घायल हुआ, और पकड़ लिया गया।

-- ६१ --

सुल्तान गग की गद्दी पर बैठा। वह बड़ा उदास था, क्योंकि ढोमकुंवर नहीं मिले थे। 'ढोमकुंवर कहाँ हैं? अगर तुम नहीं बतलाते, तो मैं तुम्हें कुत्तों से फड़वा दूँगा।' उसकी आवाज में इतनी कठोरता थी कि उसके अनुयायी भी चौंक उठे।

गग भी गग चुप रहा। उसकी आँखें फ़र्श पर गड़ी थीं, और वह अपना मुँह इस क़दर बन्द किये हुए था, कि कोई भाँप भी नहीं सकता था कि उसके मन में क्या है।

सुल्तान ने देखा कि जानी एक गड़रिये को गर्दन से पकड़े चला आ रहा है। जब वह पास आया तो उसने देखा कि यह मार्गसिंह है। जानी बोला 'यह आदमी गड़रियों के साथ भागने के फेर में था।'

नारसिंह उसके घुटनों पर गिर पड़ा, 'अगर जान बख्श दी जाय तो मैं बता दूंगा।'

गर्ग को गुस्सा आ गया। उसने नारसिंह को ऐसा जबर-दस्त धक्का दिया कि वह गिर पड़ा। गोघू गर्ग पर पिल पड़ा, और किसी तरह उसे क़ाबू में किया।

सुल्तान ने कहा, 'अगर ढोलकुँवर मिल जायें तो मैं तुम्हें और गर्ग को भी छोड़ दूंगा।

खूब बाँधकर नारसिंह को आली के साथ ले आया गया। आगे आगे सैनिक भी थे।

सुल्तान ने चेतावनी दी "धोखा मत देना।

नारसिंह ने कहा, 'जब मौत घूर रही है तो छल नहीं करूँगा।"

ढोलकुँवर एक कुएँ के भीतर बनी एक खास-कोठरी में था। उसकी हालत बड़ी खराब थी। दो दिन से खाना तक नहीं मिला था।

जैसा कि सुल्तान ने वचन दिया था गर्ग को माफ़ करके छोड़ दिया गया। सुल्तान की सेना आ गयी थी जो दूसरे दिन क़िले पर पहुँची। सुल्तान ने ढोलकुँवर को सीने से लगा लिया और अपने पाँच सौ सैनिकों के साथ उसे नरवलगढ़ भेज दिया। सुल्तान और निहालदे चित्रसकोट की ओर मुड़े।

जब भी सुल्तान चित्रसकोट आता, तब अपने लिए न सही निहालदे के लिए ज़रूर ठहरना चाहता। मगर मुश्किल से कुछ ही समय बीता होगा कि उसे फिर एक बुलावा आया,

और वह अपने चुने हुए आदमियों को लेकर नयी मंजिल की ओर चल पड़ा।

अब दूसरा एक मम्बा युवक उसके साथ रहने लगा।

जिस जसदीप को निहालदे ने अपना बेटा मान लिया था वह सुल्तान की बिल्कुल प्रतिमूर्ति था। निहालदे ने सोचा कि यह ठीक वही छाया देख रही है जो केसागढ़ के बाग़ में उसने देखी थी। जो दूसरा चेहरा उसके सामने खड़ा था, उसे वह मुश्किल से पहचान पाती अगर उसमें समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को हर रोज न देखती। वह एक भूरी दाढ़ी वाले आदमी का चेहरा था, जो रेगिस्तान की गर्म हवाओं से काला पड़ गया था।

वे पश्चिमी खिड़कियों के पास खड़े होकर झुकती हुई रात का सोनिल दृश्य देख रहे थे। कुछ दूरी पर उन्होंने आग की लौ देखी। आग के किनारे रात का पहरेदार बैठा था। निहालदे के काले बाल आग की लौ में चमक रहे थे।

'बेनीसिंह सभा भवन में प्रतीक्षा कर रहे हैं।' दासी ने प्रवेश करते हुए कहा। निहालदे को दासी का आना बुरा लगा।

"अपनी प्रजा के लिए भी तो कुछ करो जब दूसरों के लिए इतना सब कर रहे हो।' निहालदे ने कहा।

"मेरी कोई प्रजा नहीं है। मैं तो सेनार्थी का सेवक हूँ।" और उसकी आँखों में मानो सूरज उदय हो गया। निहालदे की आँखें उस चमत्कार पर गड़ी रह गयी।

● ● ●

'मेरी त्रुटियाँ क्षमा करें। इतने राजाओं के समूह में हम न तो आपकी पूरी खातिरदारी कर सके, न आपके आराम की कुछ चिन्ता ही। किन्तु मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि मेरी बेटी का ब्याह आपके कुँवर सुल्तान से हुआ।

कामध्वज राव महाराजा माघ से गले मिले और विदा लेकर इवरकोट को चल पड़े। माघ चाहते थे कि निहालदे के साथ अनेक दासियाँ जायें मगर निहालदे ने मना कर दिया।

रानी बहुत परेशान थीं। न तो निहालदे और न सुल्तान ने उनसे यह बताया था कि वास्तविक सुल्तान कौन था। वे अपने को इस बात के लिए तैयार न कर सकीं कि उनकी पुत्री और एक राजा के पुत्र सुल्तान की पत्नी बिना दासियों के जाय। उन्होंने निहालदे को प्यार से बाँहों में जकड़ लिया और वियोग के दुख से मूर्च्छित हो गयीं।



:: ३ ::

दो छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच हरी और मुस्कराती यह एक मनोरम घाटी थी। शरद् के सूय तले कुछ पकते धीरे-धीरे काले भूरे रंग में बदल रहे थे। किसान फ़सल काट चुके थे। फ़सलें प्रचुरता से हुई थीं। इस क्षेत्र में सब कुछ वर्षा पर निर्भर करता था और इस बार इन्द्र देवता बड़े कृपालु रहे थे। पहाड़ी के सामने आधे सूखे झरने से पीला-पीला पानी बह रहा था। सूखी हुई बिचाली से महक आ रही थी। किसान

आनन्दमग्न थे, और उनकी वधुओं के गीतों से माटी गूँज रही थी। कुछ लोग फ़सल की देंवाई कर रहे थे। कभी-कभी एक कुत्ता भूँक उठता था।

दूल्हे की बारात आराम से इवरकोट की ओर बढ़ी जा रही थी। खेतों में काम करने वाले रास्ता घेर कर जगह जगह खड़े हो गये और खुशी के नारे लगाने लगे। नौजवानों ने उछल-उछल कर जय-जयकार किया।

केलागढ़ की घटनाओं के बारे में उनकी अलग-अलग रायें थीं। बहुतेरे तो यह भी नहीं जानते थे कि लक्ष्य किस राजकुमार ने बेधा था। जिज्ञासावश वे देखने के लिए आ खड़े हुए। लेकिन जब उन्होंने राजकुमार सुल्तान को हाथी पर सवार देखा, तो वे अपनी खुशी न रोक सके। एक अच्छा-खासा प्रौढ़ आदमी सड़क की ओर दौड़कर नाचने लगा। खुशी से तालियाँ पीटती हुई भीड़ पीछे-पीछे हो ली।

भूरा और मौसम से घुमता हुआ किला उस दृश्य का ही अंग मालूम पड़ता था जिसे पहाड़ ने ढक रखा था। वे मुख्य द्वार से भीतर घुसे, जिस पर कि उस युग की भव्य आकृतियाँ अंकित थीं। बड़े फाटक के किवाड़ों पर धारदार कीलें गड़ी हुई थीं। दीवार के ऊपर छज्जों से नगर के लोग यह देख कर कि राजकुमार सुल्तान आये हैं, फूल और अच्छत बरसाने के लिए एकत्र हो गये थे। यह दृश्य तो फूलकुँवर के लिए और भी कष्टकर था, जो भीड़ के सामने अपनी पराजय स्वीकार करने से डरता था। हालांकि उसे लक्ष्य-भेद का अवसर पहले दिया गया था किन्तु वह असफल रहा।

रूप और विजय के इस ब्यार को सूचना देने के लिए रानी के पास सन्देश-वाहक पहले ही भेजे जा चुके थे।

खबर पाते ही वह रूप से पुलक उठीं, और उन्होंने आज्ञा दी कि सारे नगर को सजाया जाय और दीपमालिका की जाय। गृहाध्यक्ष को भी आदेश दिया कि जब राजकुमार पधारें तो उनके स्वागत का बहुत सुन्दर प्रबन्ध किया जाय। क्षण भर के लिए भी रानी कर्णावती ने यह नहीं सोचा कि आने वाला राजकुमार फूलकुँवर के सिवा जो दूसरा कोई हो सकता है। वह नहीं जानती थी कि फूलकुँवर आ चुका है और रुआँसा अपने कक्ष में पड़ा है।

उस दिन प्रातःकाल ही महल की सारी स्त्रियाँ रानी और कामध्वज राव की द्वितीय रानी की पुत्री रत्नादे के साथ द्वार पर एकत्र हो गयीं। रानी आशा और आनन्द से उमग रही थीं। चारों ओर उछाह छा रहा था।

वर और वधू को लेकर आने वाले हाथी ने किले के द्वार से प्रवेश किया। कोटपाल आगे आया और अपनी तलवार से परम्परागत सलामी दी। चाँदी की तरह चमकदार श्वेत बालों वाले वृद्धजन जो अधिक चलने में असमर्थ थे, आनन्दित हो चौक में खड़े हो गये थे। पुरोहितों ने मन्त्रोच्चार किया। निहालदे आनन्द विभोर थी। उसकी आँखें आश्चर्य और आनन्द से चमक उठीं।

सन्देश वाहक राजकुमार के आगमन की सूचना देने के लिए बढ़ा। स्त्रियाँ स्वागत-गान गाने लगीं। उनके हाथ हिलने से कनक-कंगन झनक रहे थे। द्वार पर रानी के साथ रत्नादे

राजकुमार के स्वागत में आरती उतारने को सोने का थाल लिये खड़ी थी। रानी राजसी पोशाक में थी और उनका रत्न खचित मुकुट चमक रहा था।

हाथी द्वार के पास आकर बैठ गया। निहालदे को पीछे लिये राजकुमार सुल्तान मुस्कराता हुआ उतरा। राजकुमारी रत्नादे महल में फैली अफ़वाहें सुन चुकी थी। सब से पहले उसने ही स्थिति को भाँपा। उसके चेहरे पर मोहक मुस्कान थी यह मुस्कान अचानक नहीं आयी, किन्तु ओठों से उठ कर धीरे-धीरे सारे चेहरे पर फैल गयी, जिससे चेहरा और अधिक मनमोहक हो उठा।

रानी अब अपने को सँभाल न सकीं, और चीख पड़ीं, यह क्या मज़ाक है! यह हाथी यहाँ क्यों बैठा है? फूलकुँवर के हाथी को आने दो, जिस पर कि वह अपनी बहू के साथ है।

चारों ओर सन्नाटा छा गया। रत्नादे ने साहस से काम लिया बोली—'माँ, क्या आप देख नहीं रही कि भाई फूलकुँवर के बदले सुल्तान सफल हो वधू को ले आये हैं। मुझे उन पर सचमुच गर्व है।'

इस अप्रत्याशित जानकारी से रानी की उद्विग्नता इतनी बढ़ गयी कि वह अत्यन्त क्रुद्ध होकर वहाँ से चली गयीं। सुल्तान चबूतरे पर उतरा। रत्नादे ने आरती उतार कर स्वागत किया और वर तथा वधू को माला पहनायी। मुट्ठीभर हीरे लेकर उसने वर के मस्तक के ऊपर से फेंके, जिससे अपशकुनों का नाश हो जाय। फिर वे महल के भीतर गये। वहाँ आँगन में कई सुन्दरियाँ बैठी थीं, जिनके हाथों में

वाद्य-यन्त्र थे, और नर्तकियाँ लचक-लचक कर लोकप्रिय नृत्य करने लगीं ।

४

निहालदे सुन्दर दुलहिन थी । उसकी जोड़ी सुल्तान-जैसे लम्बे-चौड़े व्यक्ति के साथ खूब जँच रही थी । गहरे लाल रंग की पोशाक और लम्बा घाघरा उसके छरहरेपन को और बढ़ा रहा था । उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में इतनी चमक थी कि उसके गले की शोभा बढ़ाते दमकते हीरे भी उसके सामने हेय थे । उसकी मुद्रा देवियों को लजाती थी । वहाँ उपस्थित स्त्रियाँ मूर्तिवत् खड़ी उसे देखती ही रह गयीं ।

रानी रूपावती के लिए वातावरण अब और भी असह्य हो गया । उसने फूलकुँवर को खोजने के लिए आदमी भेजे । फूलकुँवर तो दुख की मूर्ति बना बैठा था । माँ को देख उसकी आँखें भर आयीं ।

माँ मैं सुल्तान से कभी ऐसी आशा नहीं करता था खासकर जबकि मैं उसे अपना भाई समझता था ।'

रानी का पारा चढ़ा हुआ था । वह चिल्लाकर कहने लगीं 'तुम कायर हो । नहीं तो तुमने सुल्तान को अपनी पत्नी का हरण न करने दिया होता ।'

रानी ने अपनी दासियों से कहा कि मुझे राजा के पास ले चलो और वह उड़ती-सी बाहर की ओर चल पड़ी ।

पर राजा उन्हें सन्तुष्ट न कर सका। रानी उसी तरह क्रोध से तनी अपने महल में लौटीं। निहालदे की शादी सुल्तान से हो गयी थी, और अब इस सत्य को मिथ्या नहीं किया जा सकता था। धनुष से छूटा हुआ तीर कब वापस आता है? रत्नादे पर निहालदे को आराम से रखने का भार था। रानी अपने को सँभाल न सकीं और राजकुमारी पर बरस पड़ीं।

रत्नादे ने कहा, 'माँ तुम्हारे पुत्र फूलकुँवर की शादी एक बार तो हो चुकी है। हमने दूसरी रानियां भी देखा है मगर उनमें से कोई भी निहालदे के पाँव की धूल के बराबर भी नहीं है।'

सुल्तान, जो एक कोने में खड़ा था, इतना अधिक घबरा गया कि उसकी इच्छा हुई कि वह जल्दी बाहर चला जाय। उसे देखकर रानी चीख पड़ीं 'ओ भिखमंगे! निहालदे की सगाई मेरे बेटे फूलकुँवर से हुई थी। तेरी हिम्मत कैसे हुई कि आगे बढ़कर मुझे मत्स्य-बेध का यत्न किया। तू भूल गया रे, कि भीख माँगकर जो दाने तूने इकट्ठे किये थे वे धरती पर बिखर गये। महाराजा न पूछते तो तू भूख के मारे ही कूच कर गया होता।

सामने आकर सुल्तान ने रानी को प्रणाम किया और बोला 'जब आप ऐसा सोचती हैं तो मेरा अब यहाँ एक पल भी रुकना अनुचित है।"

इतना कह सुल्तान निहालदे को लेकर अपने कक्ष में आ गया। निहालदे दिखाने को भरसक साहस से काम लेना चाहती थी मगर भीतर ही भीतर वह बेहद भयभीत थी।

असह्य मनोवेदना से वह कक्ष में पहुँचते ही सिसकने लगी, 'तुम कहाँ जाओगे ? मेरा क्या होगा ? मैं क्या करूँगी ? अभी तो मेरे हाथों की यह मेंहदी भी नहीं छूटी है।' उसने शून्य में निहारा। उसके भौंरे-जैसे काले बालों की दो-एक लटें बिखर गई थीं।

सुल्तान ने उसकी पीठ थपथपाई, "निहाल, तुमने रानी की बात सुनी है। यह सच है कि महाराजा मुझे अपने पुत्र से बढ़कर स्नेह देते रहे हैं, और मैं उनका सम्मान करता हूँ मगर जो कुछ रानी ने कहा है, उसके बाद मैं नहीं समझता कि मुझे एक पल भी यहाँ रहना चाहिए।

'तो मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी।'

"मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि राजा तुम्हारी देख-भाल करेंगे और तुम्हें कोई कष्ट न होगा। मैं भी साल-भर के भीतर तीज के पर्व के दिन तुम से आ मिलूँगा।'

एक क्षण चुपचाप रह वह सोचती रही। पर बेचैनी ने निहालदे का पीछा न छोड़ा। झल्लाकर उसने अपने एक हाथ से बाल पीछे हटाये, तो उसके कानों में चमकता एक बड़ा हीरा दीखने लगा। आँखों में आँसू थे और उसकी आवाज भर्राई रही थी।

सुल्तान ने कहा, "अगर मनुष्य को यह शरीर न मिलता तो फिर क्या कष्ट था! हमें वियोग का दुख भी न सहना पड़ता। जो भी हो, अब तुम्हें साहस से काम लेना चाहिए।" इतना कहकर वह चल दिया।

निहालदे के भीतर जैसे शक्ति का एक अणु भी न बचा

हो। उसके लिए पुकारना तक असम्भव हो गया। वह फ़र्श पर गिर पड़ी, कोई चीज छुरी की नोक की तरह उसके भीतर घुसकर उसके हृदय को छीलने और मरोड़ने लगी।

राजा को प्रणाम कर और उनसे निहालदे की देख रेख के लिए प्रार्थना करने के पश्चात् सुल्तान इवरकोट से चल पड़ा।

:: ५ ::

शहर से बाहर पहुँच कर सुल्तान संयोग से मरवसगढ़ की सड़क पर चल पड़ा। उसने एक बार पीछे घूमकर देखा। इवरकोट धीरे-धीरे दूर और दूर क्षितिज में विलीन होता जा रहा था। किन्तु फ़र्श पर मूर्च्छित उस स्त्री की छाया उसके मन पर छायी ही रही। बार-बार उसके मन में तीव्र निराशा की लहर दौड़ जाती। वह सोचने लगा कि इतिहास किस तरह दोहराया जा रहा था। उसे याद था कि किस प्रकार उसे अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी थी यद्यपि तब बात कुछ भिन्न थी। देशनिकाले के बावजूद तब माता पिता की शुभ कामनाएँ उसके साथ थीं। यहाँ तो साफ़ तौर पर उसके निकल जाने से एक माँ को प्रसन्नता हो रही थी।

उस बार वह अपने पिता, किचलकोट के राजा, द्वारा निर्वासित कर दिया गया था। और सायंकाल उसने अपना नगर छोड़ दिया था। रात अँधेरी थी। आकाश में बादल छाये हुए थे। जब-तब बिजली के कड़कने से शान्ति भंग हो

जाती थी। मगर तब १४ वर्ष का सुल्तान काली पोशाक पहने काले घोड़े पर चला जा रहा था।)

किवलकोट में राजा मैनपाल राज्य करता था। वह पिता के समान अपनी प्रिय प्रजा का पालन करता था। सभी उसका आदर करते थे। उसकी सुन्दरी रानी बड़ी पतिव्रता थी। ऊपर से तो वह सुखी थी मगर मन में उसे एक पुत्र की कमी सालती रहती।

एक दिन राजा ने सुना कि उसके राज्य में महात्मा गोरखनाथ पधारे हैं और उस छोटी-सी पहाड़ी पर उन्होंने धूनी रमाई है। राजा उधर चल पड़ा। महात्मा गोरखनाथ अग्नि के सामने बैठे तप करते थे।

पहाड़ी के नीचे राजा ने अपना घोड़ा छोड़ दिया, और पैदल ही ऊपर गया एवं गोरखनाथ जी की सेवा एक सेवक की तरह करने लगा। राजा को सेवा करते-करते छह महीने हो गये तो एक दिन योगिराज के नेत्र खुले।

वे बोले, ' राजन् तुम्हें क्या कष्ट है जो तुम छह महीनों से एक दास की तरह मेरी सेवा कर रहे हो ?"

"महात्मन् मुझे कोई कष्ट नहीं है, और मेरी प्रजा भी सुखी है, किन्तु बस एक पुत्र की इच्छा है। मैं उसी की भिक्षा माँगने आया हूँ।" राजा ने हाथ जोड़कर कहा।

महात्मा ने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा, "रानी के पास जाओ तुम्हें इष्ट प्राप्ति होगी।" महात्मा को प्रणिपात कर राजा लौट आया।

दस महीने बाद रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

सारा राज्य खुशी से फूला न समाया। सभी ने दीप जलाये। दस दिन तक सारे राज्य में उत्सव होता रहा। दसवें दिन राजा ने बड़े-बड़े पंडितों और साधु-सन्तों को आमन्त्रित किया और उनसे शिशु का भविष्य बतलाने की प्रार्थना की।

उन्होंने बालक की ओर देखकर उसकी जन्मपत्री पढ़ने के बाद कहा, 'इस बालक का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। यह एक महान् राजा होगा। नाम इसका सुल्तान रखा जाये। किन्तु एक बात ऐसी है जिसे आप नाराज न हों तो हम कहें।'

राजा ने जोर दिया कि वे निर्भय होकर जो भी कहना हो वह कहें। बुढ़ापे से झुकी कमर वाले एक विद्वान् ब्राह्मण ने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा 'इसके अतिरिक्त कि तुम्हारे पुत्र के लिए १२ वर्ष का निर्वास लिखा है, इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।"

राजा चिन्ता में पड़ गया। उसने सोच विचार के बाद यह निश्चय किया कि वह ध्यान रखेगा जिससे ऐसी स्थिति आये ही नहीं।

सुल्तान बसन्त के फूल की भाँति बढ़ने व खिलने लगा। राजा उसे अत्यधिक चाहते थे। जब भी समय मिलता, वे महल तक चले जाते, और सुल्तान के साथ खेलते रहते। मन्त्री का एक पुत्र भी उतनी ही उम्र का था। मन्त्री भी सुल्तान को बहुत प्यार करता था। शायद मन्त्री को आशा थी कि जब सुल्तान राजा बनेगा तो उसका पुत्र मन्त्री-पद पायेगा। वह सुल्तान के लिए लकड़ी की छोटी-छोटी गाड़ियाँ लाता

जिन्हें लकड़ी के हिरन फसाते थे। उस तीन वर्ष के बालक को उनके साथ खेलने में बड़ा मजा आता।

चार वर्ष का होते ही सुल्तान घुड़सवारी करने लगा। जब वह छह वर्ष का हुआ तो उसे पढ़ाने के लिए विद्वान् अध्यापक रखे गये। उसे इतिहास पढ़ाया गया। उसे बताया गया कि राजपूत कितना कठोर होता है और साथ ही अपने शत्रुओं के प्रति उदार भी। प्राचीन काल के राजाओं की कथाएँ भी उसे सुनायी गयीं कि किस तरह उन्होंने कर्तव्य-पालन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया था।

सुल्तान दस वर्ष का हुआ। दशहरे का दिन था—क्षत्रियों का विजय-पर्व। उसके पिता सुसज्जित सफ़ेद घुड़ाश्व पर सवार थे जिसकी केसर हवा के साथ मचल रही थी। अपने समरजित सूरमा योद्धाओं के साथ वे जुलूस के आगे-आगे चले। योद्धाओं के चौड़े कन्धे और लहराते जामे अपूर्व शोभा दे रहे थे।

वे जंगल में जाकर वनले भैंसों का शिकार करने लगे। चार भैंसों के साथ एक भारी बलवान् भैंसा वहाँ खड़ा दिखायी दिया। सुल्तान के पिता ने अपनी तलवार की नोक से उसे कोंच दिया और फिर उस भागते हुए भैंसे का पीछा किया और उसके पास पहुँचकर एक ही वार में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। भीड़ आगे बढ़ी और खुशी के नारे लगाने लगी। दूसरे भैंसे अब बचकर भागने का रास्ता ढूँढने लगे। उनमें भगदड़ मच गयी। उनका सिर काटने के लिए दूसरे योद्धा आगे बढ़े।

सारा राज्य खुशी से फूला न समाया। सभी ने दीप जलाये। दस दिन तक सारे राज्य में उत्सव होता रहा। दसवें दिन राजा ने बड़े-बड़े पंडितों और साधु-सन्तों को आमन्त्रित किया और उनसे शिशु का भविष्य बतलाने की प्रार्थना की।

उन्होंने बालक की ओर देखकर उसकी जन्मपत्री पढ़ने के बाद कहा 'इस बालक का भविष्य बड़ा उज्ज्वल है। यह एक महान् राजा होगा। नाम इसका सुल्तान रखा जाये। किन्तु एक बात ऐसी है जिसे आप नाराज न हों तो, हम कहें।'

राजा ने जोर दिया कि वे निर्भय होकर जो भी कहना हो वह कहें। बुढ़ापे से झुकी कमर वाले एक विद्वान् ब्राह्मण ने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा 'इसके अतिरिक्त कि तुम्हारे पुत्र के लिए १२ वर्ष का निर्वास लिखा है, इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।'

राजा चिन्ता में पड़ गया। उसने सोच-विचार के बाद यह निश्चय किया कि वह ध्यान रखेगा जिससे ऐसी स्थिति आये ही नहीं।

सुल्तान बसन्त के फूल की भाँति बढ़ने व खिलने लगा। राजा उसे अत्यधिक चाहते थे। जब भी समय मिलता, वे महल तक चले जाते और सुल्तान के साथ खेलते रहते। मन्त्री का एक पुत्र भी उतनी ही उम्र का था। मन्त्री भी सुल्तान को बहुत प्यार करता था। शायद मन्त्री को आशा थी कि जब सुल्तान राजा बनेगा तो उसका पुत्र मन्त्री-पद पायेगा। वह सुल्तान के लिए लकड़ी की छोटी-छोटी गाड़ियाँ लाता,

जिन्हें लकड़ी के हिरन चलाते थे। उस तीन वर्ष के बालक को उनके साथ खेलने में बड़ा मज़ा आता।

चार वर्ष का होते ही सुल्तान घुड़सवारी करने लगा। जब वह छह वर्ष का हुआ तो उसे पढ़ाने के लिए विद्वान् अध्यापक रखे गये। उसे इतिहास पढ़ाया गया। उसे बताया गया कि राजपूत कितना कठोर होता है, और साथ ही अपने शत्रुओं के प्रति उदार भी। प्राचीन काल के राजाओं की कथाएँ भी उसे सुनायी गयीं कि किस तरह उन्होंने कर्तव्य-पालन और सम्मान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया था।

सुल्तान दस वर्ष का हुआ। दशहरे का दिन था—क्षत्रियों का विजय-पर्व। उसके पिता सुसज्जित सफ़ेद युद्धाश्व पर सवार थे जिसकी केसर हवा के साथ मचल रही थी। अपने समरजित सूरमा योद्धाओं के साथ वे जुलूस के आगे-आगे चले। योद्धाओं के चौड़े कन्धे और लहराते जामे अपूर्व शोभा दे रहे थे।

वे जंगल में जाकर वनले भैंसों का शिकार करने लगे। चार भैंसों के साथ एक भारी बलवान् भैंसा वहाँ खड़ा दिखायी दिया। सुल्तान के पिता ने अपनी तलवार की नोक से उसे कोंच दिया और फिर उस भागते हुए भैंसे का पीछा किया और उसके पास पहुँचकर एक ही वार में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। भीड़ आगे बढ़ी और खुशी के नारे लगाने लगी। दूसरे भैंसे अब बचकर भागने का रास्ता ढूँढ़ने लगे। उनमें भगदड़ मच गयी। उनका सिर काटने के लिए दूसरे योद्धा आगे बढ़े।

सुल्तान अपने टट्टू पर खड़ा था। सोने से मढ़ी उसकी तलवार बगल में लटक रही थी। लोगों ने भैंसे के एक पाड़े को भागते देखा तो कहा कि सुल्तान को उस पर हाथ आज माना चाहिए। सुल्तान ने अपने घोड़े को दौड़ाया और उस पर वार किया। एक वार, दो वार तीन वार। छोटी-सी तलवार धारवाली तो थी मगर पाड़े के चमड़े को वह सिर्फ़ छील सकी। वह घायल होकर छिड़कता हुआ भागा। बगल से एक योद्धा निकला, जो सदा सुल्तान के साथ रहता था। उसने पाड़े की गर्दन काटकर उसे वहीं खत्म कर दिया। सुल्तान बड़ा दुखी हुआ और उस रात को सो नहीं सका। उसके पिता उसके पलंग के पास से गुज़रे और उसका सिर थपथपा दिया। दूसरे दिन दो योद्धा उसे तलवार चलाने की शिक्षा देने के लिए नियुक्त कर दिये गये।

सुल्तान निशानेबाजी का भी खासा शौकीन था। उसने तरह-तरह के धनुष-बाण इकट्ठे कर रखे थे और उनसे निशाना लगाया करता था। कुछ मन्त्रियों के लड़के भी इस काम में उसके साथी बने। उनमें से चन्द्रसिंह नामक लड़का सुल्तान को विशेष प्रिय था।

एक दिन वह अपने महल की छत से एक बाज़ पर निशाना लगा रहा था कि चन्द्रसिंह ने उसे चौंका दिया। अचानक बाधा पड़ने से उसका हाथ हिला और तीर आकाश में सीधे न जाकर बाज़ को लगने के बजाय नीचे की ओर राजपुरोहित की पुत्री के लग गया। वह सड़क से कहीं जा रही थी। तीर उसके बायें हाथ को खुरचता हुआ दूर जा गिरा।

अचानक उसने देखा कि महल की छत पर कुछ सैनिक आ पहुँचे और उन्होंने सुल्तान से धनुष-बाण-सहित राजा के पास चलने को कहा। राजपुरोहित भी वहीं पर थे। राजा मनपाल भाग्य की इस विचित्रता से अवाक् रह गये जिसने उनके पुत्र को ही अपराधी बना दिया। राजपुरोहित भी सुस्त हो गया। उसने कहा, 'महाराज, मैं सन्तुष्ट हूँ कि अपराधी को पर्याप्त दण्ड मिल चुका है।

मगर राजा ने कहा, 'पर मैंने आपको वचन दिया था कि आपकी पुत्री को आहत करने वाला चाहे जो भी हो, उसे जरूर दण्ड दिया जायगा।"

मन्त्रियों ने दखल देना चाहा। सुल्तान, सभी का प्रिय था। उन्होंने विरोध किया, 'अभी यह बच्चा ही है इसके साथ ऐसा करना अन्याय होगा। उसने जान-बूझकर तो ऐसा किया नहीं।' राजा वचन-बद्ध थे, इन दलीलों के सामने झुकना उनके लिए असम्भव था।

सुल्तान आगे बढ़कर बोला, 'राजपूत सीना तानकर संकट का सामना करता है। और राजपूतों में बच्चा क्या? उसे बचपन से ही संयम सीखना चाहिए। मैं दण्ड भोगने को तैयार हूँ।"

राजकुमार सुल्तान को १२ वर्षों के लिए निर्वासित कर दिया गया। उसकी आयु तब १८ वर्ष की थी मगर वह लगता था अठारह का। उसे काली पोशाक और काला घोड़ा दिया गया। उसी शाम को घोड़े पर चढ़ वह चल पड़ा।

सुल्तान अपने टट्टू पर सवार था। सोने से मढ़ी उसकी तलवार बगल में लटक रही थी। लोगों ने भैंसे के एक पाड़े को भागते देखा, तो कहा कि सुल्तान को उस पर हाथ आज़माना चाहिए। सुल्तान ने अपने घोड़े को दौड़ाया और उस पर वार किया। एक वार, दो वार, तीन वार। छोटी सी तलवार धारवाली तो थी मगर पाड़े के चमड़े को वह सिर्फ़ छील सकी। वह घायल होकर डिड़कता हुआ भागा। बगल से एक योद्धा निकला, जो सदा सुल्तान के साथ रहता था। उसने पाड़े की गर्दन काटकर उसे वहीं खतम कर दिया। सुल्तान बड़ा दुखी हुआ और उस रात को सो नहीं सका। उसके पिता उसके पलंग के पास से गुज़रे और उसका सिर थपथपा दिया। दूसरे दिन दो योद्धा उसे तलवार चलाने की शिक्षा देने के लिए नियुक्त कर दिये गये।

सुल्तान निशानेबाज़ी का भी खासा शौक़ीन था। उसने तरह-तरह के धनुष-बाण इकट्ठे कर रखे थे और उनसे निशाना लगाया करता था। कुछ मन्त्रियों के लड़के भी इस काम में उसके साथी बने। उनमें से चन्द्रसिंह नामक लड़का सुल्तान को विशेष प्रिय था।

एक दिन वह अपने महल की छत से एक बाज़ पर निशाना लगा रहा था कि चन्द्रसिंह ने उसे धोखा दिया। अचानक बाधा पड़ने से उसका हाथ हिला और तीर आकाश में सीधे न जाकर बाज़ को भगने के बजाय नीचे की ओर राजपुरोहित की पुत्री के लग गया। वह सड़क से कहीं जा रही थी। तीर उसके बायें हाथ को खुरचता हुआ दूर जा गिरा।

अचानक उसने देखा कि महल की छत पर कुछ सैनिक आ पहुँचे और उन्होंने सुल्तान से धनुष-बाण-सहित राजा के पास चलने को कहा। राजपुरोहित भी वहीं पर थे। राजा मैनपाल भाग्य की इस विचित्रता से अवाक रह गये जिसने उनके पुत्र को ही अपराधी बना दिया। राजपुरोहित भी सुस्त हो गया। उसने कहा, महाराज, मैं सन्तुष्ट हूँ कि अपराधी को पर्याप्त दण्ड मिल चुका है।"

मगर राजा ने कहा मैंने आपको वचन दिया था कि आपकी पुत्री को आहत करने वाला चाहे जो भी हो, उसे जरूर दण्ड दिया जायगा।"

मन्त्रियों ने दखल देना चाहा। सुल्तान सभी का प्रिय था। उन्होंने विरोध किया, "अभी यह बच्चा ही है इसके साथ ऐसा करना अन्याय होगा। उसने जान-बूझकर तो ऐसा किया नहीं। राजा वचन-बद्ध थे इन दलीलों के सामने झुकना उनके लिए असम्भव था।

सुल्तान आगे बढ़कर बोला, "राजपूत सीना तानकर संकट का सामना करता है। और, राजपूतों में बच्चा क्या? उसे बचपन से ही संयम सीखना चाहिए। मैं दण्ड भोगने को तैयार हूँ।"

राजकुमार सुल्तान को १२ वर्षों के लिए निर्वासित कर दिया गया। उसकी आयु तब १६ वर्ष की थी, मगर वह लगता था अठारह का। उसे काली पोशाक और काला घोड़ा दिया गया। उसी शाम को घोड़े पर चढ़ वह चल पड़ा।

६ ::

वह घोड़ को कभी दुलकी तो कभी सरपट चाल से दौड़ाता रहा। अचानक उसने शेर की दहाड़ सुनी। घोड़ा हिनहिनाया और पिछले दोनों पाँवों पर खड़ा हो गया। सुल्तान ने अपनी तलवार निकाल ली और तयार हो गया। इस पहली मुठ-भेड़ के जोश में उसकी आँखें चमक उठीं। मगर शेर दहाड़कर भाग गया।

वह चलता रहा। पेड़ों के बीच से मन्द-मन्द वायु बह रही थी। कभी-कभी उसके चेहरे पर चाँद की किरणें पड़ जातीं। जंगल घना होता जा रहा था। उसके चारों ओर पेड़ों के तने थे और लम्बी जंगली लताएँ साँपों की तरह उन पर लिपटी हुई थीं। हरीतिमा का पहला चन्दोवा बहुत ऊपर नहीं था। मगर उसके बाद दैत्याकार वृक्षों का दूसरा चन्दोवा था, जो छोटे वृक्षों के बहुत ऊपर था। उस घने जंगल में एक छाया उसे मार्ग दिखलाती मालूम पड़ी। वह भय और आश्चर्य से चकित हो उठा।

उसे धुंधली-सी याद थी कि महात्मा गोरखनाथ कहाँ मिलेंगे। वह अपने जन्म की कहानी भी जानता था। चौदह वर्ष की उम्र को देखते हुए वह काफी चतुर और सबल था। उसने गोरखनाथ जी को स्मरण किया, और उसे लगा जैसे एकाएक उस स्थान पर कोई दवी शक्ति उसकी रक्षा के लिए आ पहुँची।

लगातार दो दिन और दो रातें चलकर वह ऐसी जगह जा पहुँचा, जहाँ से एक पहाड़ी दिखाई दे रही थी। घोड़ा

और आगे बढ़ने पर उसने देखा कि पहाड़ी की चोटी पर आग की लपटें उठ रही हैं। वही गोरखनाथजी का स्थान था।

महात्मा समाधि लगाये हुए थे। अग्नि निरन्तर जल रही थी। उनका एक शिष्य आग में लकड़ियाँ डाल रहा था। सुल्तान जाकर योगिराज की सेवा में जुट गया। वे उसे आँखें खोलकर देखें और पहचान इसके लिए कई दिन तक उसे रुकना पड़ा।

सुल्तान ने कहा, "मैं आपके वरदान से जन्मा था। कहने की आवश्यकता नहीं आप तो सबज्ञ हैं, आप भलीभाँति जानते हैं कि मुझे किस परिस्थिति में अपने पिता का नगर तजना पड़ा। अब मैं आपकी सेवा में हूँ। कृपया मुझे मार्ग दिखलायें। मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।"

"दो वर्ष तक तुम्हें मेरे साथ रहकर यहाँ धनुर्विद्या और तलवार चलाना सीखना चाहिए। तुम्हें शास्त्रों का ज्ञान भी होना चाहिए, ताकि तुम एक सुयोग्य राजा बन सको। दो वर्ष बाद मैं तुम्हें अन्य आदेश दूँगा।'

सुल्तान गोरखनाथजी के साथ रहने लगा। वे उसे नित्य शिक्षा देने लगे। दो वर्षों में ही वह युद्धकला में ऐसा प्रवीण हो गया कि इतना ही सीखने में साधारण मनुष्य को दस वर्ष लग जाते। उसने नीतिशास्त्र तथा अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त किया जो प्रत्येक राजा के लिए जरूरी था।

एक दिन सुबह गोरखनाथजी ने उसे बुलाकर कहा मेरे बेटे, अब तुम्हारी शिक्षा समाप्त हुई, और तुम सोलह वर्ष के हो गये। तुम जहाँ भी रहो एक योग्य शासक की तरह

रहो, पर अभी तुम्हें निर्वासन के दस वर्ष और बिताने हैं। मेरी शुभ कामनायें सदा तुम्हारे साथ हैं। तुम्हें पहले इंदरकोट जाना चाहिए और आधे दिन भिक्षा माँगनी चाहिए। इससे तुम में विनम्रता आयेगी। इसके बिना तुम्हारी शिक्षा अधूरी होगी। जब भी कोई संकट आ पड़े तब मुझे याद करना। मैं तुम्हारी मदद के लिए आ जाऊँगा।" इन शब्दों के साथ महात्मा ने सुल्तान को विदा किया। वह घोड़े पर चढ़कर इंदरकोट की ओर चल पड़ा।

नगर-द्वार पर उसने एक राजपूत को देखा जो उच्च पद पाने के योग्य था, मगर था ग़रीब, और मुसीबत का मारा। सुल्तान उदार था, उसने अपना घोड़ा और बाकी वस्तुएँ राजपूत को उपहारस्वरूप दे दीं। उसने एक भिक्षापात्र लिया और नगर की ओर चल पड़ा जिससे अपने गुरु द्वारा निर्दिष्ट तप को पूरा कर सके।

वह घर घर भिक्षा माँगने गया पर सभी जगह उसे इन्कार मिला। अन्त में वह एक जौहरी की दुकान पर पहुँचा। जौहरी बड़ा चतुर था। सुल्तान के मुख-मण्डल में कुछ ऐसा था जिसने जौहरी को आकृष्ट कर लिया। दो मुट्ठी अनाज लाकर उसने उसके भिक्षा-पात्र में डाल दिया।

तप का आधा दिन पूरा हो गया। सुल्तान को जो भी थोड़ा-बहुत मिला उसे लेकर वह आराम से धीरे-धीरे चला जा रहा था। उसी समय वहाँ का राजा कामध्वज राव नगर में घोड़े पर जा रहा था। राजा दूसरी ओर देख रहा था तो दुलकी चाल से जाने वाले उसके घोड़े ने सुल्तान को धक्का दे

दिया। जो थोड़ा-सा अनाज सुल्तान ने इकट्ठा किया था वह जमीन पर बिखर गया। बिना कुछ कहे सुल्तान उठ खड़ा हुआ।

अचानक धक्का लगने से राजा ने इधर दृष्टि घुमाई और जब उसने किसी को गिरा हुआ देखा तो वह मदद के लिए उतर पड़ा। उसने सुल्तान की आँखों में एक चमक देखी और वह उसकी ओर इतना आकृष्ट हुआ कि पूछ बैठा 'नवयुवक तुम कौन हो ? कहाँ से आ रहे हो ?

'श्रीमान्, आप यही मान लें कि आकाश ने मुझे फेंक दिया है और धरती ने अपनी गोद में उठा लिया है, बाकी बातें भूल जायें।

किसी परोक्ष शक्ति ने राजा का मार्गदर्शन किया। उसने सुल्तान को गले लगाते हुए कहा, 'युवक, तुम मेरे पुत्र के समान हो। तुम मेरे लड़के फूलकुँवर के योग्य साथी बन सकोगे। मैं ईश्वर को साक्षी करके वचन देता हूँ कि मैं तुम्हें अपने पुत्र से कम नहीं समझूँगा।

राजा सुल्तान को अपने महल में रानी के पास ले गये और सुल्तान का परिचय कराया।

७

सुल्तान जानता था कि महाराज कामध्वज उससे बड़े प्रसन्न हैं। निहालदे से सुल्तान का विवाह होने के पहले तो राजकुमार फूलकुँवर ने भी सब तरह से सलूक निभाया।

निहासवे

मगर सुल्तान निहासवे को कैसे भुलाये ? उसका मोहक मुखड़ा जिससे अमोघता झलकती थी उसके मन में घूम-घूम जाता। उसकी आँखों में वेधन करने की ग़ज़ब की शक्ति थी।

इदरकोट महल के जीवन में सुल्तान मनमौजी घुमक्कड़ बन गया था। सुबह से शाम तक वह अपना समय घुड़सवारी भाला चलाने और शिकार में बिताता। राजदरबारी जश्न की दावतें उड़ाते और नाच देखते। घने काले बालों वाली सुन्दरियाँ अँगूठियाँ पहने हुए सुगन्धी में तर खूब सजी-धजी अतिथियों को मदिरापान करातीं।

राजघराने से सम्बन्धित हरेक व्यक्ति को लगता कि इस तरह का वासनापूर्ण जीवन ही उनका लक्ष्य है। किन्तु धीरे धीरे सुल्तान को यह विलासी जीवन बोझिल लगने लगा। वह उन लोगों से ऊब गया। दूसरी ओर, उसकी रुचि पुस्तकों कलाकृतियों और अच्छे घोड़ों की ओर बढ़ने लगी। पर उसमें उस घराने के लिए एक राजपूत की परम्परागत सम्मान और स्वामि भक्ति की भावना थी जिसके कारण वह खुलकर इनका विरोध न कर सका।

एक दिन खबर आयी कि कामरूप राज के किसी सूबेदार ने विद्रोह कर दिया है। उसने वार्षिक कर देने से इन्कार कर दिया है, और पड़ोस के नवाब दाऊद खाँ से मदद लेने की सोच रहा है। इसलिए उस पर चढ़ाई कर दी गयी। सुल्तान और फ़ूलकुँवर दोनों सेना के साथ गये।

सूबेदार माधसिंह तीन हज़ार सैनिकों को साथ लेकर

उनका सामना करने आया। सुल्तान ने आक्रमण कर बाघसिंह को गाँव के पिछवाड़े तक भगा दिया। उसके आधे सैनिक मारे गये, या घायल हुए और उसे पकड़ लिया गया।

विजेता के लिए यह आम बात थी कि वह लूटपाट करे और पराजित शत्रु के राज्य से युवतियाँ भी पकड़ मँगाये। सुल्तान ने अपने चुने हुए सैनिकों के साथ आगे आकर सैनिकों को लूटमार और बलात्कार करने से रोका। फूलकुँवर ने सुल्तान के तेवर समझने के लिए उसकी ओर देखा। सुल्तान आज हर कदम के लिए तैयार था। अन्त में फूलकुँवर ने अपने कन्धे हिलाकर कहा, 'ठीक है, जैसा तुम चाहो।' उसके स्वर में क्षमा-याचना का भाव न था।

इस लड़ाई के बाद फिर वही पुरानी जिन्दगी बिताने लगे। फूलकुँवर एक मसनद के सहारे लेटा हुआ था। नृत्य खास तौर पर रंगीन था, क्योंकि नर्तकी दक्षिण से आयी थी और वह उधर की देव-दासियों की तरह भड़कीली पोशाक में थी। सुल्तान विचारों में खोया हुआ पास में बैठा था। वह जानता था कि फूलकुँवर अपने दोस्तों के साथ बहुत अनुदार था और डींग हाँका करता था। वह बड़ी शोखी से अपनी भूख शराब और सभोग की पाशविक वासनाओं से पूरी करने में लिप्त रहता था। सुल्तान को थोड़ी निराशा भी मालूम पड़ने लगी थी, क्योंकि अब ऐसी संगत में रहना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।

फूलकुँवर ने कहा, "तो तुम समझते हो कि तुम्हीं पुराने सद्गुणों की जीती-जागती मूर्ति हो!"

'मैं ऐसा कुछ नहीं कह रहा हूँ। मैं तो केवल ऐसे मार्ग पर चलने का यत्न करता हूँ जो मेरे विचार से जनता को कुछ कष्टों से मुक्त कर सके।"

'मैं नहीं समझता कि पराजित शत्रु को दण्ड देना गलत है क्योंकि यह कहते-कहते फूलकुँवर सुल्तान की ओर देखता हुआ बीच में रुक गया। उसने चेहरा बिचकाकर एक प्याला और ढाल लिया। फिर वह शराब के नशे में मसनद पर लुढ़क गया।

सुल्तान ने घृणा की दृष्टि से देखा मगर दूसरे ही क्षण उसके मुख पर कृतज्ञता का भाव उभर आया। उसे कामध्वज राव की याद आ गयी। उसने अपनी उँगलियाँ चटकाई और जँभाई लेता हुआ फूलकुँवर उसके दोस्तों शराब और उन औरतों को छोड़कर बाहर आ गया। हालांकि फूलकुँवर ऊपर से तो सुल्तान से मिलता दिखलाता रहा मगर भीतर से उसके प्रति उदासीन हो गया।

उस दिन कुछ बारिश हो रही थी। फूलकुँवर और सुल्तान ने शिकार पर जाने का तय किया। अच्छे-अच्छे घोड़े लेकर वे जंगल में गये। फूलकुँवर ने एक हिरन देखकर उस पर निशाना साधा। पर उसके मारने के पहले ही हिरन भाग निकला। दोनों भाई उसके पीछे-पीछे घोड़े दौड़ाने लगे। तीसरे पहर तक वे उसका पीछा करते रहे। सुल्तान बड़ा अच्छा घुड़सवार था इसलिए फूलकुँवर पीछे रह गया। हिरन शहर की ओर भागने लगा। नगर के निकट राजा की पुत्री का एक बाग था। कंलागढ़ के राजा अपनी पुत्री को बहुत

प्यार करते थे और उसके लिए उन्होंने एक बड़ा सुन्दर बाग़ लगवाया था।

उस समय राजा की बेटी निहालदे अपनी सखियों के साथ बाग़ में टहल रही थी। द्वार पर उसने अपने जूते छोड़ रखे थे। हिरन बाग़ के अन्दर कूद पड़ा और सुल्तान ने उसका पीछा किया। बाग़ में घेरकर उसने हिरन को गिरा दिया।

पेड़ों के बीचो-बीच चारों ओर हरे घास के मखमली समकोण बने थे। हौज़ और फ़व्वारों के कारण वहाँ खूब शीतलता थी। इतनी दूर चलने के कारण वह काफ़ी थक गया था, और उसे लौटने की ख़ास जल्दी भी नहीं थी।

फूलकुंवर उसी समय बाग़ के द्वार पर पहुँचा और वहाँ पड़े जूतों की जोड़ी उसे इतनी अच्छी लगी कि उन्हें लेकर वह इंदरकोट लौट आया।

इधर-उधर घूमती हुई निहालदे वहाँ पहुँची जहाँ सुल्तान घोड़े के पीछे हिरन को बाँध रहा था। वह ऐसे सुन्दर तेजस्वी पुरुष को देखकर चकित रह गयी। उन्नत भाल और सीधी नाक। वह लम्बा था, कन्धे उसके चौड़े थे और भुजाएँ बलिष्ठ। यह जानने के लिए कि वह कौन है, निहालदे चुप चाप एक पेड़ के पीछे ठहर गई।

आशा से आगन्तुक को वह देख रही थी कि उसके बारे में कुछ और जान पाये। कुतूहल उसे बाहर खींच रहा था। गुलाब की झाड़ियों के पास एक क्षण वह ठिठकी। गुलाब की झाड़ी से एक लाल-नीले रंगों से चमकती तितली उड़ी और ज़रा हवा में मँडरा कर दूसरे फूल पर जा बैठी। निहालदे फिर सामने निकल आयी।

:: ८ ::

कई दिनों तक लगातार चलने के बाद सुल्तान नरवल गढ़ नगर के निकट पहुँचा। एक कुएँ पर कुछ औरतें पानी खींच रही थीं। वह नाँद पर घोड़े को पानी पिलाने लगा।

उन औरतों में एक सब पर हावी थी। मरुस्थल की ओर से आती हुई हवा के सूखे झोंकों से उसके जूड़े से दो-एक लट खुल गयीं, और चिढ़कर उसने झटका देकर बालों को पीछे कर दिया। उसके चेहरे पर क्रोध का भाव झलकने लगा, मानो उसके बालों ने भी उसे छेड़ दिया हो। तभी उसने, लम्बे, छरहरे घुड़सवार को निश्चिन्तता से वहाँ खड़े देखा।

'क्षमा करना, बहन ! क्या यह नरवलगढ़ है ?" उसने पूछा।

"हाँ।

यहाँ का राजा कौन है ?'

'डालईश्वर, हालांकि असली शासक तो महारानी माख हैं। अपना काम करते हुए उसने गरदन घुमाकर देखा कि यह व्यक्ति अपना घोड़ा लेकर शहर की ओर जा रहा है।

काफ़ी चलने के कारण घोड़ा और सवार दोनों थके हुए थे। सुल्तान ऐसी जगह की तलाश में था जहाँ कुछ देर आराम कर सके।

बड़ी उमस का दिन था वह। जो थोड़े से पेड़ थे, वे भी स्थिर खड़े थे। उनकी नीचे लटकती पत्तियाँ धूल से भरी हुई थीं। पोखरों से कीचड़ की गंध आ रही थी। मैदान की घास जलकर भूरी हो गयी थी। कुछ दूर आगे उसने देखा कि यहाँ

एक खूबसूरत बाग़ है। वह उसके अन्दर गया। उसे वहाँ बहुत सुहावनी ठण्डक मालूम दी। घोड़े को एक तरफ़ बाँध वह एक पेड़ की छाँह में लेट गया। पिछले कई दिनों से निहालदे की चिन्ता के मारे वह ज़रा भी आँखें बन्द न कर सका था। वहाँ के शान्त और शीतल वातावरण से उसकी व्याकुलता कुछ कम हुई, और वह तुरन्त गहरी नींद में सो गया।

वह बाग़ शहर के एक बड़े जौहरी की बेटी का था। कुछ देर बाद वह अपनी सखियों के साथ वहाँ आयी। धीरे धीरे टहलती वह उस पेड़ के निकट पहुँची, जहाँ सुल्तान चादर ओढ़कर आराम से सो रहा था।

लड़की ने उसके पास पहुँचकर उसकी चादर खींच ली और उबल पड़ी "ए घुड़सवार हिम्मत कसे हुई तुम्हारी कि मेरे बाग में आ घुसे ?"

जैसे ही चादर झटके से खींची गयी सुल्तान चौंककर उठ बैठा। उसने लड़की को अपने पास खड़ी देखा। उसके काले केशों के जूड़े में जवाहरात दमक रहे थे। कपड़े उसने बेपरवाही से अपने ऊपर डाल-से रखे थे। सिर्फ़ एक घाघरा और चोली, जिसके फ़ीते पीठ पर बँधे थे। पीठ एकदम नंगी थी। वह नंगे पाँव थी। एक विशेष प्रकार की स्वच्छन्दता थी उसके चेहरे पर। दौड़ते समय उसने दुपट्टा एक तरफ़ फेंक दिया था। माता-पिता की उस पर कोई रोक-टोक न थी, क्योंकि वे उसे बच्ची ही समझते थे।

सारा स्थान मरुवा की गन्ध से गमक रहा था। जब जौहरी की बेटी ने सुल्तान के सुन्दर मुखड़े को देखा, तो उसकी

तेज आँखों में खुशी की एक चमक आ गयी और उसके कठोर मुख पर मुस्कान फैल गयी। सुल्तान बहुत ही रूपवान था और उसकी गठन बड़ी बाँकी थी। उसके मुँह पर कुछ मुहासे थे, मगर पौरुष झलक रहा था। उसे देखकर वह लड़की भी सोचती ही रह गयी, वह तो उसे चाहती है सचमुच चाहती है तनिक भी लज्जा न दिखलाते हुए उसने कहा, 'आराम करो, लगता है जैसे बहुत थके-माँदे हो।

सुल्तान ने कहा, 'आपके बाग में बिना आज्ञा आने का मुझे बहुत अफसोस है। मैं चला जाता हूँ।' और वह उठ खड़ा हुआ।

लड़की ने विस्मित नेत्रों से उसे देखा और हिचकिचाते हुए कहा 'डरो मत, आराम से बैठ जाओ।

'मैं डरता नहीं हूँ। मैंने तो आपको असुविधा देने के लिए क्षमा माँगी" सुल्तान हँसा और उससे कुछ दूर हटकर बैठ गया।

सुल्तान की हँसी लड़की को खूब भायी। वह धीरे-धीरे बिल्कुल निकट आ गयी चिबुक हिली, और वह मुस्करायी, फिर पास आकर बगल में बैठ गयी। एकाएक उसने अपने हाथ फैलाये और उसकी उँगलियों को छूने लगी।

सुल्तान ने सोचा शायद यह मित्रता का स्पर्श हो या सम्भव है इससे कुछ अधिक हो जो उसकी भीतरी भावना को भी प्रकट करता हो। लड़की ने धीमे से साँस खींची। उसने सुल्तान की ओर देखा। उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसके पास होकर भी कोई इतना उदासीन रह सकता है।

"आपको अपनी सखियों के साथ आना चाहिए।

अपना मुँह सुल्तान के मुह के पास करके वह बोली, यहाँ बड़ा अच्छा लगता है। फिर उसकी आँखों में झाँकते ए उसने कहा, क्यों ? कहो तो दूसरी ओर चलें।

सुल्तान ने अपना हाथ खींच लिया। उसके नमन-नक्श च्छे थे मगर वह अपनी शोखी में पूरी पागल मालूम ड़ती थी।

वह अपना सिर सुल्तान के कन्धे पर रख कुछ फुसफुसायी र सुल्तान कुछ समझ न सका। अपनी भरी सुकुमार लचीली ह से वह सुल्तान को वश में करने की कोशिश में लग गयी। ुल्तान उठ खड़ा हुआ और ज़ीन लेकर घोड़े के पास आ गया।

यदि कोई स्त्री किसी पुरुष को वश में करना चाहती हो, ो बचाव इसी में है कि पुरुष वहाँ से भाग जाय, नहीं तो मुसीबत निश्चित हो है। लड़की को सुल्तान बहुत रूखा जंगली और सनकी लगा। लड़की के नयन कजरारे थ, पर अब उसकी सफेद पुतलियाँ लाल हो गयीं। वह ज़ोर-ज़ोर से साँस लने लगी, मानो फुफकार रही हो। उसके नथुने फूल गये थे।

वह यह सोच भी नहीं सकती थी, कि कोई उस जैसी सुन्दरी का इस तरह तिरस्कार कर सकता है। क्रोध से उसका गला रुँध गया। उसकी आँखें बाहर निकल आयीं। बड़ी कोशिश से फुफकारते हुए उसने कहा, 'अगर इस अपमान का बदला मैंने न लिया, तो अपने बाप की बेटी नहीं।' और वह तेजी से भाग गयी।

:: ६

सुल्तान घसने ही वाला था कि कुछ सैनिकों ने उसे घेर लिया। सुल्तान काफ़ी लम्बा-तगड़ा था और उसका खाण्डा भी क़रीब पाँच फ़ीट लम्बा था। थोड़े ही वारों में उसने सब को घायल कर दिया।

सैनिक उसे इस बहादुरी से लड़ते देखकर दंग रह गये। उन्हें इस बात का विश्वास न हुआ कि ऐसा आदमी किसी लड़की को छेड़ सकता है। राजा तक यह बात पहुँचायी गयी। ऐसे बहादुर और कुशल योद्धा से मिलने राजा ढोलकुँवर स्वयं बाग़ में आ गये।

राजा को देख शहर के तमाशबीन भी इकट्ठे हो गये और बाग़ के सामने काफ़ी भीड़ लग गयी। राजा भीतर गये। आश्चर्यान्वित सुल्तान को देखते ही राजा को लगा मानो वह मूर्तिमान शौर्य को देख रहा है। हाथ उठाकर उसने सुल्तान का जयनाद किया। सुल्तान की आँखों से स्वच्छता, दृढ़ संकल्प और वीरता झलक रही थी। राजा ने अपने मन्त्री से कहा 'ऐसा व्यक्ति ऐसा अपराध नहीं कर सकता।

सुल्तान ने झुककर राजा को प्रणाम किया।

भीड़ ने भी समझ लिया कि यह योद्धा तो कोई पराक्रमी राजा है झगड़े की जड़ वह लड़की ही है।

राजा अपने घोड़े से उतर पड़ा और उसका हाथ पकड़ते हुए बोला भाई अजनबी! तुम कहाँ से आ रहे हो? तुम्हारे राज्य का नाम क्या है? तुम कहाँ जा रहे हो?'

सुल्तान ने हाथ जोड़कर कहा, 'मैं बहुत दूर से आ रहा

हूँ। थकने के कारण घोड़े से उतरकर यहाँ आराम कर रहा था। भाग्य जहाँ भी ले जाये वहीं चला जाऊँगा। मुझे किसी खास जगह नहीं जाना है।'

सुल्तान की बातों में जादू था। सभी उसकी ओर खिंचते चले आये।

राजा ने कहा 'मैं जानता था कि तुम्हारा कोई अपराध न होगा क्योंकि जौहरी की लड़की जब मेरे दरबार में घबरायी हुई आयी थी, तभी उसकी आवाज से यह पता नहीं चलता था कि उसका सचमुच अपमान हुआ है। उसने मुझसे कहा महाराज मैं नहीं जानती थी कि आपके राज्य में भी ऐसी घटना घट सकती है। एक घुड़सवार जबरदस्ती मेरे बाग में घुस आया और उसने मुझसे छेड़छाड़ की।

"मैंने उससे कहा 'घबराओ नहीं। मैं उस दुष्ट को देखता हूँ जो आत्मवध करने पर उतारू है।' लेकिन अब तो मुझे पूरा विश्वास हो गया कि तुम ऐसे व्यक्ति नहीं हो जिस पर ऐसा अभियोग लगाया जा सके।"

:: १० ::

रानी मारू की पालकी भी बाग में आ पहुँची। उसने कहलवाया कि वह भी इस खुशी में शामिल होने आ गयी है।

रानी के लिए अलग से एक तम्बू गाड़ा गया। सुल्तान को लेकर राजा उसके पास पहुँचे। रानी ने देखा, सुल्तान की

भुजाएँ लम्बी हैं, उनमें इस्पात की तरह शक्तिशाली पकड़ है मगर शायद आलिंगन करने में रुई से भी मुलायम हैं। वह खूब लम्बा था। उसकी मुख-मुद्रा से दृढ़ संकल्प टपकता था। उसे देखकर रानी के शरीर में उन्मत्त हर्ष से कम्पन की लहर दौड़ गयी। उसने चाहा कि सुल्तान उसे अपनी बाँहों में कस ले और अनबुझ वासना से उसके मुख को मसल डाले। उस व्यक्ति के सौन्दर्य से वह मोहित और स्तब्ध हो गयी।

रानी ने राजा की ओर देखकर कहा, 'मैंने दासी से पूछा था कि आखिर वह सुल्तान कौन है जिसने सबको मुग्ध कर दिया है।

"दासी ने कहा मैंने उसे नहीं देखा लेकिन सुना है वह इतना विस्मयकारी व्यक्ति है कि उसे देखते ही लोगों का भय दूर हो जाता है और वे निश्चिन्त हो जाते हैं। इसलिए मैं आपके पास आ गयी।''

स्त्री के अन्तर को समझना आसान नहीं, मगर सुल्तान ने इतना तो ताड़ ही लिया कि रानी के मन में हलचल है। जब एक लड़की ने इतना संकट खड़ा कर दिया तब इस स्त्री के आ जाने से न जाने क्या हो जाय? सुल्तान ने राजा से निवेदन किया "मैं आपका बड़ा आभारी हूँ कि आपने मुझे इतना सम्मान दिया लेकिन मैं अधिक देर तक यहाँ नहीं ठहर सकता। अब मुझे जाना ही चाहिए।

राजा ने कहा "अब रात हो गयी है। मेरी राय है कि आप प्रातःकाल तक यहीं रुक जायें।

सुल्तान ने क्षमा माँगते हुए कहा मेरे लिए कोई फ़र्क

नहीं पड़ता कि यह दिन है या रात।' वह घोड़े पर चढ़ा और अपनी राह पकड़ी। जब वह शहर के दूसरे पार गुजर रहा था, तो ऐसी जगह पहुँचा जहाँ एक गढ़ी थी, जिसके चारों ओर बुर्जियाँ थीं। लोग इसे समदबुज कहते थे। इस गढ़ी का क़िलेदार था पनिया पठान। पठान बाहर निकली कानिस के ऊपर बैठा चारों तरफ़ की रखवाली कर रहा था। सुल्तान ने उससे पूछा, 'क्या आप मोपाल ब्रोस का रास्ता बता सकेंगे?'

पठान ने चिल्लाकर जवाब दिया यह सफ़र का वक्त नहीं है, रास्ता खतरनाक है। रास्ते में एक भयानक जंगल पड़ता है, जिसकी चौड़ाई २५० मील है, उसमें शेर और दूसरे जंगली जानवर बहुतायत से हैं।'

मैं जंगली जानवरों से नहीं डरता। मुझे इस समय यहाँ कोई काम नहीं है, फिर समय खोकर क्या करूँगा।'

पठान अपनी जिद पर अड़ा रहा। नीचे आकर उसने किसी तरह सुल्तान को ठहरने के लिए मना लिया। पठान ने पहले उसके भोजन का प्रबन्ध किया और चूँकि उसे रखवाली करनी थी इसलिए सुल्तान भी उसके साथ वहीं बैठ गया। फिर वे इधर-उधर की बातें करने लगे।

नगर के इस भाग की रक्षा के लिए पठान के पास पाँच सौ सैनिक थे। उसने सुल्तान को गढ़ी में घटने वाले बहुत-से क़िस्से भी सुनाये। जब आधी रात हो गयी तो पठान ने कहा, 'सुल्तान, चूँकि तुम्हें लम्बे सफ़र पर जाना है इसलिए अब सो जाओ।"

"आँखों से तो अब नींद ग़ायब हो चुकी। अगर तुम

मुझे जगल के रास्ते नहीं आने देते तो शहर ही देखने दो। इस वक्त मैं लड़कियों के चक्कर म नहीं पड़ूंगा।" सुल्तान ने कहा।

-- ११

नरवलगढ़ मे एक जिन न बड़ा उपद्रव मचा रखा था। शुरू में वह बीसियों आदमियों को खाता और ढोरों को मार देता। बाद में राजा ने यह तय कर दिया कि नित्य एक आदमी १२ बोतल शराब लेकर जिन के पास जाया करेगा।

सुल्तान घोड़े पर शहर में घूम रहा था। एक गाड़ी उसके पास से गुजरी। वह शायद देर से लौट रही थी। और सब जगह शान्ति थी। सिर्फ़ एक खुली खिड़की या दरवाजा धीमी हवा से डोल रहा था या कभी-कभी कोई कुत्ता भौंक जाता।

जब वह रत्ना जौहरी के मकान के पास से गुजरा तो उसने किसी को रोते हुए सुना। सुल्तान ने घोड़ा रोक दिया, और दरवाजे को खटखटाया। काफ़ी दस्तकें देने के बाद एक नौकर ने दरवाजा खोला।

"क्या बात है? क्या मैं कोई मदद कर सकता हूं? कौन रो रहा है?'

'श्रीमान्, यह हमारे मालिक की बहन रो रही है। आज जिन के पास हमारे मालिक के जाने की बारी है। इस घर में वही एक मर्द हैं। रोने का कारण यही है।"

सुल्तान ने नौकर से कहा, "मैं उस बहन से मिलना चाहूँगा।"

नौकर उसे भीतर ले गया।

वह पालथी मारकर जमीन पर बैठी थी। उठने लगी तो गिर पड़ी।

"आप घबराइए मत। आपके भाई की जगह जिन के पास मैं जाने को आया हूँ।"

पिता द्वारा वह निर्वासित कर ही दिया गया था और निहालदे को भी खो चुका था। निर्वासन मृत्यु के अतिरिक्त और क्या है? यह दूसरा निर्वासन पहले से कहीं अधिक कष्ट-कर था एक तरह मृत्यु ही थी। फिर क्यों न किसी निरपराध को बचाकर मरूँ, उसने सोचा।

रत्ता सेठ की बहन इस बात पर विश्वास न कर सकी। आगन्तुक की मृत्यु निश्चित थी। वह इस बात पर इतनी हर्षित हो उठी कि मुँह से कुछ बोल भी न सकी। उसने सुल्तान के हाथ पर अपना हाथ रखा। फिर नवनीत ख्याकुल बनी वह सेठ रत्ता की पत्नी के पास गयी 'एक ऐसा आदमी आया है, जो मेरे भाई की जगह जिन के पास जाना चाहता है।'

सेठानी तो कष्ट से अण्डबण्ड बक रही थी, और कनी-कनी पागल की तरह अट्टहास करने लगती थी। 'मेरी भोली बहन तुम क्या समझती हो कि एक अजनबी मेरे प्यारे पति की खातिर अपने आपको मौत के मुँह में डाल देगा?'

सुल्तान बाहर से यह सब सुन रहा था। अन्दर आकर उसने कहा, "बहन, क्यों संशय में पड़ती हो? डरने की कोई

बात नहीं। मेरे साथ क्या हो सकता है? मेरा क्या बिगड़ जायेगा?"

सेठ की पत्नी का नाम मेधना था। वह भय से कांप रही थी। उसका शरीर थरथराने लगा। जब-तब, उसके मुंह से एक गहरी आह निकल जाती। चेहरा उसका सफ़ेद पड़ गया और वह फूट-फूटकर रो पड़ी। आंसुओं को उसने पोंछने की कोशिश की और अर्ध-बेहोशी में उसके मुंह से शब्द अपने आप निकल पड़े "तुमने मुझे अपनी बहन समझा, इसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूं। मगर तुम्हारा मतलब क्या है, तुम चाहते क्या हो? यह तो पागलपन है।' और वह अजब ढंग से ज़ोर-ज़ोर हांफती हुई सांस लेने लगी मानो ग़श आ गया हो। कितनी दयनीय हालत है यह सोचते ही सुल्तान ने उसे झकझोर दिया।

जब थोड़ी संभली तो सुल्तान ने कहा न तो आपसे मुझे धन-दौलत चाहिए न कुछ और।

मेधना ने एक क्षण सन्देह से देखा फिर वह इतनी हर्षो-मत्त हो उठी कि अपने नये धर्म-भाई को गले लगा लिया। फिर उसने कहा जिन यह बड़ा भयानक है। मैं तो आतंकित हूं।'

रत्ना जौहरी की बहन और उसकी पत्नी सुल्तान को डरते-डरते रत्ना के पास ले गयी, और उसे सब बता दिया।

रत्ना ने कहा, "मैं क्या कहूं यह समझ में नहीं आता। आप मेरे लिए जो कुछ कर रहे हैं उसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। मैं यह नहीं समझ पाता कि आप इतना बड़ा बलिदान क्या करने जा रहे हैं?'

'नहीं नहीं, मैं ऐसा क्या खास काम कर रहा हूँ।' बीच में टोकते हुए सुल्तान बोला।

रत्ना कहने लगा, "मैं आपको अपनी जगह नहीं जाने दूँगा। मुझे तो एक ही चिन्ता लगी रही है कि मेरे बाद इन औरतों की देखभाल के लिए कोई नहीं बचेगा। मेरा रोआँ रोआँ आपका कृतज्ञ रहेगा कि कम-से-कम एक आदमी तो ऐसा मिला जिसने मुझे थोड़ी-बहुत राहत दी।

:: १२ ::

जब दिन के पास आने का समय हुआ तो राजा के पाँच सिपाही रत्ना के घर आये। उनके अगुआ ने रत्ना से चिल्ला कर कहा 'शराब की बोतलें लेकर बाहर आओ।'

बहन और पत्नी ने जब यह सुना तो वे चौंकीं, मानो नींद से जागी हों। न तो रत्ना से जाने के लिए कह सकीं, न सुल्तान से। दोनों बार-बार से रोने चीखने लगीं।

सुल्तान बिना कुछ कहे उठ खड़ा हुआ, और उसने शराब की बोतलें माँगीं। जब बहन हाथ में आयी। उसने कहा, 'भैया सुल्तान, यह ठीक है कि तुमने जाना चाहा है, पर हमारे लिए ऐसा करना बड़ा ग़लत है। यदि तुम्हारा पत्नी है तो वह विधवा हो जायगा और हमारे सिर सदा के लिए एक पाप चढ़ जायगा। तुमने मदद देने का जो वायदा किया था, वही बहुत है।

'मैं तुमसे कहता हूँ कि फ़िक्र छोड़ो और मुझे भूल जाओ। भगवान् मेरा रक्षक है। तुम भाई के साथ आनन्द से रहो भगवान् से मेरी यही प्रार्थना है।'

पत्नी यह सब ध्यान से सुन रही थी। मगर वह तो ऐसी चुप थी, मानो उसे लकवा मार गया हो। उसे लगा कि उसका दिमाग़ ख़राब हो गया है। उसने प्रयत्न किया कि कहीं उसे फिर ग़श न आ जाय। वह सुल्तान को नहीं जाने देगी। लेकिन वह अपने आप को सँभाल नहीं पा रही थी। कभी हँसती, कभी खिलखिलाती। नहीं नहीं, उसे अपने पर क़ाबू रखना चाहिए, वह ऐसा नहीं होने देगी। यह सब सोचते-सोचते वह बेहोश हो गयी।

सुल्तान ने शराब की बोतलें उठायीं और दरवाज़े की ओर बढ़ा। रत्ना जौहरी यह जानने की प्रतीक्षा में था कि क्या होता है। जब उसने देखा कि सुल्तान सचमुच जा रहा है तो उसने दौड़कर उसके पाँव पकड़ लिये और बोला 'मैं आपकी इस कृपा को कभी नहीं भूलूँगा। अब ज़िन्दगी में क्या धरा है? मेरी पत्नी और बहन की देखभाल आप करेंगे, बस, मुझे जाने दीजिए।'

'ईश्वर के लिए मेरा अपमान न करें। जब मैंने वचन दे दिया है तो अवश्य जाऊँगा। आप अपने परिवार के साथ आनन्दपूर्वक रहिए।' इतना कहकर सुल्तान सैनिकों के पास चला गया।

घर के लोग सुल्तान से अन्तिम विदा लेने आये। उन्होंने सैनिकों को भी बताया कि वह कौन है। सैनिकों ने कहा कि

उन्हें इसकी परवाह नहीं है कि वह कौन है। एक आदमी शराब लेकर चल रहा है बस यही काफ़ी है। वे शहर के सुन-सान कोने में गये जहाँ जिन के लिए स्थान बना हुआ था।

रात अँधियारी थी। सिर्फ़ चाँदनी की एक हल्की-सी परत फैली हुई थी। पहाड़ी की तलहटी के पास ऊँची दीवारों से घिरा हुआ वह स्थान था। जिन वहीं जाकर रात दावत उड़ाता था।

सैनिकों ने सुल्तान को उस घर में ढकेल कर दरवाज़ा बन्द कर दिया। ताला लगाकर वे शहर लौटने की तैयारी करने लगे। सुल्तान ने चिल्लाकर कहा 'सैनिक भाइयो मुझे आम आदमी मत समझो। मैं अपनी इच्छा से जिन के पास जा रहा हूँ और मैं भागने वाला आदमी नहीं हूँ। ताला लगा-कर मेरा अपमान मत करो।'

सैनिकों का अगुआ समझदार था। उसने सुल्तान की बात पर यकीन करके ताला खोल दिया। फिर वे शहर की ओर भाग गये।

:: १३ ::

सुल्तान ने चारों तरफ़ निगाह फेंकी। दीवारों से घिरी यह जगह बहुत बड़ी थी। बीच में एक बड़ा तख्ता रखा था, जिसके पास हजारों बोतलें पड़ी थीं। एक तरफ़ सुल्तान ने

हड्डियों का ढेर देखा। वह समझ गया कि ये हड्डियाँ उन बेचारों की हैं, जिन्हें जिन चट कर चुका है।

सुल्तान ने सोचा, जिन को शराब पीने का मौका देना उसकी ताक़त को बढ़ाना है। इसलिए उसने शराब को ज़मीन पर उँडेल कर बोतलों को फेंक दिया। उसने पेड़ का एक तना लाकर बीच में लिटा दिया और उसे कपड़े से ढँक दिया। फिर अपने गुरु गोरखनाथ को याद कर उनके आशीर्वाद की कामना करते हुए वह एक कोने में बैठ जिन की बाट जोहने लगा।

उसने देखा पहाड़ी पर एक लम्बी परछाईं काँप रही है और कुछ ही क्षणों में आकाश के सामने एक विशाल छाया मूर्ति भासित हुई। जिन पहाड़ी को लाँघ और दीवार फाँद कर अन्दर आ गया। जब वह तख़्ते के पास गया तो उसने देखा कि रोज़मर्रा की तरह बोतलें वहाँ नहीं हैं। वह चीख उठा "शामकुँवर, तो तुम्हें इतना घमण्ड हो गया है कि मुझे शराब तक नहीं भेजी। भूलना मत कि मैं फिर वही क्रिया दोहरा सकता हूँ जो पहले करता था। इस आदमी को चट करके मैं तुम्हें समझूँगा।" यह समझकर कि वहाँ कपड़ा ओढ़े हुए आदमी सो रहा है वह पेड़ के तने की तरफ़ कूदा।

पर जब उसने कपड़ा हटाया तो पेड़ का तना देखकर वह क्रोध से पागल हो उठा। वह ज़ोर-ज़ोर से चीखकर गालियाँ बकने लगा। सारे शहर में उसकी चिल्लाहट गूँज उठी। रत्ना उसकी पत्नी और बहन सभी अत्यन्त त्रस्त हो गये। उन्होंने समझा कि जो आदमी उनका भाई बनकर गया था वह निकल भागा।

सुल्तान खड़ा हो गया और वह भी चिल्लाया "न तो राजा जासकुँवर का दोष है न किसी और का। मैंने ही तुम्हारी शराब जमीन पर फेंक दी है और अब देखता हूँ कि तुम मेरा क्या कर लेते हो।" सुल्तान ने जिन की आँखों की ओर नहीं देखा, क्योंकि कहा जाता है कि जिन अपनी आँखों के प्रभाव से ही दूसरों को बाँधकर मारता है। सुल्तान जिन के शरीर की हरकतों को देखकर ही उसके पैतरों का अनुमान लगाता रहा।

जिन ने अत्यन्त क्रुद्ध होकर एक बड़ा पत्थर उठाया "ओ बौने, बहुत बढ़-बढ़कर बातें कर रहा है। मैं तेरी एक बात की तारीफ़ करता हूँ कि तू इस वक्त भी बहादुरी से बातें कर रहा है, जबकि तू जानता है कि मौत तुझ पर झपटने ही वाली है।" और उसने वह पत्थर सुल्तान पर मारा। सुल्तान एक तरफ़ हट गया। पत्थर दीवार में लगा और उसमें दरार पड़ गयी।

तलवार खींचकर सुल्तान दूसरे वार का इन्तज़ार करने लगा। जिन फिर उस पर झपटा मगर सुल्तान फिर बच गया। अब बिल्ली और चूहे का खेल होने लगा।

अट्टहास करते हुए उसने सुल्तान की एक बाँह अपने पंजे से घायल कर दी। सुल्तान पीछे हटा और फिर अचानक तलवार लेकर झपट पड़ा। जिन दाँव जान गया मगर बचाव करने पर भी तलवार की नोक उसकी जाँघ में घुस ही गयी। वे इस तरह एक-दूसरे को घायल करते हुए चक्कर लगाने लगे।

युद्ध चलता रहा। सुबह होने को हुई तो जिन ने समझ लिया कि उसे यह जोड़ का प्राणी मिल गया है।

सुल्तान ने देखा कि जिन छूटकर भागना चाहता है, तो वह चिल्लाया, 'अब छूट जाना तेरा नामुमकिन है। या तो मैं मरूँगा, या तुझे मारूँगा।

जिन समझ गया कि उसकी मौत करीब है और मौत की दहशत से ही उसकी ताकत को लकवा मार गया। उसने सुल्तान को घृणा और क्रोध से देखा और अपनी सारी ताक़त को लगाकर आखिरी वार किया। सुल्तान ने भी अपनी तलवार पूरी ताक़त से भांजी और ज़ोर से फेंकी। तलवार जिन की पसलियों को तोड़ सीने में घुस गयी और वह वहीं ढेर हो गया। सुल्तान ने बतौर उपहार के उसके नाक-कान काट लिये और उसकी लाश को खींचकर अहाते से बाहर पटक दिया। नाक-कान लेकर वह रत्ना के घर पहुँचा, और उससे गले मिलकर सोने चला गया।

:: १४ ::

दूसरे दिन सुबह पड़ोस के बच्चे अपने-अपने घरों से खेलने निकले। जब वे शहर के छोर पर पहुँचे तो वहाँ एक बहुत बड़ी लाश पड़ी पायी। वे डरे और भागने लगे। उनमें से एक-दो ने ज़रा हिम्मत से मकानों के कोने के पीछे से झाँक-कर देखा कि जिन अभी तक वहीं सोया हुआ है। धीरे-धीरे

उनमें से कुछ वापस लौटे। एक ने फिर हिम्मत बटोर कर पास आकर जिन पर एक छोटा-सा पत्थर फेंका। कुछ भी नहीं हुआ। तब तो लड़कों ने ढेर-के-ढेर पत्थर फेंकने शुरू कर दिये। फिर भी कुछ नहीं हुआ। तब वे सब उसके और पास चले गये।

गाँव के लोग अपने-अपने काम पर जा रहे थे कि उन्होंने देखा कि लड़के एक बहुत बड़ी देह को घेरे खड़े हैं। उन्हें भी जिज्ञासा हुई और वे उसके निकट आये। उनमें से एक साहसी आदमी ने एक बड़ा पत्थर उठाया और उसे जिन के सिर पर दे मारा। फिर वह दौड़ता हुआ यह सुनाने राजा के दरबार में पहुँचा कि उसने जिन को मार डाला है।

यह खबर कि जिन मारा जा चुका है दावाग्नि की तरह सारे नगर में फैलने लगी। राजा ने अपने मन्त्रियों से पता लगाने को कहा। खबर सच निकली, और उस साहसी आदमी ने बहुत बड़ा इनाम माँगा। उसके साथ दो मन्त्री निश्चित स्थान पर गये। जब उन्होंने शव-परीक्षण किया तो पता चला कि उसके नाक-कान गायब हैं। उस आदमी के दावे को निराधार बतलाकर उन्होंने राजा से कहा कि जिन को मारने वाले ने उसके नाक-कान काट लिये हैं, इसलिए जो व्यक्ति नाक-कान पेश करेगा वही जिन का वधकर्ता माना जायगा।

राजा ने हुक्म दिया कि यह घोषणा कर दी जाय कि जो भी जिन के नाक-कान पेश करेगा उसे खूब इनाम मिलेगा। उसने यह भी पूछा कि उस रात बारी किसकी थी? मन्त्रियों ने तुरन्त पता लगाना शुरू कर दिया। ज्ञात हुआ कि उस रात

रत्ना जौहरी की बारी थी। रत्ना को तुरन्त दरबार में हाजिर किया गया।

आकाश कबूतर की छाती की तरह बैंगनी पर भूरे छमके-दार हो रहा था। सुल्तान निश्चिन्तता से उठा घोड़ा कसा और बिना किसी से मिले रत्ना के घर से चल पड़ा। दक्षिणी हवा जोरों से बह रही थी। इधर-उधर बड़े छुटपुट पेड़ काँप रहे थे। वह पमिया पठान से विदा लेने उसकी गढ़ी में गया। बातचीत के दौरान उसने जिन से हुई लड़ाई का जिक्र भी कर दिया।

पठान ने कहा, 'राजा के पास नहीं जा रहे हो? रत्ना बेचारे पर तो बड़ी मुसीबत आ जायेगी। राजा उसे माफ़ नहीं करेंगे।"

हाँ तुम्हारा कहना ठीक है। जाने के पहले मुझे राजा को प्रणाम अवश्य करना चाहिए।'

इस बीच रत्ना को राजा के सामने पेश किया जा चुका था, और उससे सवाल पूछे जा रहे थे। रत्ना कह रहा था, महाराज वह एक अजनबी था। मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा था। वह खुद ही आया और मेरी जगह जाने के लिए तैयार हो गया। सुबह जब मैं उसे जगाने गया तो वह जा चुका था। मैं तो उसके उपकारों का तनिक भी बदला नहीं चुका सका।"

राजा इससे सन्तुष्ट नहीं हुआ, और वह रत्ना पर बहुत नाराज हुआ।

अभी यह सब हो ही रहा था कि सुल्तान को साथ लिये पठान दरबार में हाजिर हुआ। उसने कहा, महाराज, जिन

को मारने वाला आदमी यह है।" सुल्तान ने जिन के नाक-कान राजा के सामने फेंक दिये। सारा दरबार चकित हो उठा। आप से आप लोगों के सिर सुल्तान के प्रति सम्मान में झुक गये, मानो किसी परोक्ष सत्ता ने उन्हें इसके लिए बाध्य कर दिया हो।

राजा तो इतना अधिक प्रसन्न हुआ कि उसने दौड़कर सुल्तान को गले लगा लिया और कहा "तुम्हारा यह काम ऐसा है कि नगर की दीवारों पर सुनहरे अक्षरों में अंकित कर देना चाहिए। तुमने हमारे नगर को भीषण संकट से उबार लिया है। तुम्हारी इस लोक-सेवा को हम कभी नहीं भूल सकते। तुम जो चाहो माँग लो।

महाराज, मैंने किसी पुरस्कार के लिए जिन को नहीं मारा है।"

जब वह बाहर आया तो सारा शहर सुल्तान को घेरकर खड़ा हो गया। एक हाथी पर बिठाकर वे उसको जुलूस में ले चले।

जब जुलूस रानी मारू के महल के नीचे से गुजरने लगा तो वह अपने को नहीं सँभाल सकी। सुल्तान से मिलने की उसे तीव्र कामना थी। इतना साहसी और ऐसा सुन्दर पुरुष! क्या वह आयेगा? बस थोड़ी-सी देर उसने बाग में सुल्तान को उस दिन देखा था। उसके अन्तर में हलचल मची हुई थी। उसे लगा कि इसके पहले उसने कभी ऐसी बेचैनी महसूस नहीं की थी। उसकी पहली झलक में ही वह पुलक उठी थी। दूसरों के मन को भाँपने की क्षमता रानी मारू में थी। उस

लगा कि उसके उस दिन के व्यवहार को सुल्तान ने शायद पसन्द नहीं किया था।

उसने दासी से कहा, 'तुरन्त नीचे जाओ और सुल्तान से कहो कि मैं उससे मिलना चाहती हूँ।

दासी गयी और हाथ फैलाकर हाथी के सामने खड़ी हो गयी। हाथी रुका तो दासी ने रानी का सन्देश दे दिया।

सुल्तान महल में गया।

रानी ने कहा, "तुमने हमारे राज्य पर जो उपकार किया है, उसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। इतना कुछ करने के बाद हम तुम्हें ऐसे ही नहीं जाने देंगे। मैं पूछती हूँ तुम्हारे योग्य कोई काम दे दें तो कैसा रहे? क्यों न तुम हमारे ही साथ रहो?"

महारानी मैं सभी स्त्रियों को बहनों के समान समझता हूँ और उसी तरह उनका सम्मान करता हूँ। किन्तु मैं ऐसी जगह नहीं रह सकता जहाँ एक स्त्री शासन करती हो। मैं केवल पुरुषों के नीचे ही कार्य कर सकता हूँ।'

"मैंने तुम्हारे-जैसा व्यक्ति नहीं देखा। तुम जैसे बाहर से हो वैसे ही भीतर से भी। तुममें झूठा अहं नहीं है न खोखला दिखावा। तुम दम्भी नहीं हो, इसीलिए तुम मुझे पसन्द हो।"

'अगर आप चाहती हैं कि मैं आपके राज्य म रहूँ तो मैं समदबुर्ज के पनिया पठान के साथ रहना चाहूँगा जहाँ मैं सीधे तौर पर आपके अधीन नहीं रहूँगा।"

रानी ने सुल्तान की बात मान ली। यह भी निर्णय हुआ कि उसे प्रति माह एक लाख रुपये दिये जायेंगे।

तुमने मुझे अपनी बहन माना है इसलिए, हे भाई, यह राज्य अब तुम्हारी ही सुरक्षा में रहेगा। मुझे पूरी आशा है कि तुम इसकी ठीक से रक्षा कर सकोगे।" रानी ने पूरा भरोसा प्रगट करते हुए कहा।

"बहन, मैं भरसक कुछ भी उठा न रखूँगा। जब तक देह में प्राण हैं, मैं इस राज्य की भलाई के लिए लड़ता रहूँगा।'

रानी मात की आज्ञा से सुल्तान को पनिया पठान के पास पहुँचाया गया। पठान को बड़ी खुशी हुई कि उसे सुल्तान के साथ-साथ काम करने का अवसर मिलेगा। उसने सुल्तान को गले लगा लिया।

नगरवासियों को पता चल गया कि सुल्तान को समदबुर्ज में रखा गया है। सभी इससे बड़े प्रसन्न हुए। रत्ना जौहरी भी अपने उपहार लेकर सुल्तान के पास पहुँचा और उसने कहा, "सुल्तान, जिस दिन तुम मेरे बदले जिन के ग्रास बनने को गये उसी दिन से मेरे सहोदर भाई बन गये। मेरे पास इतना धन है कि नगर के १८ जौहरियों के धन के कुल जोड़ से भी अधिक है। मेरी यह सारी ही सम्पत्ति तुम्हारी सेवा में समर्पित है।"

सुल्तान ने इस कृतज्ञता के लिए रत्ना को धन्यवाद देकर विदा किया।

सुल्तान और पठान साथ-साथ घोड़ों पर सवार होकर मरवलगढ़ तथा दूसरे इलाकों की देख रेख करने लगे।

:: १५ ::

सुल्तान को नरवरगढ़ में रहते कई मास बीत गये। यद्यपि उसे राजा ने कई बार महल में आने का बुलावा दिया, किन्तु अक्सर वह अपने विचारों में ही खोया-सा रहता। इदरकोट की तरह नरवरगढ़ के राजपूतों का भी स्वभाव उसे बड़ा खराब लगा। वे उजड्ड क्रूर और धोखेबाज थे और डंडे की मार का ही मतलब समझते थे।

राजा को अपने रागरंग से ही फ़ुर्सत न थी। रानी ही शासन करती थी और भरसक अच्छा ही करती थी। मगर उच्च उद्देश्यों के लिए वह रागरंग को छोड़ने वाली भी न थी। अगर सुल्तान तैयार हो जाता तो रानी उसे अपना प्रेमी बनाने में भी न चूकती। ऐसी दशा में सुल्तान पर ही सब कुछ छोड़ दिया गया था। वह अपना अधिकांश समय सेना को मजबूत करने और सैनिकों के कुशल प्रशिक्षण में लगाता था। बाकी समय वह दूसरों के झगड़े सुलझाने में खर्च करता और इसमें न तो वह मन्त्रियों के कामों में दखल देता और न राजा से कोई आर्थिक मदद लेता।

सारा नगर सूखे बालुई क्षेत्र की तरह लगने लगा था। बसन्त आ रहा था। छुटपुट बिखरे रोहिड़ास्त के वृक्ष नारंगी लाल रंग के फूलों से भर उठे थे। वकायन की मोहिनी सुगन्ध से वातावरण भरपूर था। सुल्तान को धन जमा करने की इच्छा न थी। वह जो कुछ राजा के यहाँ से पाता ग़रीबों में बाँट देता और ऐसे कामों में लगाता जिनसे जनता का भला हो।

नगर में घूम फिरकर उसने देख लिया था कि कहीं ऐसा

स्थान न था जहाँ लोग नहा सकें और साथ-साथ तरल का आनन्द भी उठायें। इसलिए उसने एक प्राकृतिक झील बनवाने का तय किया। झील बन चुकने पर उसने कहा कि अगले किसी पर्व को यह जनता के नहाने के लिए खुल जायेगी।

झील बड़े मनोरम स्थान पर बनी थी। पीछे उसके एक छोटी ढालुवाँ पहाड़ी थी। उसकी तलहटी में पलाश के वृक्ष थे जो इस बात के प्रतीक थे कि नीचे जल होगा। दूसरी ओर सुनहरे रंग की रेतीली रेखा दीखती थी।

तपता हुआ ग्रीष्म-काल था। आकाश कुछ ऊपर उठ गया था और उसमें धुँधलापन था। सूरज जैसे आग उगल रहा था। बालू के कण जल रहे थे।

एक दासी ने सुल्तान से आकर कहा 'समदकुंड से कुछ दूर रानी मारू आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं। उन्होंने आपको बुलाया है। उन्हें बनजारा भीमसिंह ने जबरदस्ती रोक लिया है और उनके सैनिकों को मार डाला है। अगर आप तुरन्त नहीं जाते, तो रानी अपना अन्त कर लेंगी।'

सुल्तान उठ खड़ा हुआ। उसने अपने सबसे योग्य सहायकों जानी और मोधू को बुलाया। इन दो सहायकों के साथ सुल्तान रानी के पास गया। वहाँ पहुँचकर उसने रानी को दूसरे घोड़े पर बिठाया और क़िले की ओर लौट पड़ा। क़िले के पास की पहाड़ी पर वे चढ़ने लगे। सुदूर पहाड़ियों के पीछे सूर्य डूब रहा था। उसने क़िले के पहरेदारों से फाटक खोलने को कहा।

'श्रीमान्, हमें राजा ने फाटक खोलने से मना कर दिया है।" पहरेदार लाचार थे।

'घबराओ मत मेरी जिम्मेवारी है, तुम फाटक खोल दो।"

सुल्तान के इतना कहने पर फाटक खुले और रानी मारू अपने महल में चली गयीं।

रानी ने सुल्तान को बताया कि कैसे क्या हुआ था। जब उसने झील के बारे में सुना, तो रानी ने तय किया कि सबसे पहले स्नान करके झील का उद्घाटन वही करेगी। उसके साथ एक महिला ज्योतिषिन थी जिसने कहा था, 'महारानी ग्रहों के हेर-फेर के कारण आपको उस दिन न तो झील में नहाने के लिए और न किसी अन्य काम के लिए अपना महल छोड़ना चाहिए।'

रानी को बड़ी झुँझलाहट हुई। उसने ज्योतिषिन से कहा व्यर्थ की भविष्यवाणी मत किया करो और ऐसे कामों में टाँग न अड़ाया करो जो पूरी तरह ईश्वर के हाथ में हैं। जब मेरे भाई ने एक झील तैयार करायी है तो मैं एक अच्छे उद्देश्य से उसमें नहाने जाऊँगी और मेरे साथ कोई अशुभ घटना क्यों घटेगी।

ज्योतिषिन ने कहा 'जैसा ग्रहों का जमघट है उससे मैंने आपको चेता दिया, आगे जैसी आपकी इच्छा।'

नवनिर्मित झील के पास बनजारा सोमसिंह अपने भाई के साथ पड़ाव डाले हुए था। उसके साथ पच्चीस हजार सैनिक थे। असल में वह एक जबरदस्त लुटेरा था। पर अपना मान बढ़ाने के लिए ही अपने को बनजारा कहता था। उसकी सेना में ऐसे चुने हुए सैनिक थे, जिनका लड़ना ही धंधा था, और वे अपने से दुगुनी सेना का भी सामना कर सकते थे। हरेक उससे डरता था यहाँ तक कि मरवसगढ़ का राजा भी।

रानी पचास सैनिकों के साथ अपने रथ पर आ रही थी। आगे-आगे शहनाई बजाने वाले थे। उसकी दासियों के लिए भी खुली गाड़ियाँ और रथ थे। जुलूस भोमसिंह के पड़ाव के पास धीरे धीरे जा रहा था। उसके आगे अर्द्धगोलाकार रूप में हथियारबन्द सैनिक थे। भोमसिंह ने दो सौ सैनिकों के साथ आकर जुलूस को घेर लिया। उसने अपने सैनिकों से आक्रमण करने को कहा। मारू के लगभग सभी सैनिक भाग गये, सिर्फ पाँच-सात वहाँ डटे रहे। भोमसिंह ने हमला किया। वे भरसक जूझते रहे मगर जल्दी ही मारे गये।

रथ पर पड़ा परदा उठा दिया गया। रानी की सुन्दरता को देखते ही भोमसिंह पागल हो गया, और उसे वश में करने को चंचल हो उठा।

उसे लगा जैसे आकाश में पूनम का चाँद उदय हो रहा है। खंजन की सी आँखें कूंज की सी गर्दन और उसकी देह पीपल के पल्लव की तरह—ऊपर की ओर चौड़ी कटि के पास पतली। दाँत उसके पानीदार मोतियों के जैसे थे। उसकी सारी देह धूमहीन लपट की तरह काँप रही थी। परदे के एकान्त में उसका आँचल भी सरक गया था। तन पर केवल महीन रेशम की अंगिया थी, और घाघरा मुश्किल से घुटनों तक।

मारू के अपूर्व सौन्दर्य से भोमसिंह कुछ क्षण के लिए स्तम्भित रह गया। कुछ देर अपने को संयत करता हुआ वह बोला, ओ परियों की रानी, तुम कहाँ से आ रही हो? क्या तुम विद्युत् की जीती-जागती मूर्ति हो या स्वर्ग की कोई

अप्सरा ? तुम्हारे अगों की शोभा अवर्णनीय है। मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें इतना सुख दूँगा जो ढोलकुँवर के महल में तुम सपने में भी नहीं पा सकतीं।"

"नीच है तू। तेरा दिमाग खराब हो गया है। तू सीढ़ियाँ लगाकर चाँद तक पहुँचना चाहता है। अगर राजा को तेरी इस नीच हरकत का पता चल गया तो तू अपना सब कुछ खोने के साथ अपनी जिन्दगी से भी हाथ धो बैठेगा।"

भीमसिंह हँसा 'तुम्हें मेरी ताक़त का पता नहीं। तुम यह नहीं जानतीं कि मैं दौलतगढ़ कुम्भलगढ़ और सियालकोट को हरा चुका हूँ। मैं बूँदी के हाड़ाओं की ओर भी गया था। वे मुश्किल से चार घटे टिक सके और फिर उन्होंने भी हथियार डाल दिये। और ढोलकुँवर मैं कई बार नरवलगढ़ भी आया हूँ और हर बार राजा ढोलकुँवर ने मुझे खुश करने के लिए बहुमूल्य उपहारों से मेरा स्वागत-सत्कार किया है। वह तो एक मक्खी की तरह है जिसे मैं ज़रा सी उँगली दबाकर खतम कर सकता हूँ।

'अरे दुष्ट दूसरे की स्त्री की ओर ताकना महापाप है जो सर्प के विष की तरह तुझे खा जायेगा। जब तक सर्प क्रुद्ध नहीं हुआ तभी तक तू सुरक्षित है सर्प के फन उठाते ही तेरी मौत निश्चित है।

'मुझे क्रोध न दिखाओ रानी। मैं तुम्हारे पिता को जानता हूँ और उन्हीं के पास से मैं तुम्हें उठा लाया होता अगर तब तक तुम ढोलकुँवर के साथ ब्याही जाकर नरवलगढ़ न चली गयी होतीं।'

'बकार की बातें मत बक । अगर तू मेरे पिता के क़िले में गया होता तो वहाँ से ज़िन्दा न लौटता ।'

मोमसिंह क्रुद्ध होकर घोड़े से कूद पड़ा और उसने मारू का हाथ पकड़ लिया । उसकी आँखों के खूँखारपन से मारू डर गयी । अपना हाथ झटक इधर-उधर भागने का रास्ता ढूँढने लगी ।

तो तुम डरने लगीं न ! मैं यही देखना चाहता था । अब तुम्हारी शान कहाँ चली गयी ?

रानी को अपनी दयनीय स्थिति का पता चल गया । वह बोली, 'तुमने मुझे अकेले में पकड़ लिया है, तुम जो चाहो कर सकते हो । लेकिन मुझे जाकर अपने भाई सुल्तान से भेंट कर लेने दो मैं वायदा करती हूँ कि तुम्हारे पास लौट आऊँगी ।'

मोमसिंह जानता था कि रानी पर इतना विश्वास किया जा सकता है । अगर वह वापस न आई तो सेना तो है ही और जब वह स्वयं अपने को समर्पित करेगी तो कैसा अपूर्व आनन्द आयेगा । यह सोचकर उसने रानी को सुल्तान के पास जाने दिया । पर जाते जाते यह चेतावनी दे दी, 'भूलना मत । अगर तुमने अपना वचन न रखा, तो मैं नरवलगढ़ के पत्थर से पत्थर बजा दूँगा और तुम्हारे पति का भी खात्मा कर डालूँगा ।'

रथ वहीं छोड़कर रानी अपनी दासी के साथ सुल्तान के पास चली । रास्ते में वह रत्ना जौहरी की पत्नी की पालकी के पास से गुजरी । पालकी से वह उतर गयी और बोली, यह अच्छा नहीं लगता कि आप पैदल चलें और मैं पालकी पर । मेरे साथ चलकर मेरा मान बढ़ाइए ।"

"जब मेरे पति मेरी रक्षा नहीं कर सके तो मैं तुम्हारी सुरक्षा स्वीकार नहीं करूँगी। मुझे अकेली ही छोड़ दो।

रानी पहले अपने पति के क़िले की ओर गयी। निकट पहुँचने पर लोग उसे घूरकर आँखों की प्यास बुझाने लगे क्योंकि ऐसी त्रिलोक-सुन्दरी उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी। मारू के शरीर पर गहने नहीं थे। वह एक खास ढंग से चल रही थी मानो उसका रूप ही उसके लिए भार हो।

तब तक राजा को इस घटना का पता चल चुका था। उसने यह आज्ञा दे दी कि क़िले के फाटक बन्द कर लिये जायें। रानी ने मन में सोचा जब भाग्य साथ न दे तो ऐसा ही होता है। कुछ घंटों पहले जिस राज्य की मैं रानी थी आज उसी के द्वार मेरे लिए बन्द हो गये।

"महल की खिड़की पर मेरी सौत अमियादे खड़ी है। मेरी ओर ताककर वह मुझ पर हँस रही है। 'तुम्हारे बाप ऊँट चराते थे इसलिए तुम पैदल आ रही हो जबकि राजा ने तुम्हारे साथ लावलश्कर भेजा था'।

रानी मारू ने अपने को घोर अपमानित अनुभव किया किन्तु अपने को संयत करती हुई वह समदबुर्ज की ओर चली। कुछ दूर चलने के बाद वह एक पेड़ के नीचे बैठ गयी, और अपनी दासी को समदबुर्ज में भेज दिया।

:: १६ ::

मुल्तान निडर व्यक्ति था। निडरता मनुष्य के शरीर और मन को विचित्र शक्तिशाली बना देती है। इस गुण का प्रभाव दूसरों पर भी पड़ता है और वे भी साहसी बन जाते हैं। वह सीधा राजा के पास गया और रानी से जो कुछ सुना था वह कह सुनाया।

ऐसे ही अवसर पर राजपूत के साहस की परीक्षा होती है। अगर हम इस समय कुछ भी नहीं करते हैं तो हमारा मुँह काला हो जायगा। हमें दुष्ट नाभसिंह की खबर लेनी चाहिए।

अधिकांश लोगों का जीवन उनके वातावरण द्वारा निर्मित होता है। वे भाग्य से बनी परिस्थितियों में अपने को दास समझते हैं और उसी में सन्तुष्ट रहते हैं वही उन्हें भाता भी है। पर कुछ लोग जो इस श्रेणी के बाहर होते हैं अपना भाग्य स्वयं बनाते हैं। कहावत मशहूर है

'लीक लीक कायर चलें लीक लीक कपूत।
लीक छाड़ तीनों चलें सायर सिंह सपूत॥

मुल्तान भी इसी बाहर की श्रेणी में था। परिस्थितियाँ चाहे जितनी विषम हों उनके सामने उसने घुटने कभी नहीं टेके थे। वह उनसे हमेशा जूझा और ईश्वर पर निष्ठा होने के कारण सदा विजयी हुआ।

राजा शामकुँवर एक अँधेरे कमरे में बैठकर अपना दुःख भुलाने के लिए शराब पी रहा था। वह भोमसिंह की मदिरा से आसक्त था। उसने मुल्तान को उत्तर देते हुए कहा, 'खासो

हाथों से तुम तारे तोड़कर नहीं ला सकते। उसने इस घटना पर कोई भी क़दम उठाने से इन्कार कर दिया।

सुल्तान ने दृढ़ता के स्वर में कहा, प्रत्येक मनुष्य में अपना भाग्य निर्माण करने के लिए अपार सामर्थ्य है। इच्छा-शक्ति एक चमत्कारी हथियार है। सुल्तान ने सामने के उस हीन व्यक्ति को देखा। उसकी आँखों में एक पल के लिए एक घृणा की झलक कौंध गयी।

बड़े ही भावपूर्ण ढंग से सुल्तान ने ओलर्कूवर को उसकी जाति की महत्ता उसके परिवार का सम्मान और स्वाभिमान की याद दिलायी। कहा, अपने पूर्वजों की परम्परा को याद करो, और उनकी कीर्ति को क़ायम रखो, नहीं तो न केवल अपने राज्य से आप हाथ धो बैठेंगे, बल्कि राज-सम्मान भी मिट्टी में मिल जायगा।

जब सुल्तान ने और ज़ोर दिया तो बड़ी उदासीनता से वह सुल्तान को १० हज़ार सैनिकों की एक सेना देने पर तैयार हुआ और वह भी सुल्तान की जलती आँखों को शान्त करने के लिए। ऐसा लगता है कि भविष्य में होने वाली घटनाओं के प्रति मनुष्य तभी तक भयभीत रहता है, जब तक वे घट नहीं जातीं और शायद होने वाली अच्छी घटनाओं की छाया पहले ही पड़ जाती है। ज्यों ही ओलर्कूवर उसे सेना देने को राज़ी हुआ सुल्तान आशाओं से इतना फूल उठा, मानो वह धनजारे पर विजयी हो चुका हो। सौभाग्य से यह आशा सत्य में परिणत भी हो गयी।

:: १७ ::

छोटी-सी सेना लेकर, गोभू और जानी के साथ मुल्तान भोमसिंह से लड़ने को तैयार हुआ। पनिया पठान ही समद बुर्ज क़िले का रक्षक था। वहीं पर सुल्तान को भी रहने का आदेश मिला था, मगर पनिया को यह बात बिल्कुल नहीं लगी और वे दोनों घनिष्ठ मित्र बन गए। जब पनिया को सुल्तान की तैयारियों का पता चला तो वह भी अपने पाँच सौ सैनिक लेकर उसके साथ हो लिया।

सुल्तान ने एकाएक आक्रमण करना ठीक न समझा। वह बनजारे को भुलावा देकर आक्रमण की तरकीब पूरी करना चाहता था। इसलिए उसने भोमसिंह के पास एक सन्देश भेजा, जिसमें राजा ढोलकुँवर की तरफ़ से कहा गया था कि बनजारा उस रात के लिए रानी को वहीं ठहरने की आज्ञा दे दे, दूसरे दिन वह लौटकर अपना वचन पूरा करेगी। और इस अवसर पर उसके सम्मान में एक ऐसी दावत दी जायगी जिसे वह जीवनभर नहीं भूलेगा।

जब सन्देश-वाहक भोमसिंह के पास पहुँचा तो वह इतना खुश हुआ कि उसने दूत को सौ मोहरें इनाम में दीं। उसने अपने सैनिकों में यह एलान करा दिया कि वे खूब आनन्द मनायें और रानी मारू के आगमन की खुशी में नर्तकियों को बुलाकर वह नाच-गान कराने लगा।

भोमसिंह उठा, जम्हाई लेकर उसने अपनी पगड़ी सँवारी और किनारे पर लगे शीशे में मुँह देख मूँछों पर ताव दिया और अपने आप से कहा तुम्हारी उम्र चालीस वर्ष की है भोमसिंह,

और मारू की २३ वष की मगर वह इस सूरत में कोई कमी नहीं पायेगी।'

सुल्तान और सेना को परस्पर एक दूसरे को समझना था। सनिक किसी व्यक्ति-विशेष के प्रति स्वामिभक्त रहेंगे और उसके लिए मर भी मिटेंगे पर किसी ऐसे व्यक्ति के लिए नहीं जिसका उन्होंने केवल नाम ही सुना है लेकिन उसे खुद देखा नहीं। उसे उनके सामने सशरीर प्रगट होना था।

सुल्तान ने उन्हें मदान में इकट्ठा किया और एकबारगी पुरानी परम्पराओं और परिपाटियों को भग कर दिया। उसने आक्रमण का प्रश्न उनके सम्मान से जोड़ दिया। असम्भावित के प्रति उनमें लालसा थी। उसकी वाणी से उनके चेहरों पर मन्द-मन्द हँसी फूट पड़ी।

जहाँ भीमसिंह का पड़ाव था सुल्तान उस क्षेत्र से भली भाँति परिचित था। यह एक खुला हुआ मैदान था जिसमें कुछ बालूई टीले थे और जहाँ कुछ भी छिप नहीं सकता था। वनजारे के पास तोपें थीं जबकि सुल्तान के पास इस मुक़ाबले के लिए कुछ भी नहीं था। जब तक तोपों को बकार नहीं किया जायेगा तब तक आगे बढ़ना मुश्किल होगा।

रत्ना भी आकर सेना में शामिल हो गया। सुल्तान ने पूछा 'भाई रत्ना अब हम लड़ने को तैयार हैं तुम्हीं बतलाओ तुम्हें कौन-सा काम सौंपा जाय ?'

'मैंने तो कभी तलवार की मूठ भी नहीं पकड़ी। लड़ाई की मैं एक भी कला नहीं जानता, लेकिन मेरी सारी सम्पत्ति तुम्हारी सेवा में हाज़िर है।

'तुम्हारी इस भेंट के लिए आभारी हूँ। तुम में मेरा
वास है और ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारे मन की मुझे अवश्य
पड़ेगी। सुल्तान ने कहा।

फिर सुल्तान ने पनिया पठान गोमू और जानी से पूछा
वे किस तरह मदद करेंगे।

पनिया पठान ने दृढ़तापूर्वक जवाब दिया "तलवार के
टे में मुझ कोई पछाड़ नहीं सकता।

"पाँच घंटों के लिए मैं युद्ध का सारा भार अपने ऊपर ले
ा। और आप देखेंगे कि एक राजपूत कितनी बहादुरी से
़ सकता है।" गोमू का उत्तर था।

जानी असल में एक चोर था, जो नाक के महल में चोरी
रते पकड़ा गया था। सुल्तान ने उसमें निहित गुण को पहचान
ाया और वह छोड़ दिया गया। अब वह सुल्तान का एक
योग्य सहायक था।

जब उसकी बारी आयी तो उसने कहा, "मैं दिन में कुछ
हीं कर सकता मगर रात में आप कोई भी काम सौंपें मैं
से पूरा कर दूँगा।"

तो जाओ जो उचित समझो करो, मेरी शुभ कामनाएँ
ुम्हारे साथ हैं।" सुल्तान ने उसकी पीठ ठोकते हुए कहा।

जानी ने अपने साथ चलने के लिए छह आदमियों को
ुना, जिसका अगुआ मायरसिंह था।

:: १८ ::

जानी भीमसिंह के पड़ाव की ओर चला। वे बिना रुके पाँव दबा-दबाकर चलते रहे। सामने एक मैदान था और हलकी चाँदनी में कुछ दीख रहा था। हवा के चलने से इधर उधर डोलती झाड़ियाँ, मैदान में यहाँ-वहाँ, छितराई हुई थीं। उन्होंने खमों का सर्वेक्षण किया। जानी ने फुसफुसा कर कहा 'उत्तर की ओर पुरुसाल मालूम पड़ती है।

जैसे ही चाँद बादलों की ओट में गया, उसे एक आहट मालूम हुई। कोई उसकी तरफ आ रहा था। सागरसिंह फुस फुसाया, 'शायद कोई पहरेदार आ रहा है। उसे कुछ कहने का मौक़ा न मिला। एक बड़ी-सी छाया उभरने लगी। वह उसकी तरफ़ बढ़ी। तभी उसे पता चला कि जानी उसकी बग़ल में नहीं है।

पहरेदार किसी खटके की आवाज़ से सजग हो गया, और उसने बन्दूक सँभाल ली। क्षण भर वह कान लगाकर आहट लेता रहा, लेकिन बालू पर गूँजने वाली हवा के सिवा और कुछ नहीं सुनायी दे रहा था। पर उधर धीरे-धीरे जानी पहरेदार के पीछे आ गया। चाँद निकलने के साथ ही सागरसिंह ने देखा कि जानी ने हाथ बाँधकर उल्टे तरफ़ से पहरेदार की गरदन पर वार किया जो उसके टेंटू में तपाक से लगा। बिना किसी आवाज़ के पहरेदार ढेर हो गया। वे उसे बालू में गाड़-कर आगे बढ़े।

चाँद का प्रकाश बढ़ने लगा था। पड़ाव के आसपास बहुत-से पहरेदार थे मगर वे चौकसे नहीं थे। उन्हें इस बात

का गुमान था कि वे मालिक हैं और किसी की हिम्मत नहीं, जो उनका विरोध करे। भागसिंह के खेमे स्पष्टतः आकाश के सामने काली छायाओं की तरह भासित होते थे। जानी चुपके से खेमों की अँधेरी छाया-छाया चलकर आगे बढ़ा। उसका किसी से सामना नहीं हुआ।

पहले उन्हें अस्तबलों की तलाश करनी थी। बिना किसी दुर्घटना के वे वहाँ पहुँच गये। सौभाग्य से सारे पहरेदार बाहर थे और साईस खर्राटे भर रहे थे। पहले उन्होंने तलवार के प्रहार से १००० जोड़े बैलों के रस्से काट दिये। फिर पन्द्रह सौ ऊँटों को रिहा किया। वहाँ एक सौ हाथी थे, और पन्द्रह हजार घोड़े। जानी के साथियों के लिए यह बड़ी मेहनत का काम था। हर तरह की कोशिश करके उन्होंने उन सबको खोल दिया।

उधर जानी बनजारे के पड़ाव की तरफ़ चल दिया। चुपचाप उसके हरम में दाखिल हो उसने देखा कि औरतें सो रही हैं। उसने छुरी निकाल कर उनके बालों के जूड़े काट दिये। फिर वह भोमसिंह के खेमे में पहुँचा। वह नशे में धुत होकर गहरी नींद सो रहा था। जानी ने उसकी आधी मूँछें और दाढ़ी काट ली, और उसके हथियार गायब कर दिये।

फिर जानी अस्त्रागार की ओर गया। वहाँ चालीस तोपें थीं। सागरसिंह भी आ पहुँचा। मिलकर उन्होंने उन तोपों में पत्थर डाल उनके मुँह बन्द कर दिये, जिससे दागी न जा सकें। उनका काम खत्म हो गया। अब सब कुछ उसके काबू में था। उसने चारों ओर देखा और आराम की साँस ली।

अब वे वापस अस्तबलों के पास आये, और घास इकट्ठा कर वहाँ ज़ोर की आग जला दी। इससे घोड़े डर गये और उनमें भगदड़ मच गयी। दूसरे जानवरों के लिए भी यह खतरे की घण्टी थी। उस भगदड़ में हाथी भी शामिल हो गये फिर भैंस और ऊँट भी। इस फेट म बनजारे की फ़ौज के दो हज़ार से अधिक आदमी खेत रहे और कई हज़ार घायल हुए।

सुबह के वक्त जब जासी क़िले के बाहर जाने के रास्ते तक पहुँचा तो रात के पहरेदारों का मुखिया दिन के रक्षकों के मुखिया से विदा ले रहा था।

:: १६ ::

भीमसिंह का सेनापति दौड़ता हुआ आया और उसने उसे ज़ोर से हिलाकर जगा दिया। जब बनजारे ने अपनी सेना की दशा देखी, तो वह समझ गया कि किसी ज़ोरदार से पाला पड़ा है, और लड़ाई हुई तो जीतना मुश्किल होगा। जल्दी से उसने अपने आदमी इकट्ठे किये और उन्होंने जितने जानवरों को सम्भव हुआ वश में किया।

इसी बीच भीमसिंह के हरम की औरतें चिल्लाने लगीं। इससे भीमसिंह इतना झल्लाया कि दिमाग़ी सतुलन खो बैठा। उसने अपने सेनापति को युद्ध की तैयारी का हुक्म दे दिया।

सुल्तान सुबह ही उठ गया था। चूँकि बनजारा अपनी तोपों से हाथ धो बैठा था, इसलिए जब सुल्तान के दिल में पूष

दुरुस्त थी। उसने हालत पर ग़ौर किया। बनजारे की मार अब मुश्किल से केवल दो सौ गज तक ही सीमित थी।

उसने भामो की पीठ थपथपा कर कहा "खूब अच्छे, इसके पहले कि शत्रु को अपनी तोपों की हालत का पता चले, हमें उसके निकट पहुँच जाना चाहिए।' उसका बढ़ा घोड़ा तैयार था। उसने सुन्दर कढ़ी हुई रास सँभाली और शानदार काठी पर उछलकर बैठ गया। गोपू और पनिया पहले से ही अपने घोड़ों पर सवार थे। वे उसके अगल-बगल चले।

भोमसिंह की तोपें ऐसी जगह रखी गई थीं जहाँ से सुल्तान को आगे बढ़ने से रोका जा सके। जब भोमसिंह के सैनिकों ने तोपें दागनी चाहीं तो उन्होंने देखा कि नालें जाम हैं और तोपें बेकार। इससे वे बेहद डर गये। सुल्तान ने उनकी प्रतिरक्षा की अगली कतार पार करली। इतने में बन्दूकों की गोलियों की बौछार सुल्तान की ओर आयी और उसने उसका जवाब भी दिया। कुछ सैनिक धराशायी हुए मगर उनकी जगह दूसरों ने ले ली।

भोमसिंह एक हाथी पर बैठा अपनी सेना का जोश बढ़ा रहा था।

सुल्तान ने चिल्लाकर कहा, "भोमसिंह, कोई फ़ायदा नहीं, लड़ाई छोड़ो। हम तो एक अच्छे उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं और तुम पाप का पक्ष लेकर। तुम कभी नहीं जीत सकते।'

भोमसिंह का जवाब था, "ठीक है, तो आओ, सिर्फ द्वन्द्व-युद्ध लड़कर ही निर्णय कर लें। तुम अपना सहायक चुन लो, और मैं भी अपना चुन लेता हूँ।"

सुल्तान तैयार हो गया।

सुल्तान की ओर से पनिया पठान आया। भोमसिंह ने अपने छोटे भाई परवतसिंह को बुलाया, जो उस समय का सबसे जबरदस्त पट्टेबाज माना जाता था।

वे एक-दूसरे पर तलवार भांजते और वार करते रहे। दोनों योद्धा जोश-खरोश से लड़ रहे थे, उनके घोड़े तिरछे हो कर अपनी जगह बदल देते। पनिया मौके की ताक में था। जब भी परवत उस पर वार करता, वह बच जाता। करते करते उसे मौका मिला और अचानक उसने परवत पर वार किया। वार इतनी फुर्ती से किया गया था कि परवत ताकता हो रह गया और वह वहीं ढेर हो गया।

सुल्तान चिल्लाया, 'अब तुम्हें समझ लेना चाहिए, भोमसिंह कि पाप कभी विजयी नहीं हो सकता।'

भोमसिंह क्रोध से पागल हो उठा "तुमने मेरे भाई को मार डाला। मैं अब मानने वाला नहीं हूँ।

सुल्तान ने अचानक देखा कि भोमसिंह के घुड़सवार आगे बढ़ने लगे। सवारों के हाथों में तनी हुई बन्दूकें थीं और उनका निशाना सुल्तान की दाहिनी भुजा पर था। सुल्तान के सैनिक उसकी आज्ञा के लिए उतावले हो उठे।

गोघू को पुकार कर उसने हुक्म दिया, 'अब युद्ध का भार तुम पर है। अब अपने सैनिकों को लड़ने की आज्ञा दो।"

गोघू ने इष्ट देवता का स्मरण किया और तलवार खींच-कर चल पड़ा। वह शत्रुदल को भेदता हुआ आगे बढ़ा। उसके साथी साथ-साथ थे। वह बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था, और

वे जहाँ भी देखते भोमसिंह की सेना को काटता हुआ गोधू ही नजर आता। सैकड़ों की सख्या म सैनिक खेत रहे फिर एक-दम घमासान लड़ाई होने लगी, और दो घण्टे के भीतर गोधू ने भोमसिंह के आक्रमण को पीछे धकेल दिया।

भोमसिंह क्रोध से पागल हो उठा। कहावत मशहूर है कि जब दुर्दिन आने को होते हैं तो आदमी की मति मारी जाती है। भोमसिंह ने अपने आदमियों को इकट्ठा कर सुल्तान पर सीधे धावा बोल दिया। उसके घोड़े तेज दुल्की में उस तरफ़ बढ़ने लगे।

सुल्तान इसके लिए तयार हो गया। उस टील के पीछे होती धुगबुगाहट को उसने ताड़ लिया था। घोड़ की रास कस ली। घोड़ों के उत्तेजित खुरो की आवाज के अलावा चारा ओर सन्नाटा छा गया। अपने सैनिकों की ओर ताकते हुए वह स्पष्ट और तेज स्वर मे आदेश देने लगा।

उसने अपन पास चुने हुए २५ सौ सैनिक रखकर बाक़ी का दोनों दिशाओं म तनात कर दिया। यह बराबरी की लड़ाई न थी, और जोखिम ज्यादा थी। सुल्तान अपनी टुकड़ी क साथ प्रतीक्षा करता रहा और भोमसिंह ने पास पहुँचते-पहुँचते सुल्तान पर आग बरसानी शुरू कर दी। चारों ओर धड़धड़ाहट होन लगी, और काला धुआँ मँडराने लगा। सुल्तान ने जवाब दमे का निश्चय किया। हालाँकि शत्रुदल कहीं ज्यादा था, फिर भी सुल्तान की सेना निडरता से आगे बढ़ी। राजपूतो की पगड़ियों के छोर हवा म लहरा रह थे। जब वे शत्रुओं से ३० गज दूर रह गये, तो ग़जब की घुड़सवारी से उन्होंने

अपने घोड़ों को साधा और भोमसिंह की सेना की दाईं-बाईं भुजाओं पर घूम पड़े। घोड़ों पर बैठे-बैठे ही वे धनुर्दस पर इतनी सरलता से निशाना लगाने लगे जितना जमीन पर खड़े तीर मारते।

भोमसिंह की सेना को गहरी क्षति पहुँची किन्तु उसके सैनिक बड़े जोश से सुल्तान पर उमड़ पड़े। लगने लगा कि सुल्तान अवश्य हार जायेगा। तभी सुल्तान की दूर खड़ी दाएँ और बाएँ की टुकड़ियों ने हमला बोल दिया। इससे भोमसिंह की सेना बीच में पिस गयी, और बनजारा क़ैद कर लिया गया।

जंजीरों से बाँधकर बनजारे को सुल्तान के पास लाया गया। नीच तुम्हारे जैसों के लिए कोई भी दण्ड कम है। तुम दूसरे की स्त्री का हरण करना चाहते थे? यह भी भूल गये कि वह रानी भी है। बताओ तुम्हें क्या दण्ड दिया जाय?

भोमसिंह उसके चरणों पर गिर पड़ा और बोला "तुम महान् हो मैं पापी हूँ। अपने जीवन में मैंने यह सबसे बड़ा पाप कर्म किया। मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूँगा। आज से मैं रानी मारू को पूज्य समझूँगा और राजा बीसलदेव का सदा सम्मान करूँगा। तुम चाहे जो करो। मैं तुम्हारी शरण हूँ।'

इसका फ़ैसला रानी करेंगी क्योंकि तुमने उन्हीं का अपमान किया है।

सुल्तान ने युद्धक्षेत्र के बारे में विस्तार से महल में कहला भेजा। रानी मारू रथ में बैठकर वहाँ पहुँचीं। उनकी आँखों

में एक चमक थी। पहले अपनी बावन दासियों के साथ वह नवनिर्मित झील पर गयीं। वहाँ स्नान किया और खेमे पर लौट आयीं, जहाँ सुल्तान उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह सिंहासन पर बैठीं और ओमसिंह उनके सामने पेश किया गया। ओमसिंह ने अपने सबसे क़ीमती जवाहरात नज़र करते हुए कहा, "मेरा जीवन आपके अधिकार में है। आप मुझे जो दण्ड देना चाहें दें।"

माक ने व्यंग करते हुए कहा, "इसके पहले कि तुम्हारा कोई फ़ैसला करूँ मैं अपना दिया वचन तो पूरा कर लूँ। क्या मैं तुम्हारे खेमे में चलूँ ?"

सुल्तान ने यह सुना तो क्रोध से काँप गया। पनिया ने तलवार खींच ली। ओमसिंह ने माक के चरणों पर अपना सिर रखते हुए कहा, "मैं अपनी दुष्टता और नीचतापूर्ण व्यवहार की काफ़ी सज़ा पा चुका हूँ। हे रानी, इस अधम पापी को अब क्षमा कीजिए।"

"यह निर्णय तो राजा करेंगे, क्योंकि तुमने मुझसे अधिक उनके प्रति अपराध किया है।"

मुँह में तिनका दबाये पशु की भाँति ओमसिंह को नंगे पाँव ज़ंजीरों से बाँधकर होसर्कूवर के दरबार में लाया गया। सुल्तान और रानी माक वहाँ पहले ही पहुँच गये। ओमसिंह राजा के सामने जाकर झुका, और उसने उन्हें क़ीमती उपहार नज़र किये। फिर हाथ जोड़कर बोला, "महाराज, मैंने घोर अपराध किया है। आप मेरे साथ जो चाहें, करें। मेरे प्राण अब आपके हाथों में हैं।"

सुल्तान उदार-हृदय राजकुमार था। जब उसने देखा कि बनजारा पूरी सजा पा चुका है और उसने अपना सब कुछ खो दिया है तो वह पिघल गया। उसने राजा से प्रार्थना की कि मोमसिंह को छोड़ दिया जाय।

राजा ढोलकुँवर ने उसे प्राणदान दे दिया, और चेतावनी देते हुए कहा, "मोमसिंह, यह मत भूलना कि हमारा सुल्तान जैसा भाई है, जिसने जिन तक को खतम कर दिया है। हमारे राज्य को किसी बुरी दृष्टि से न ताकना। जब तक तुम ऐसा नहीं करते, तुम सुरक्षित हो। जब भी तुम आओ, राजदरबार में आकर नजर पेश करो।

राजा के सामने घुटने टेककर मोमसिंह चला गया।

॥ २० ॥

समदबुर्ज में आकर रानी मारू की दासी ने सुल्तान से उनका सन्देश कहा "यह तुम्हारा कैसा व्यवहार है? महल में कुछ चोर चोरी करते पकड़े गये हैं और उनका कहना है कि तुम्हीं ने चोरी करने को कहा था।"

सुल्तान स्तम्भित रह गया। उसने घोड़ा लिया और तुरन्त रानी मारू के पास पहुँचा।

"बहन मेरी पिछली दस पीढ़ियों में ऐसा कभी नहीं हुआ कि किसी ने चोरों से दोस्ती भी की हो। फिर आपने किस तरह मुझ पर चोरी का इल्जाम लगाया है?"

माक ने सुल्तान के हाथ पर एक पत्र रखते हुए कहा 'तुमने यह सब मुझसे छिपाया था क्या यह चोरी नहीं है?'

सुल्तान पत्र पढ़ने लगा। उसमे लिखा था 'आषाढ़ के महीने में आकाश में बादल घुमड़े होते हैं, सावन में तीतर और मोर भादों में अबाबील, आश्विन में समुद्री सीप, कार्तिक और अगहन में हिरन और बारहसिंघे, पौष में गीदड़, माघ में बिल्लियाँ फागुन में हाथी और घोड़े, चैत में सारा वनस्पति जगत् बसाख में कोयल और कौवे तथा जेठ में बन्दर मस्त रहते हैं। ऐसा लगता है कि वर्ष के सभी महीने दूसरों ने अपने हिस्से में बाँट लिये हैं, और मेरे लिए एक दिन भी न छोड़ा कि मैं अपने प्रियतम के साथ बिता सकूँ। तुमने उन्हें मुझसे छीन लिया है।

— 'रानी माक, तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हारे साथ रहने वाला बहादुर सुल्तान किचककोट के राजा मैनपाल का पुत्र है। वह प्रतिहार क्षत्रिय है। वह बारह वर्ष के लिए अपने राज्य से निर्वासित कर दिया गया और राजा कामध्वज राव ने उसे अपना दत्तक पुत्र मान लिया। मैं राजा माधवत राव की पुत्री, सुल्तान की ब्याहता पत्नी हूँ। सुल्तान ने वचन दिया था कि पहले तीज-पर्व पर वह अवश्य लौट आयगा। तब से पाँच तीजें बीत गयीं, और वह अभी तक तुम्हारे ही साथ है। ऐसा लगता है कि दूसरों की आँखों में धूल झोंकने के लिए ही तुम उसे अपना भाई कहती हो, पर तुम्हारा-उसका सम्बन्ध कुछ दूसरा ही है। एक पुरुष की दो स्त्रियाँ तो देखी गयी हैं, किन्तु आश्चर्य है कि तुम्हारे दो पति हैं।"

सुल्तान ने निहालदे का पत्र बार-बार पढ़ा। उसे अपने ही हृदय से इतना धक्का लगा जैसे उसके बोलने और सोचने की शक्ति नष्ट हो चुकी हो। वह पत्थर की तरह बैठा रहा। वह बार-बार नाक साफ़ करने लगा। आँखें उसकी लाल हो गयीं। हाथ काँपने लगे। उसने लज्जा से अपना मुँह मारू की गोद में छिपा लिया।

यद्यपि स्वयं ही मारू की आँखों से आँसू झरने लगे थे फिर भी उसने बड़ी वत्सलता से सुल्तान की गरदन और पीठ सहलायी। फिर उसने सुल्तान के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए कहा 'मेरे भीतर कोई मुझे कचोट रहा है। मैं इतनी अन्धी क्यों हो गयी थी? तुमने मुझसे यह बात छिपायी इससे मुझे बड़ी गहरी चोट लगी है।

वह कुछ देर तक भाव-शून्य की तरह बैठा रहा। फिर उसने कहा 'बहन मुझे जाने की आज्ञा दे दो जिससे मैं निहालदे के पास तुरन्त पहुँच जाऊँ नहीं तो वह आत्मघात कर लेगी।

मारू ने सिर हिलाया मगर तुम्हें उस लड़की से तो मिलना चाहिए जो यह पत्र लायी है,' कहते-कहते उसने पत्र की ओर संकेत किया और सुल्तान के दायें कन्धे पर सिर रख कर फफककर रो उठी।

॥ २१ ॥

मीरा, दासी से कहीं अधिक, निहालदे की सहेली थी। जब सुल्तान ने इन्दरकोट छोड़ा, तो संयोग से उसको निहालदे

के साथ रहने का अवसर मिला। सुल्तान से उसने कहा, "अब आप नहीं लौटे तो राजा ने इवरकोट में तीज का पर्व ही बन्द कर दिया।

"उस दिन उमस थी। निहालदे सेटी पसवाड़े ले रही थी। उसने अपनी चादर उतार फेंकी। बाहर फ़ौसी पड़ रही थी। हवा में नमी थी। शरीर उसका शिथिल पड़ने लगा, मानो उठ भी नहीं पायेगी। उसकी देह बिल्कुल बुवस मालूम दे रही थी। उसकी चमकीली आँखें अँधेरे में घूर रही थीं। उसने मुझसे उसे अकेली छोड़ बाहर जाने को कहा।

"अभी अँधेरा ही था कि उसे झपकी आ गयी। उसने सपने में देखा कि वह तुम्हारे कन्धों पर झुकी हुई है और तुम्हारे चेहरे पर बिखरी मुस्कान को ताक रही है पर कुछ कह नहीं पाती।'

सुल्तान ने अन्तर की वेदना से लम्बी साँस खींची। मारू भावावेग में डूब रही थी।

मीरा ने आगे कहा 'हाँ तब उसने अपने हाथ उठाये, मानो तुम्हारा चेहरा छूना चाहती हो और उसे तुम्हारी साँसों की सर्माहट महसूस हुई। उसने होंठ छुए, मानो उँगलियों के स्पर्श से काँप रहे हों।

'उसने अँगड़ाई लेते हुए आँखें खोलीं। वहाँ वह खड़ा था। उसने आँखें झपका कर देखा। बायीं आँख थोड़ी दबा कर देखी। वह बिल्कुल नीचे झुककर स्पर्श करने का ही था। वह कूदकर दीवार के पास जा पहुँची। फूलकुँवर कामुकता से उसे घूरने लगा।"

सुल्तान क्रुद्ध हो उठा। उसकी इच्छा हुई कि अपना कलेजा चीर कर फेंक दे।

" 'डरो मत, मेरी बात सुनो', फूलकुँवर ने उससे कहा। वह उस ओर बढ़ने लगी जहाँ उसकी कटार रखी थी। धीरे धीरे उसने कटार को उठा लिया।

आओ आओ' फूलकुँवर ने फिर कहा 'मुझसे डरना क्या ?

" तुम यहाँ क्यों आये ?' निहालदे ने पूछा।

'मूर्खता मत करो सुल्तान कभी नहीं आयेगा।

फिर क्या हुआ उसे याद नहीं। आगे की बात और घटना वह सब भूल गयी। जब उसे होश आया तो देखा कि जैसलमेर का बड़ा फूलदान टुकड़े-टुकड़े होकर छितरा गया था। वह हाँफती हुई फ़र्श पर पड़ी थी। उसे इतना ही याद था कि उसने कटार फेंकी थी और वह जाकर खिड़की के पल्ले में धँस गयी थी। फिर वह फूलदान के पास कुछ देर खड़ी रही और बस। या तो चोट लगने के बाद फूलकुँवर भाग खड़ा हुआ था या फिर फूलदान ही गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गया—यह उसे याद नहीं।

सुल्तान ने अपना मुँह हथेलियों से छिपा लिया। नाक काँप उठी।

निहालदे इसीलिए अपने दिन काट रही है कि तुम जल्दी आओगे। जब उसे तुम्हारी याद आती तो वह कराहने लगती है और उसकी मुट्ठियाँ बँध जाती हैं।"

सुल्तान ने लम्बी आह भरी।

"जब मैं आ रही थी तो निहालदे ने कहा कि 'अब मैं और अधिक न रह सकूँगी।' वह उठी और कई डग चली और उसकी परछाईं दीवार पर काँपती रही मानो वह कहीं अपने की ठौर खोजती हो। मैं तो रोने लगी। उसने अपने को सँभालते हुए कहा 'दुनिया में अनगिनत लोग हैं जो एक को प्यार करने के लिए ब्याह कर लेते हैं। मैं उसी क्षण की, उस टूटे स्वप्न की याद में हूँ। अब मेरा जीवन-गीत बिना तान की एक नीरस कड़ी है। अवश्य मैं कुछ तो करूँ।'

'मैंने उसे बताया कि मैं नरवलगढ़ की रहने वाली हूँ और तुम रानी मारू की सेवा में हो।

मारू ने बीच में टोकते हुए कहा 'वह मेरी सेवा में नहीं है वह मेरा भाई है।"

निहालदे ने हिचकिचाहट से पूछा 'क्या वह अभी तक वहीं है?

मीरा ने जरा सकुचा कर कहा "मुझे माफी बख्शें मैं तो निहालदे की कही बात बता रही हूँ। फिर निहालदे बोली 'क्या पता अब मारू उनकी नयी प्रेमिका हो? फिर उसने अपना हाथ अपने हृदय पर रखा। माथे पर पसीने की बूँदें झलक उठीं और उसके गालों पर ढरने लगीं। मेरे कुछ कहने से पहले ही वह चीख पड़ी 'नहीं, नहीं ऐसा असम्भव है। लड़खड़ाती हुई वह खिड़की के पास पहुँची। मैं अवाक् खड़ी थी। चमकते आँसुओं के बीच वह अनुपम सुन्दरी लग रही थी।'

सुल्तान उठा और चलोमानी करने लगा। वह बेचैन हो रहा था। कभी वह अपनी तलवार खींचता और फिर म्यान

में रख लेता। मारू अपनी हथेलियों से मुँह छिपाकर रो रही थी। बीच-बीच में वह बुरी तरह कांप उठती।

"तो फिर क्या हुआ ? कहती क्यों नहीं ? कहो कहो कहो।" सुल्तान का स्वर ऐसा भयानक हो उठा कि मारू उसे पहचान तक न सकी।

"मुझे अपने बचपन के दिन याद आ गये और मैं जोश में उछल पड़ी क्योंकि मुझे एक बात सूझ गयी थी। निहालदे मेरी ओर बड़ी आशा से देख रही थी।

"मैंने उसे अपनी सूझ बतायी। असली कठिनाई मुझे यहाँ भेजने म हुई। साथ में कोई रक्षक रहता तो फूलकुंवर मुझे बीच में ही रोक देता।'

'फूलकुँवर फूलकुँवर नहीं मैं राजा के महलों से बहुत दवा हुआ हूँ, वरना " सुल्तान फुफकारता रहा।

"अन्त में निहालदे ने ही समस्या का हल किया। उसने भाटों को बुलाया और मुझे ले आने को कहा। यहाँ भी उनके लिए महल में आना आसान था।

मीरा कुछ क्षण सोचती रही, फिर कहने लगी "बरसात शुरू हो गयी थी। उषा का भूरा उजेला धीरे-धीरे रंग बदल रहा था। काले रंग के सफ़ेद कोर वाले बादलों की सीटी बजाती हवा ठेलने लगी। हम धीरज बांधे चलते रहे। पेड़ों से जल धप-धप करता और ऊपर के तरसे मेघ बड़ी फुर्ती से हुर-हुराकर बरस पड़ते। हमारे कपड़े बिल्कुल भीग चुके थे। हवा फिर बही और पानी के झकोरे उड़ गये। महल के द्वार पर मैं घोड़े से उतर पड़ी। वहाँ कुछ लोग खड़े थे जो मुझे

रोकना चाहते थे मगर किस्मत मेरे साथ थी और मैं सीधे रानी के पास दौड़कर आ पहुँची।"

:: २२ ::

सुल्तान चलने के लिए तैयार हुआ पर उसके पास धन के नाम कुछ भी नहीं बचा था।

माक समझ गयी। उसने पूछा "तुम्हें तो अच्छी तनख्वाह मिलती थी, आखिर उसका तुमने किया क्या ?"

"बहन क्या तुमने अपने राज्य में बाग-बगीचे झीलें और कुएँ नहीं देखे ? मैं यही सब करता रहा।

'किन्तु उनमें तो कहीं ज्यादा लगा होगा।'

इसमें रत्ना जौहरी मेरा मददगार था।'

रानी माक ने पहरेदार को रत्ना के यहाँ भेजा जिससे वह सुल्तान से हिसाब किताब कर ले।

रत्ना ने हाजिर होकर कहा, कि सुल्तान के यहाँ उसका कुछ बकाया नहीं है।

जब राजा सोमकुँवर ने उसके जाने की बात सुनी तो वह भी वहाँ आ गया। सुबह होने से पहले ही हरेक नागरिक जान गया कि सुल्तान जाने वाला है। महल के सामने हजारों लोग खड़े हो गये। उस जन-समूह के बीच से विदा लेकर सुल्तान चलने को तयार हुआ।

विदा के समय उसने रानी माक से कहा, "बहन अब भी

मेरी ज़रूरत पड़े, बिना संकोच के बुला भेजना, मैं दौड़ा हुआ आऊँगा।"

सबको नमस्कार कर सुल्तान ने अपने घोड़े की रास इदरकोट की ओर मोड़ ली। घोड़ा ग़ज़ब का था—काफ़ी ऊँचा और तगड़ा—जिस पर एक सुल्तान ही चढ़ सकता था। वह जितनी फ़ुर्ती से ज़मीन पर चलता उतनी ही तेज़ी से पानी में भी तैर सकता था।

शारीरिक मेहनत में सुल्तान का कोई मुक़ाबला न था। यदि लक्ष्य तक पहुँचने में आत्मिक सन्तोष मिलता हो, तो अपनी लगन में वह किसी भी ख़तरे या मुसीबत की परवाह न करता था। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और साहस के कारण वह एक सुयोग्य सेनापति था। किन्तु वह सदा शान्तिरक्षा के लिए ही लड़ता था।

नरवलगढ़ के सीमान्त पर एक ज्योतिषी बैठा था। उसने सुल्तान की ओर देखकर कहा, "भय घुड़सवार, तुम्हारे ग्रहों को देखने से पता चलता है कि इस समय तुम्हारा जाना ठीक नहीं। रास्ते में तुम्हें बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना करना होगा।"

वहीं एक पण्डित की बेटी बैठी थी। वह बोली, "ज्योतिषीजी, आपने अपनी पुस्तकें ठीक से नहीं पढ़ी हैं। मेरी गणना से तो यह सवार ठीक समय पर अपनी पत्नी के पास पहुँच जायेगा।" सुल्तान ने दोनों की बातें सुनीं, और आगे बढ़ गया।

सुल्तान इदरकोट की सड़क पर बढ़ने लगा। उसे एक